१ अनुपम जगत माला के सदृश्य....5
याग का स्वरूप....5
ब्रह्माण्ड की गतियां....5
चित्त मण्डल में ब्रह्माण्ड....6
चित्त स्थली पृथ्वी....6
चित्त का मूल....6
पंचीकरण....7
मुद्रा से स्वयं का बोध....7
पार्थिव तत्व में चित्त....8
चित्त में संस्कार....8
आहार से मन....9
स्वप्नावस्था का आधार....9
पार्थिव तत्वों का स्वरूप....10
एक दूसरे में सहायक परमाणु....10
२ भगवान कृष्ण का गुरु संदीपन महाराज से मुद्रिका पर संवाद....13
ब्रह्माण्ड चित्त की आभा....13
हस्त में पंचतत्व का स्वरूप....13
महर्षि कृष्ण का महर्षि संदीपन से विमर्श....14
मुद्रा का स्वरूप....15
हृदय का परमात्मा के हृदय से मिलान....15
ऋत सत स्वरूप....17
प्रभु तुल्य माता....17
मस्तिष्क में ब्रह्माण्ड....18
आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता....19
३ भगवान कृष्ण का ऋषि संदीपन के आश्रम में....21
गुरु शिष्य की कामना....21
ब्रह्म का जगत....21
पांच प्रकार की गतियां....22
आत्मा का रथ....22
प्रकृति की आभा....23
ऋषि पराशर का माता द्वारा शिक्षा....25
ब्रह्माण्ड में प्रभु द्वारा गतियां....26
ऋषि याग....27
४ त्रि-विद्या का योग द्वारा साक्षात....30
पवित्रता की ध्वनियां....30
भगवान कृष्ण का यौगिक संकल्प....31
भगवान कृष्ण और सुदामा की आध्यात्मिक चर्चा....31
अंगद की योग मुद्रा....32

शरीर द्वारा ब्रह्माण्ड की परिक्रमा 33
अन्तरिक्ष में ध्वनियां 34
अथर्वा ऋषि की चर्चाएं 34
पृथ्वी के स्वभाविक गुण 35
उपाधि काल 36
५ यह अनुपम जगत् एक माला के सदृश है 38
भगवान कृष्ण और महर्षि सन्दीपन की ज्ञान चर्चाएं 38
सोलह हजार वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ कर्ता भगवान कृष्ण 38
भगवान कृष्ण की अनुसन्धानवेत्ता बनने की इच्छा 39
भगवान कृष्ण द्वारा निर्मित अधेरत यन्त्र 39
सुधन्वाकेतु और अंगिरस ऋषि का सम्वाद 41
आहार के तीन प्रकार 41
प्रभु का दर्शन 42
द्वापर में चित्रावली 43
६ महानन्द जी का राष्ट्र व समाज को उन्नत करने पर विचार 45
ब्रह्म की रचना 45
विज्ञान से समाज में अराजकता 46
सूर्य सिद्धान्त से दिवस 47
राष्ट्र निर्माण के लिए समाज के चार बिभाग 48
विद्यालय से विभाजन वर्ण 48
आधुनिक काल का शिक्षक 49
रूढ़ियों से अज्ञान 50
धर्म का स्वरूप 51
७ भगवान कृष्ण का गुरु संदीपन 53
माता की ममत्व पूर्ण ध्वनि 53
मुद्राओं से मनन की प्रक्रियां 55
गुरुदेव का जीवन 55
पुरातन यन्त्र 56
महाराजा हनुमान जी और महाराजा गणेश द्वारा यन्त्र निर्माण 57
सूर्य किरणों से यान निर्माण 58
याग का विज्ञान 58
शुद्ध भाव से राष्ट्र कल्याण 59
ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः 59
प्राण और जीवन शक्ति से पिण्ड निर्माण 60
महाराजा कुम्भकरण का जीवन 60
भगवान मनु द्वारा राष्ट्र निर्माण 61
मांसाहार से राष्ट्रीयता का अभाव 61
८ पुरातन काल की गुरु-शिष्य परम्परा व आधुनिक काल 63

याग का स्वरूप 63
याग ऋौर विज्ञान........ 64
याग ही विज्ञान है........ 64
याग........ 65
महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला........ 65
याग में विज्ञान 65
परमात्मा का राष्ट्र 67

१ अनुपम जगत माला के सदृश्य

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, महिमावादी है। मानो उसी की महिमा इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत है। जितना भी यह जड़-जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा प्यारा प्रभु विद्यमान है। मानो वह वेदां ब्रह्मा यज्ञनं, बर्वस्ते वह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है। मानो उसके आयतन की आभा में रमण करने वाला वह अमूल्य देव, हमें प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। जिस भी काल में, हम यह चिन्तन करना प्रारम्भ करते हैं कि हमारा याज्ञिक जीवन है और यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में, दृष्टिपात आ रही है। यहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक प्राणीमात्र मुनिवरों! देखो, याज्ञिक बना हुआ है।

याग का स्वरूप

याग का अभिप्रायः है एक-दूसरा मानव, प्राणी, प्राणी से, कटिबद्ध हो रहा है। मानो एक दूसरा, एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है और उस ओत-प्रोत हुई सत्ता को, महानत्ता को जानने का नाम मेरे पुत्रो! देखो, एक याग माना गया है। जैसे हमारे यहाँ नाना प्रकार का औषधि विज्ञान है। तो हमारे ऋषि-मुनियों ने बेटा! अग्नि का चयन करते हुए नाना प्रकार की औषधियों का परमाणु बना करके, मानो देखो, उसका प्रथम तो साकल्य ही बनाया। उसके पश्चात् अग्नि ने उसका जब भेदन किया तो भेदन शक्ति मानो क्योंकि अग्नि में विद्यमान है, अग्नि उसका भेदन कर रही है, अग्नि ही मानो देखो, वायु की आभा में गति करने वाली है।

तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय करने वालों ने यह कहा, क्या वह जो अग्नि है, वह भेदन करती है और औषध का परमाणु बना करके वायुमण्डल में प्रसारित कर देती है अथवा वह वायु में उन परमाणुओं का नाना रूपों से भेदन होता है अथवा उनका विभाजन होता है। तो बेटा! यह संसार एक मानो भव्यता में दृष्टिपात आने लगता है। मानो देखो, कुछ प्राणी वायुमण्डल में, आभा में गति करने वाले हैं, कुछ पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान हैं। तो मुनिवरों! देखो, सर्वत्रता में वह अग्नि ही साकल्य के परमाणु बना करके वायु में परिणत कर देती है और वाय उन्हें प्राण स्वरूप के रूप में प्रदान करती रहती है।

ब्रह्माण्ड की गतियां

मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था, अपने वाक् प्रगट करते हुए कहा था कि यह जो संसार है ये मानवीय क्षेत्र कहलाया जाता है जहाँ विज्ञानवेत्ताओं ने अथवा इसको विज्ञानशाला के रूप में, अथवा याज्ञिक पुरुषों ने, यज्ञशाला के रूप में मानो इस परमात्मा के भव्य जगत् को स्वीकार किया। प्रत्येक मानव बेटा! इस संसार को अपने-अपने दृष्टिकोण से परम्परागतों से ही, मापता रहता हैं मैं बेटा! जब विद्यालय में अध्ययन करने के लिए मानव जाता है अथवा अध्ययन करना हमारा क्योंकि स्वभाव है, प्रत्येक मानव अध्ययन करता रहता है तो अध्ययन करने में बेटा! दो प्रकार की वार्त्ता आती रहती हैं सबसे प्रथम मानो उस अध्ययन काल में एक तो स्वतः इस ब्रह्माण्ड का अध्ययन करना, एक अध्ययन है मानो, अपना स्वतः अध्ययन कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड, यह क्या है? ब्रह्माण्ड में कैसे गतियाँ हो रही हैं, लोक कैसे अपने एक दूसरे लोक और मण्डलों को बेटा! सहायता दे रहा है? सहायक बना हुआ है? तो मुनिवरों! इस सहायक बनने के पश्चात सम्भवा दिव्यं गतं प्रमाणा वसु रन्धनि गच्छतम्। मेरे प्यारे! देखो, एक समय सम्भवा देखो, विज्ञानवेत्ता भी, विचारक भी, अध्यापन करते हुए मुनिवरों! उन्होंने यह निर्णय किया है, ब्रह्माण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् मानव को स्वतः अपना

अध्ययन करना चाहिए, मानव जब अध्ययनशाला में प्रवेश करता है, एक अध्ययन करने की भी एक शाला होती है और वह शाला क्या है? मुनिवरों! देखो, वह निद्रा की गोद में जाता है। मेरे प्यारे! मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार अपनी साम्यवस्था में परिणत हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, उसी को सुषुप्ति काल कहते हैं। परन्तु देखो, जब हम सुषुप्ति काल को विचारने लगते हैं। यह क्या है, जिसमें मानो देखो, अपने में सुखद अनुभव कर रहा है, आनन्द अनुभव कर रह है, ऐसा क्या अभृत कहलाया जाता है?

चित्त मराडल में ब्रह्माराड

मेरे प्यारे! इसके सम्बन्ध में ऋषि-मुनियों ने अपना बहुत गम्भीर अध्ययन करते हुए कहा, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। मेरे पुत्रों! हमारे यहाँ अंगिरा गोत्र में, नाना ऋषि हुए हैं, मानो देखो, अंगिरस गोत्र में एक श्वेत नामक ऋषि हुए हैं। वे श्वेत नामक ऋषि के हृदय में यह मानो देखो, अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागरूक हो गई। एक समय मानो अपने आसन पर विद्यमान थे, मानो देखो, एक वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आया, चित्रं रथं प्रमाणः गतौ दिव्यं ब्रह्मा सम्भो देवाः वेद की आख्यायिका एक स्मरण आई कि हम मानो देखो, इस वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करें। तो वेदमन्त्र यह कह रहा था कि हे मानव! तू अपने चित्तमण्डल को जानने का प्रयास कर। मानो यह जो चित्त-मण्डल है, इसमें ब्रह्माण्ड का चित्रण मानो चित्रित होता रहता हैं यह जो संसार का जितना भी दृष्टि देवत्व है, मानो लोक-लोकान्तर की जो छाया है मुनिवरों! देखो, वह सर्वत्र चित्त में विद्यमान रहती है, क्योंकि मानव का जो चित्त है, चित्त नाम मेरे प्यारे! पृथ्वी को माना गया है। इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का चित्त-मण्डल विराजमान है। नाना प्रकार के अंकुर विद्यमान होते हैं। वह अंकुर अपने समय-समय पर जागरूक होते रहते हैं। इसी प्रकार मानव के शरीर में भी मानो जो चित्त नाम का स्थान है, उसमें संस्कार रूपी मानो देखो, अंकुर विराजमान हैं जो समय-समय पर उपजते रहते हैं और मानव मुनिवरों देखो, अपने में क्रिया-कलाप करता रहता है।

चित्त स्थली पृथ्वी

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, वेद के ऋषियों ने और आगे चिन्तन करने वालों ने कहा है, समा रथप्रणे देवाः चित्त को जानना चाहिए, इस पृथ्वी मण्डल को जान लेने में हमारा मानो देखो, बाह्य अध्ययन होता है।

मेरे पुत्रों! देखो, जब बाह्य अध्ययन करना प्रारम्भ करता है तो ऋषि ने श्वेत ने मानो देखो, एक समय अध्ययन करने के लिए तत्पर हो गए, अध्ययन करने लगे कि बाह्य जगत् में ये जो पृथ्वी है यह मानो देखो, चित्तस्थली बनी हुई है। नाना प्रकार के बीजों का रूपांतर होता रहता है, अंकुर रूपों से इसकी जीवन शक्ति में मानो वह विद्यमान है। वह जो जीवन-शक्ति में विद्यमान है वह अग्रह कहलाता है। मानो देखो, स्वर्ण है, स्वर्ण के आभूषण बन जाते हैं परन्तु वही आभूषण बन करके मुनिवरों! देखो, कणों में विद्यमान होते हैं। जब वह कणों में विद्यमान हो जाते हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह उसी आभा में परिणत हो जाते हैं। उसी किरणों में मानो देखो, वह समर्पित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! जो पृथ्वी के उसी आँगन में प्रवेश हो करके किरणों के द्वारा मुनिवरों! देखो, एक रूपांतर होता रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु का रूपांतर हो जाता है। परन्तु देखो, निर्माण हुआ है, उसका मानो उपयोग हो गया है, उपयोग के पश्चात् उसका सूक्ष्म रूप निर्माणित हो गया है, सूक्ष्म रूप बन करके उसी स्थली में प्रवेश कर गया है। जहाँ से मुनिवरो! वह परमाणुवाद आया था वहीं उसका मानो देखो, रूपांतर हो करके मानो अपने स्वरूप में प्रवेश करता रहता हैं।

चित्त का मूल

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! आज मैं तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में न ले जाता हुआ, केवल विचार-विनिमय

यह देने के लिए आया हैं क्या मुनिवरों! देखो, सम्भवा ब्रहे कृताः वे मानो देखो, अंगिरस गोत्र के ऋषि बेटा! चिन्तन कर रहे थे, और चिन्तन करते हुए मुनिवरों! देखो, अपनी आभा में वह परिणत हो रहे थे। उनका अध्ययन करने का जो माध्यम बना वह पृथ्वी बन गया। क्या, पृथ्वी के गर्भ में क्या है? तो बेटा! देखो, वह अपनी शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके, वह मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा में आभा में रमण करने लगे और अपने चित्त-मण्डल को प्राण से समन्वय करना चाहते थे। बेटा! जब वह प्राणों में समन्वय करना चाहते थे, तो एक समय वह भ्रमण करते हुए महर्षि सुधनकेतु ऋषि के द्वार पर पहुंचे। सुधनकेतु ऋषि महाराज ने कहा, आइए ऋषिवर! पधारिए। ऋषि विद्यमान हो गए। ऋषि ने कहा, कहो ऋषिवर! आज कैसे आगमन हुआ? उन्होंने कहा, प्रभु! यह वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र यह कहा रहा है कि चित्तं ब्रह्मः प्राणं ब्रहे सम्भवः चित्रोरथाः आज मैं उस चित्त के रथ को जानना चाहता हूँ जिस चित्त के रथ पर मानो शब्द या संस्कार विद्यमान हो करके, अंकुर बन जाता है। अंकुर बन करके वह पौधे के रूप में परिणत हो जाता है। वही मानो देखो, विशाल बन जाता है। हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या, मैं चित्त के मण्डल को चित्त के मूल को जानना चाहता हूँ? परन्तु सुधनकेतु ऋषि ने कहा कि हे भगवन! हे अंगिरस गोत्र में जन्म लेने वाले ऋषिवर! क्या यह वाक् कैसे निर्णय हो? उन्होंने कहा, प्रभु! मुझे किसी प्रकार इसका समाधान कीजिए।

पंचीकरण

तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, हमारे यहाँ, परम्परागतों से पंचीकरण होता रहता है। मानो परमपिता परमात्मा ने जब, माता के गर्भस्थल में, जब मानव का निर्माण किया, तो उस मानव का भी मुनिवरों! देखो, पंचीकरण किया गया और वह पंचीकरण होता हुआ, मानो देखो, पंचीकरणों में उसकी आभा विद्यमान हो गई। वह पंचीकरण क्या है? मानो देखो, पंचीकरण, पंचमहाभूतों का रहता है, इसी प्रकार मानव के शरीर में भी जब रचनाकार ने रचना की, तो वह पंचीकरण के आधार पर हुई। क्योंकि पंच कोणो वाला मानो देखो, पंचमहाभूतों वाला, यह जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह इसमें पंचमहाभूत हैं वही पंचीकरण मेरे पुत्रों! देखो, आचार्यों ने, इसके ऊपर टिप्पणियाँ की हैं अथवा उन पर विचार-विनिमय किया है कि हमारा पंचीकरण होना चाहिए।

मुद्रा से स्वयं का बोध

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि विचारने लगे, ऋषियों ने अध्ययन किया कि साधना के क्षेत्र में चले जाओ। तो मुनिवरों! देखो, अंगिरस गोत्र में रहने वाले ब्रह्मचारी ने, मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा हो करके वह मुद्रित हो गये और उन्होंने मुनिवरों! देखो, नेत्रों को मुद्रित किया, घ्राण को मुद्रित किया, घ्राण और देखो, श्रोत्रों को मुद्रित जब करने लगे तो मुनिवरों! देखो, वह घ्राणं ब्रहे सम्भवा देवतं ध्रणा अब घ्राण को जब मुद्रित करने लगे, रसना को मुद्रित किया और त्वचा को मुद्रित करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, इसके ऊपर वह गम्भीर अध्ययन करने लगे। वह गम्भीर मुद्रा में प्रवेश कर गए। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपनी इन्द्रियों को जानने का प्रयास किया। अपने उस पंचीकरण को जानने का प्रयास किया कि पंचीकरण क्या है? जिसके ऊपर मुझे प्रायः अध्ययन करना है। तो मुनिवरों! देखो, वह मुद्रित हो करके मानो देखो, ऋषि ने यह कहा, क्या भगवन! मुद्रित होना, यह आपका बहुत प्रियतम है। यह अपना स्वतः अध्ययन है, चित्त के मण्डल को जानने के लिए, मन की प्रतिभा को जानने के लिए, परमात्मा के भव्य जगत् को जानने के लिए, मानव को मुद्रित हो जाना चाहिए। बेटा! मैंने मुद्रिता का इसीलिए वर्णन किया गया है कि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ऋषि-मुनि बेटा! मुद्रित होते रहे हैं।

मुद्रित का अभिप्रायः क्या है? मानो देखो, इस हमारे मानव शरीर में, यह जो पंचीकरण हो रहा है, एक-दूसरे से मिलान करना है, एक दूसरे से मिलान करने से मानो देखो, चित्त की प्रवृत्ति बनती है। मन और प्राण की प्रवृत्ति बन जाती है। जब मन और प्राण की एक सूत्र में प्रवृत्ति बनती है, तो उसके बनने के पश्चात् मानो वह मुद्रित

होता है। बाह्य जगत् से वह मानो नाना प्रकार के बंधनों से अवऋण हो करके, सूक्ष्म मूलक बन करके सूक्ष्म क्षेत्र में प्रवेश करता है, जहाँ प्रवेश करने के पश्चात्, मेरे प्यारे! वह मुद्रित हो करके और वह अपनी आभा में अपनी महानता में सफलता को प्रायः प्राप्त हो जाता है।

पार्थिव तत्व में चित्त

मेरे प्यारे! मुझे बहुत पुरातन काल, स्मरण आता रहता है। परन्तु देखो, ऋषि ने जब यह निर्णय दिया, तो वहाँ से मानो देखो, ऋषि ने गमन किया। अंगीरस गोत्र में होने वाले, ब्रह्मचारी ने वहाँ से गमन करते हुए मुद्रित हो गए, शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके और अपनी पांचों इन्द्रियों को पंचीकरण करते हुए, मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान किया और विचारा यह गया कि पार्थिव तत्त्व में ही चित्त विद्यमान रहता है। जहाँ मानव के शरीर में पार्थिव तत्त्व हैं वहीं चित्त का मण्डल बना हुआ है, उसी को चित्त कहते हैं परन्तु उस चित्त में जो गति आती है वह प्राण की है और मुनिवरों! देखो, वह जो शब्दावली आती है, ध्वनि आ रही है, वह मानो देखो, हमारे यहाँ श्रोत्रों की है और मुनिवरों! देखो, जो अप्रतम् शब्दों की ध्वनियाँ हैं, समूह रूद्र कहलाया जाता है वह मानो देखो, शब्द, उस प्राण से उत्पन्न हो करके मेरे प्यारे! देखो, वह रसना से मिलान करते हुए, आभा में रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, मानव के हृदय में वह मुद्रित हो जाती है।

मुनिवरों! देखो, हृदय ही इस संसार का इस ब्रह्माण्ड की कुंजी कहलाती है, जिस कुंजी को जानने के लिए मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि मुझे मुद्रित हो करके अपनेपन में ही नहीं सीमित रहना है, मानो मुझे ऊर्ध्वा में, परमात्मा के राष्ट्र में गमन करना है। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ, इस प्रकार के नाना राजा भी हुए हैं जिन्होंने मुनिवरों! देखो, इस महानता को जानने का प्रयास किया।

चित्त में संस्कार

आओ मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि अंगिरस गोत्र के ऋषिवर मुनिवरों! देखो, वह भयंकर वन में चले गए, चिन्तन करते हुए, मुद्रित होते हुए, वेद के ऊपर अध्ययन करते हुए, एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर उनका बड़ा अनुसन्धान और उनकी विचारधारा गम्भीर हृदय में प्रवेश होना ही मानो देखो, उनकी आभावत कहलायी जाती है। विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! मैं आज कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। आज तुम्हें इन विचारों की मैं भूमिका बनाना चाहता हूँ और वह भूमिका क्या है? मुनिवरों! देखो, भूमिका ये कि मानव को अपने चित्तमण्डल को जानना चाहिए। जिस चित्त मण्डल में नाना संस्कार विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, हृदय में नाना प्रकार की स्मरण शक्ति के रूप में विद्यमान होने वाला मानो एक अभ्याहत कहलाने वाला गतिशील होता रहता है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों ने इस चित्त के क्षेत्र को जानने के लिए, बहुत प्रयास किया। अध्ययन करना प्रारम्भ किया, और वह अध्ययन, प्रतिक्रियाएं, अध्ययन में अश्व अप्रात होते हुए मेरे पुत्रों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर गये। पृथ्वी के गर्भस्थल में, अग्नि प्रचण्ड हो करके मानो तपा रही है। इसी प्रकार जब वह अपनी हृदयस्थली में, जब पार्थिव तत्त्वों में पहुंचे तो मुनिवरों! देखो, कहीं प्राण लिए हुए हैं, कहीं मानो देखो, घ्राण असुतां मानो शब्द लिए हुए है, कहीं प्रीति ले रही है। मानो एक दूसरे परमाणु का मिलान होता हुआ वह चित्त मण्डल बन करके वह स्मरण शक्ति का मुनिवरों! देखो, एक केन्द्र बन जाता है और उसका समन्वय हृदय से रहता है। हृदय का सम्बन्ध, मेरे पुत्रों! देखो, वह उस परमपिता परमात्मा के भव्य हृदय से रहता है जिस परमपिता परमात्मा ने बेटा! इस संसार रूपी जगत् का निर्माण किया।

तो आओ मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, वह जो भव्यता चित्त के मण्डल को जानना चाहते हो, जिसमें संसार विद्यमान रहता है, जिसमें यह ब्रह्माण्ड विद्यमान रहता है जिसमें चैतन्य और जड़ जगत् दोनों विद्यमान रह करके, विज्ञान के क्षेत्र में चला जाता है। आध्यात्मिक विज्ञान में रमण करता हुआ, वह मानो

देखो, भौतिक विज्ञान से दूरी होता हुआ, वह मानो देखो, अपने में अपनेपन को प्राप्त करता रहता है।

आहार से मन

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, तुम्हें केवल संक्षिप्त परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है? वह परिचय यह देने जा रहे थे कि वह जो चित्त का मण्डल है, वह जो चित्त की प्रतिभा है चित्त का जो मण्डल है मानो देखो, उसको जानने के लिए मानव परम्परा से अनुसन्धान करता रहा है। वह चित्त क्या है? जिसमें बेटा! देखो, संसार विद्यमान रहता है। एक मानव अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके मानो वह चक्षु की प्रतिभा को, देखो, इस मस्तिष्क की आभा को, जान करके, वह परमात्मा के भव्य जगत् को जब दृष्टिपात करने लगता है तो यह संसार उसके मानो लिए एक खिलवाड़ बन जाता है। विज्ञान के क्षेत्र में जाता है तो विज्ञान एक खिलवाड़ दृष्टिपात होने लगता है। परन्तु वह अपने क्षेत्र में इतनी सफलता को प्राप्त हो गया है पुत्रों! क्या अपने में वह महान् बनता चला जाता है। परन्तु देखो, अंगिरस गोत्र के ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं। अपना स्वतः अध्ययन करना बहुत अनिवार्य है। जब स्वतः अपना अध्ययन करने लगे। चित्त के मण्डल को जानने लगे, तो बेटा! उन्होंने मन का शोधन किया। क्योंकि मन का जो निर्माण होता है, मन की जो उत्पत्ति होती है, वह आहार से होती है। आहार मानव का ऐसा पवित्र होना चाहिए। परन्तु देखो, आहार से व्यवहार बनता है और जब आहार और व्यवहार दोनों पवित्र होते हैं तो मानव का जीवन पवित्र बनता चला जाता है। जब मानव में पवित्रता आती है तो मुनिवरों! देखो, वह सत्य ही उच्चारण करता है और जब वह सत्य ही उच्चारण कर रहा है तो सत्य के गर्भ में वह मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड विद्यमान है। सत्य ही ब्रह्म है। सत्य ही चेतना है। मानो देखो, उसी के आधार पर यह संसार पंचीकरण सा दृष्टिपात आता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, सत्य ब्रह्म को जानना, ये मानव का एक बहुत अनिवार्य, एक कर्त्तव्य कहलाया जाता है। ब्रहे असुतां देवत्यां लोका मेरे पुत्रों! देखो, उसकी आभा को जानने के लिए हमें वैज्ञानिक बनना है। विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करना है और विज्ञान क्या है? जो चित्त के मण्डल को जान लेता है, चित्त के ऊपर अध्ययन करने लगता है। मेरे प्यारे! मानव स्वप्न को प्राप्त हो रहा है, स्वप्न दृष्टिपात कर रहा है। स्वप्न में बेटा! देखो, वह ऋषि एक भयंकर वन में चला जाता है। भयंकर वन में जा कर औषधि विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है। औषधि विज्ञान को जान करके, अग्नि में उसको मानो तपा करके, उसके परमाणुओं के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है।

मेरे पुत्रो! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, वह भयंकर वनों में मेरे पुत्रों! देखो, एक सम्भवा देवालयतां लोकां हिरण्यं रथाः मेरे पुत्रों! देखो, उस आभा में गति करता रहता है। वह उसी में गतिशील रहता है। परन्तु देखो, उसको जानने के लिए मानव को प्रयास करना है।

तो मेरे पुत्रों! आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है? मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ ऋषिवर मानो देखो, जब अपने चित्त के मण्डल को जानने के लिए तत्पर होने लगे, तो बेटा! देखो, इन्द्रियों में प्रवेश कर गए। इन्द्रियों का प्रत्येक रूप को जानने के लिए, मेरे पुत्रों! देखो, चित्त के मण्डल को जानने लगा। स्वप्नवत स्वप्न को प्राप्त हो रहा है। स्वप्न में दृष्टिपात कर रहा है, याग कर रहा है। औषधि विज्ञान को जान रहा है। मेरे पुत्रों! वह चित्त का मण्डल बना हुआ है। चित्त में वह विद्यमान हैं परन्तु उन अंकुरों के सूक्ष्म रूप को स्थूल बना करके मानो देखो, वह स्वप्न को प्राप्त हो रहा है। स्वप्न में स्थूल बना करके, उसे पान कर रहा है ये सब कुछ क्या है मेरे पुत्रों!? ये चित्त का मण्डल है चित्त के मण्डल में संस्कार विद्यमान हैं। जन्म-जन्मांतरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। इन संस्कारों के आधार पर, संस्कारों की प्रतिभा को ले करके ही मेरे पुत्रों! देखो, उस आभा में गति करता रहता है।

स्वप्नावस्था का आधार

आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, तुम्हें ये वाक् प्रगट

करने के लिए आया हूँ कि क्या ऋषि-मुनियों ने, इस चित्त के मण्डल को जानने के लिए, क्या मुनिवरों! देखो, इसमें पत्नी नहीं होती, पत्नियों से आमोद-प्रमोद कर रहा है आनन्दं ब्रह्मे समा गृहतो वह सर्वत्र मानो गृह का निर्माण कर रहा है। मानो भव्य भवन उसमें दृष्टिपात आ रहे है। यह कहाँ से आ रहे हैं? पुत्रों? मानो देखो, चित्त के मण्डल में, अंकुर विद्यमान हैं। उन अंकुरों को जब यह मन मानो आत्मा के प्रकाश में पहुंचाता है, प्रकाश में जाकर यह सब साक्षात्कार मानो देखो, वह उसी, प्रकार मानो जैसा दृष्टि अंकुर रूप में है वैसा ही वह स्थूल रूप बन करके स्वप्नावस्था को दृष्टिपात करता रहता है। परन्तु देखो, ऋषि ने बेटा! इसके ऊपर अध्ययन किया कुछ मानो कन्द मूल औषधि इत्यादि को पान करके अपने मनस्तत्व को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए ऋषि प्रायः देखो, गायत्री माता की गोद में चले गए। मानो सरस्वती की गोद में जा करके आनन्दित हो करके प्रभु का गुणगान गाने लगे, क्या प्रभु का गुणगान गाने लगे प्रभु की भव्यता को मानो देखो, दृष्टि-पात करने लगे।

विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने लगभग बारह-बारह वर्षों तक, उस अन्नाद को पान किया जो मानो देखो, कन्द मूल से सम्बन्धित होता है, उसको पान करके अपने चित्त मण्डल को जानने के लिए, मन को पवित्र बनाने के लिए सदैव उन्होंने बेटा! पवित्र साधना की है। मानो देखो, एक सौ एक वर्ष तक देखो, उन्होंने कई प्रकार के अनुष्ठान किए। उन अनुष्ठानों में वह सफलता को प्राप्त हुए। परन्तु देखो, चित्त के मण्डल को जानने लगे। चित्त में जहाँ तरंगें उत्पन्न हुई, उन तरंगों का भाव, मेरे पुत्रों! देखो, उसकी स्मरण शक्ति में परिणत होने लगा। विचार-विनिमय क्या? उन संस्कारों को साक्षात्कार भोगने लगा, तो ऋषि ने बेटा! देखो, पिच्चासी वर्षों तक तप करने के पश्चात् उन्होंने चित्त मण्डल को जानने का प्रयास किया। मानो चित्त के मण्डल को जाना और यह निर्णय किया ऋषि ने कि मानव के शरीर में पार्थिव जो परमाणु हैं, पार्थिव जो तत्त्व हैं यह आणा अस्ति है मानो वही उस मण्डल का क्षेत्र बना हुआ है।

मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं तुम्हें यह निर्णय कराने के लिए आया हूँ, यह निर्णय देना चाहता हूँ क्या संसार में मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक ऋषि मुनियों ने अपने-अपने जीवन को जानने के लिए, अपनी आभा को जानने के लिए मानो उन्हें परम्परागतों से प्रायः अनुसन्धान किया हैं।

पार्थिव तत्वों का स्वरूप

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? जैसे यह मानव के शरीर में पार्थिव तत्त्वों में, चित्त विद्यमान रहता है उस चित्त मण्डल को मेरे प्यारे! देखो, वह जल उसको प्राण-शक्ति दे रहा है, मानो देखो, त्वचा उसको प्रीति दे रही है और देखो, वह चित्र कौन दे रहा है? वह नेत्र हैं, मेरे पुत्रों! देखो, श्रोत्र हैं और रसना, शब्दों का उद्गान गा रही है। उद्गीत गाती ही रहती है। जब वाणी उद्गीत गाती ही रहती है तो बेटा! उद्गान चलता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, इसको जानना हमारा बहुत कर्त्तव्य है, अनिवार्यता है, जिसको जान करके मानो अमृतमयी बन जाता है। अमरापुरी को प्राप्त हो जाता है।

एक दूसरे में सहायक परमाणु

तो आओ मेरे प्यारे! आज का यह हमारा विचार, हमें क्या कह रहा है हम कौन से क्षेत्र में चले गये हैं, बेटा! बाह्य जगत् मानो देखो, पार्थिव तत्त्वों को जानने वाला, पार्थिव परमाणुओं को जानने वाला मानव विशेष वैज्ञानिक बन जाता है। क्योंकि इसके परमाणुओं में ही मेरे पुत्रों! देखो, ये सब सहायक बने हुए है। तो विचार-विनिमय क्या? वेद का मन्त्र कहता है, चाहे तुम सूक्ष्म जगत् में चले जाओ, चाहे स्थूल जगत् में चले जाओ, परन्तु दोनों ही जगत् में मानो एक प्राणी, प्राणी का सहायक बना हुआ है, मानो देखो, परमाणु, परमाणु का सहायक बना हुआ है। लोक, लोक का सहायक बना हुआ है। मानो देखो, एक प्राणी एक लोक दूसरे लोक में गति कर रहा है। एक लोक दूसरे लोक में गति कर रहा है मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है उन्ही ऋषि-मुनियों ने, जब इस संसार के

विज्ञान को दृष्टि से दृष्टिपात करने लगे और विज्ञान की आभा में दृष्टिपात करने लगे तो मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञान का परमाणु, विज्ञान ने यह सिद्ध किया है, क्या यह जो परमाणु गति कर रहा है, एक दूसरे में पिराया हुआ है, माला बनी हुई है। जैसे यह ब्रह्माण्ड में नाना लोक-लोकान्तरों की एक माला बनी हुई है और इस माला को जो धारण करता है वह मानो वैज्ञानिक बन जाता हैं, जो उस माला को अपने में धारण कर लेता है मेरे प्यारे! देखो, परमाणु एक दूसरे में गतिशील हो रहा है। लोक भी इसी प्रकार गतिशील हो रहे हैं। शब्द भी इसी प्रकार चित्र ले करके बेटा! एक दूसरे में कटिबद्ध हो रहे हैं, एक दूसरे के सहायक बन करके इसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने बेटा! ये भव्य जगत् बनाया। इस भव्य जगत् में एक प्राणी, प्राणी का सहायक बना हुआ है। बेटा! मानो एक प्राणी है प्राणी में पिरोया हुआ है। मानो देखो, अप्रता देवा मुनिवरों! देखो, वहीं पंचीकरण आ जाता है। विचार देते-देते बेटा! कहाँ चला गया? वही पंचीकरण आ जाता है उसी पंचीकरण में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ रहता है। वही मानो देखो, चित्त का मण्डल है।

चित्त क्या है? यह पार्थिव तत्त्व है। मेरे प्यारे! प्राण क्या है? यह जल तत्त्व है। मुनिवरों! देखो, जीवन शक्ति क्या है? मुनिवरों! देखो, वह सोमं शक्ति है। जिसे हम सोम शक्ति कहते हैं मुनिवरों! देखो, सौम्यता मानो देखो, कहाँ से? अग्नि की आभा से प्राप्त होती है। अग्नि की आभा कहाँ से प्राप्त होती है? मेरे पुत्रो! देखो, वह वायु से प्राप्त होती है और वायु अवकाश में परमाणुओं को लेकर के गति बेटा! करती है। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! यह पंचीकरण कहलाता है। इस पंचीकरण की आभा में मुनिवरों! देखो, साकल्य पिरोया हुआ है। मुनिवरों! देखो, यज्ञमान यज्ञशाला में साकल्य प्रदान कर रहा हैं, परन्तु जब वह प्रदान करता है तो उसके गुणों का अवधान करने वाला मानो देखो, पांडित्व होता है। उद्गाता होता है, अर्ध्वुय होता है। मुनिवरों! देखो, उसकी आभा को जानते रहते हैं। उस परमाणुवाद को भी मानो वैज्ञानिक तत्त्वों को जाना जाता है। परन्तु देखो, वही वायुमण्डल में जा करके, अन्तरिक्ष में जा करके परमाणुओं के मिलन में अशुद्ध परमाणुओं को निगलना, शुद्ध परमाणुओं को देना यह आहुति का कर्त्तव्य बन जाता है। तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह चल रहा था कि परमपिता परमात्मा ने बेटा! ये जगत् रचा है, अनुपम है, जितना जड़जगत् और चैतन्य जगत् है, यह एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। एक माला बनी हुई है। उस माला को जो मानव जान लेता है वह बेटा! उस माला के सूत्र को भी जानता है और जो माला के सूत्र को जानता है वह मेरे प्यारे! अपना स्वतः अध्ययन भी करना जानता है और जो अपना स्वतः अध्ययन करना जानता है मेरे पुत्रों! देखो, इस जगत् को जानता है और जो जगत् को जानता है वह भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान को जानता है। और जो भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में पारायण होता है, वह प्रभु के गर्भ में बेटा! प्रवेश करता रहता है।

तो विचार-विनिमय क्या? परमात्मा का यह जो जितना जगत् है, यह सब उसका गर्भाशय कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, यह प्रत्येक मानव, मानव में पिरोया हुआ, प्राणी मात्र है। माता पुत्र में पिरोई हुई है, और पुत्र माता में पिरोया हुआ है पत्नी, पति में पिरोई हुई है पति पत्नी के आंगन में पिरोया हुआ हैं। मेरे पुत्रो! देखो, एक माला बनी हुई है पुत्रों! लोक-लोक में पिरोया हुआ है। ये पृथ्वी है यह सूर्य में, सूर्य बृहस्पति में पिरोया हुआ है। और बृहस्पति आरूणि मण्डल में पिरोया हुआ और आरूणि मानो देखो, ध्रुव में पिरोया हुआ है और ध्रुव देखो, स्वाति नक्षत्रों में पिरोया हुआ है। स्वाति मूल में पिरोया हुआ है और मूल मेरे पुत्रों! नाना गन्धर्व लोकों में पिरोया हुआ सा जगत दृष्टिपात आता हैं।

तो मेरे प्यारे! जब मैं यह विचारने लगता हूँ, क्या वेदमन्त्र क्या कहता है हमें? वेदमन्त्र यह कहता है कि यह संसार एक दूसरे में पिरोया हुआ है पुत्रों! मानो देखो, माता अपने पुत्र से स्नेह कर रही है, वह माता में पुत्र पिरोया

हुआ है माता पुत्र में पिराई है। मेरे पुत्रो! देखो, पिरोया हुआ यह जगत्, एक माला बनी हुई है और जो पिरोने वाली शक्ति है बेटा! उसका नाम एक चेतना है, और उस चेतना को जानना ही मुनिवरों! देखो, हमारा कर्त्तव्य कहलाता है। जो चेतना के आँगन में प्रवेश करता है, वही बेटा! परमात्मा की प्रतिभा को जानता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महाननद जी यह कहा करते हैं कि याग होता रहता है, याग का जो साकल्य है, उस साकल्य में मानो यह साकल्य में कैसे एक-दूसरे में पिरोया हुआ है और वायुमण्डल में क्या गति होती है इसकी ये चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् अब हमारा यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या मुनिवरों! देखो, यह है कि यह भगवान का, परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है, यह एक माला के सदृश है। इस माला को हमें धारण करना चाहिए। इस माला की चर्चाएँ हम कल भी प्रगट करेंगे। मानो देखो, एक औषधियों की माला है जिसको वैद्यराज जानता है। एक मानो देखो, औषधियों की माला है, जिसको वनस्पति विज्ञान को ले करके आचार्य जानता है। जो अध्यापन का कार्य कर रहा है। उसी माला को ले करके वैज्ञानिक जानता है जो परमाणुवाद में चला जाता है। इसी माला को ले करके मुनिवरों! देखो, वह भौतिक आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करता है जो अपनी आत्मा को जान करके प्रभु में अपने को पिरो देता है।

तो मुनिवरों! देखो, यह आज का हमारा वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। कल समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। अच्छा भगवन! स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

२ भगवान कृष्णा का गुरु संदीपन महाराज से मुद्रिका पर संवाद

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि जितना भी ये आभा वाला जगत् है, उस सर्वत्र जगत् का जो मूलक है, वह चेतनामयी प्रभु कहा जाता है। हमारे यहाँ वेदों का पठन-पाठन, भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरों में होता रहता है, उनकी नाना प्रकार की ध्वनियाँ मानी जाती हैं। परन्तु नाना ध्वनियों में, सर्वत्र ध्वनियों में बेटा! एक आत्मीयता का दिग्दर्शन होता है। क्योंकि जब हम किसी ध्वनि को हृदय से, समन्वय हो करके जब हम उसके ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करते हैं तो प्रायः मुनिवरों! देखो, उसमें ऐसी महान् ऐसी आत्मीयता होती है जो विशाल ब्रह्माण्ड को अपना हृदय बनाती हुई और अपने साथ में संक्रोसता वर्ण प्रज व्रत देवा मानो देखो, उससे अपने ही अपने हृदय को हृदय से समावेश करता हुआ मानव, प्रभु! के आँगन में प्रवेश करने का प्रयास करता है।

ब्रह्माण्ड चित्त की आभा

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं देने आया हूँ, न कोई मैं व्याख्याता हूँ। केवल कुछ अनुभूतियाँ हैं, कुछ परम्परा की वार्त्ताएं हैं मुनिवरों! देखो, उनके ऊपर हम अध्ययन करते रहते हैं और उनमें जो विचार-विनिमय होता रहता है, उनमें जो महानता का दिग्दर्शन होता रहता है, प्रायः उसके ऊपर हम विचार-विनिमय करते रहते हैं। तो आज का हमारा वेद का पठन-पाठन हमें बेटा! कुछ प्रेरणा दे रहा है और वह प्रेरणा है जो हम चित्त के मण्डल की कुछ वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं क्योंकि यह सर्वत्र, जो ब्रह्माण्ड है यह मानो देखो, चित्त की आभा कहलाती हैं। जैसे मानव का चित्त है और यह ब्रह्माण्ड है यह भी एक चित्रं कहलाया जाता है। तो इसी के आँगन में हम अपने को ही समावेश करते हुए उस चित्त की प्रतिभा में रमण कर जाते हैं। मेरे प्यारे! इससे पूर्व वाक्यों में, हम तुम्हें पंचीकरण की चर्चा कर रहे थे कि मानव को अपने जीवन का पंचीकरण कर लेना चाहिए। जो मानव अपने जीवन का पंचीकरण बना लेता है, मेरे प्यारे! देखो, उस मानव के जीवन का महान कल्याण और अपनी आभा को प्राप्त करने लगता है। तो विचार आता है मुनिवरों! पंचीकरण की प्रेरणा हमें कहाँ से प्राप्त होती है?

हस्त में पंचतत्व का स्वरूप

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! भगवान कृष्ण का जीवन। जब मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण तपस्या करते थे, क्योंकि जहाँ वह राष्ट्र के विषय में जानते थे, जहाँ वह दर्शनों के मानो गम्भीर रहस्यों में गमन करते थे, वहीं मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान की प्रतिभा को भी जानते थे। मुझे उनका जीवन स्मरण आता रहता है जब बेटा! देखो, वह तपस्या में सदैव प्रवेश करते थे, तो अपने जीवन को पंचीकरण बना लेते थे। पंचीकरण का अभिप्रायः यह है कि हमारे मानव के शरीर में मेरे प्यारे! देखो, हस्तों में मानो देखो, पंचीकरण, हमें मानो देखो, एक ही आभा कृत होती रहती थी। उसी का निर्णय करते रहते हैं। मानो देखो, पृथ्वी, अग्नि, आकाश, जल और अग्नब ब्रहे गति अस्तोः और वायु, यह अपने में गति करते रहते हैं। एक ही धुन में तीनों ही मानो देखो, कृति असुतों में रमण करते रहते हैं। विचार क्या मुनिवरों! देखो, अग्नि को और पृथ्वी तत्त्व दोनों का मिलान करना हो तो मुनिवरों! देखो, वह हस्त ब्रहे मुनिवरों! देखो, अंगुष्ठान और अंगुलस्त अग्नि तत्त्व को मिलान करने से मानव के शरीर में जो पार्थिव तत्त्व हैं, जिसे हम चित्त का मण्डल भी कहते हैं, मानो देखो, जो अग्नि उसको तेजोमयी बनाती रहती है। उन दोनों के मिलान करने से मानव के शरीर में अग्नि और पार्थिव तत्त्वों का जब समन्वय होता है, तो बेटा! मन की स्थिति स्थिर होने लगती है जब वह स्थिर होने लगती है तो इस सम्बन्ध में उन्होंने एक समय बेटा! देखो, जब यह

भयंकर वन में समुद्र के तट पर वह तपस्या करने चले गए, तो मुनिवरों! देखो, अपने में पंचीकरण को लाने का प्रयास किया, जिसे हमारे यहाँ एक मुद्रिका कहते हैं। मानो इस मुद्रिका का सिद्धान्त परम्परागतों से हमारे ऋषि-मुनियों के सिद्धान्त में भी आता रहा है और विद्यालय में भी इस सिद्धान्त को प्रायः अध्ययन कराते रहते थे।

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है जब बेटा! देखो, यहाँ महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो देखो, अध्यापन का कार्य कलाप होता रहा, तो ब्रह्मचारियों को मेरे पुत्रों! देखो, अध्ययन में मुद्रिका का वर्णन कराते। हमारे यहाँ विद्यालयों में जब तक मुद्रिका वाला आचार्य नहीं होता, तो ब्रह्मचारियों को हम ब्रह्मवर्चोसि नहीं बना सकते। क्योंकि वह सोहो रम्भा ब्रहा क्योंकि मुद्रिका का अभिप्रायः यह है। कि हमारा मन मेरे पुत्रों! देखो, सूर्य विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना चाहता है। जब सूर्य विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना चाहता है तो मुनिवरों! उस अग्नि को चन्द्र ब्रहेः, और मानो देखो, वायु को, दोनों को मिलान करते हुए, मानो यह अंगलुष्ठ लेते हुए वह अंगुष्ठान से उनका मिलान करते हुए मेरे प्यारे! गोलाकार बनाते हुए मानो अपने मन को वहाँ स्थिर कर लेता है। जब वह स्थिर करता हुआ मुनिवरों! देखो, सूर्य विज्ञान, सूर्य में जो प्रतिभा है उसका समन्वय हमारे अन्तरात्मा, हमारे हृदय से होता है, तो वह जो हृदय है हृदय में मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणों से जो-जो द्यौ मण्डल में तत्त्व विद्यमान होते हैं मुनिवरों! देखो, उनका साक्षात् होना स्वाभाविक बन जाता है। तो विचार क्या मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारीजन इसी प्रकार प्रायः अपना अध्ययन करते रहते थे।

महर्षि कृष्णा का महर्षि संदीपन से विमर्श

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! भगवान कृष्ण का वह बाल्यकाल, जिस काल में वह संदीपन ऋषि के यहाँ अध्ययन करते रहते थे और संदीपन ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन कराते रहते थे तो मुनिवरों! एक समय वे गुरु के चरणों में ओत-प्रोत हो करके ये अध्ययन करने लगे कि महाराज! मैंने कुछ वेदमन्त्रों का अध्ययन किया है, मुद्रो भवा सम्भवा देवतम अग्नि वर्ण प्रह्वा प्रसुति चित्रं रथा मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण ने बाल्यकाल में यह वाक् कहा कि महाराज! ये वेदमन्त्र कहता है हम इस वेदमन्त्र के आधार पर कुछ जानना चाहता हूँ क्योंकि आप ऋषिवर हैं, आप ने बहुत अध्ययन किया है उस अध्ययन के आधार पर मैं आपके चरणों में विद्यमान हूँ। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारी! यह तुम्हारा प्रश्न मानो बड़ा गम्भीर है, बड़ा अद्वितीय है। उन्होंने कहा, महाराज! इसका मुझे निर्णय कराइए। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने कुछ अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने कहा हे कृष्ण! मानो देखो, यह जो तुम उच्चारण कर रहे थे सर्वो ब्रह्मेः अग्निं वरुणं चित्र अग्रते देवः मानो यह जो वेदमन्त्र की कुछ आख्यायिकां हैं। जिनका विचार मैं तुम्हें नित्यप्रति याग के समय इस वेदमन्त्र का परिचय देता रहता हूँ और वेदमन्त्र यह कहता है कि हम जिस-जिस मानव के मन की विकृतता शान्त नहीं होती, वह मानव ब्रह्मवर्चोसि नहीं बन सकता और तुम्हें ब्रह्मवर्चोसि बनना है और ब्रह्मवर्चोसि बन करके तुम्हें अपनी मुद्रिका को जानना है।

तो भगवान कृष्ण मुनिवरों! मानो देखो, वायु और पृथ्वी दोनों के मिलान को मुनिवरों! देखो, क्रियात्मक जानना चाहते थे। तो मुनिवरों! देखो, मानो देखो, संदीपन ऋषि महाराज ने ब्रह्मचारी को यह प्रश्न करते हुए मानो अपने हृदय में हर्षता का परिचय, वेदमन्त्र का परिचय देने लगे। उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारी! आओ, विराजो! मानो देखो, तुम साधना के क्षेत्र में जाना चाहते हो या विज्ञान के क्षेत्र में जाना चाहते हो? कृष्ण जी ने कहा कि महाराज! मैं तो दोनों ही क्षेत्रों में जाना चाहता हूँ, मैं मानो यौगिक क्षेत्रों में भी प्रवेश करूंगा और विज्ञान के क्षेत्र में भी मेरा मानो अनुसन्धान चलना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, कि यदि तुम इस विज्ञान में जाना चाहते हो, भौतिकवाद में प्रवेश करना चाहते हो तो तुम अपनी मुद्रिका को जानो। मानो देखो, मुद्रिका क्या है? मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत् और अपने आन्तरिक जगत् दोनों के ऊपर तुम्हें अध्ययन करना है। वह अध्ययन कैसे करना है?

मानो देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, तुम अपनी गम्भीर मुद्रा बना लो। परन्तु गम्भीर मुद्रा कैसे बनाओगे? जब तक बाह्य जगत् का समन्वय आन्तरिक जगत् से नहीं होगा, जब तक तुम गहरी मुद्रा में प्रवेश नहीं करोगे। मुझे स्मरण है बेटा! देखो, वेदमन्त्रों के ऊपर अध्ययन करने वाला ऋषि योगी होना चाहिए और योगी बेटा! प्राण को संग्रह करता हुआ, अग्नि को संग्रह करता हुआ, मुनिवरों! देखो, पार्थिव तत्त्व का चित्त के तत्त्व से उसका समन्वय होना चाहिए। जब वह चित्त के मण्डल से अपना समन्वय करता है तो मेरे प्यारे! अग्नि का और चित्त के मण्डल दोनों का समन्वय हो करके मानो दोनों प्रकार के विज्ञान में वह पार्थिव पारायण बनता है। दोनों प्रकार का विज्ञान क्या है? सबसे प्रथम है वह भौतिक विज्ञान, जिस भौतिक विज्ञान के ऊपर, मानव बेटा! अपना अनुसन्धान करता रहता है। मानो देखो, कहीं वह गम्भीर मुद्रा में चला जाता है, कहीं वह बाह्य जगत् में प्रवेश करता हुआ कही मानो वह सूर्य मण्डल की मानो किरणों में चला जाता है, मण्डलीय बन जाता है, कहीं पार्थिव तत्त्व के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करने लगता है। तो मानो देखो, जो तुम्हारी जो अध्ययन करने की प्रवृत्ति है वह तुम्हारी विशाल उस काल में बनेगी जब तुम अपने हृदय अगम ज्योति में मानो देखो, अपनी अणिमा के द्वारा तुम मानो अपनी साधारण कृतियों में मुद्रा बनाओगे।

मुद्रा का स्वरूप

तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा, प्रभु! मैं मुद्रा को जानना चाहता हूँ, मुद्रा किसे कहते हैं? उन्होंने कहा, मुद्रा कहते हैं कि हमारे इस मानव के एक हस्त में मानो पांच अंगुष्ठान कहलाते हैं। प्रत्येक अंगुष्ठानों में इनका प्रत्येक अंगुष्ठान का सम्बन्ध पांचो तत्त्वों से रहता है, मानो देखो, अंगुष्ठान सबसे प्रथम अंगुष्ठान का सम्बन्ध पृथ्वी से होता है। द्वितीय का अग्नि से होता है, तृतीय का अन्तरिक्ष से होता है, चतुर्थ का आपो से रहता है, और पंचम का वायु से रहता है। इसी प्रकार जो मानव अपने को विजय करना चाहता है तो पाचों जो अंगुष्ठान हैं, उनके ऊपर उनका अध्ययन होना चाहिए और क्रियात्मक होना चाहिए। क्रियात्मक कैसे बनता है? मुनिवरों! देखो, शान्त मुद्रा में विद्यमान है, एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके मानो देखो, अन्धकार से अपने जीवन को प्रकाश में लाना चाहता है अपने जीवन को प्राकश में लाने के लिए वह मानो देखो, वह अंगुष्ठान और अग्नि तत्त्वों का मिलान करना चाहता है, क्योंकि पृथ्वी के तत्त्व में तो चित्त रहता है और अग्नि के गर्भ में मानो देखो, प्रकाश रहता है जिसका द्यौ से और प्राण से समन्वय होता हुआ मानो देखो, उनको एकाग्र करने के लिए, क्योंकि ये सब मन का मण्डल कहलाता है। और मन का मण्डल मानो प्राण की गति के द्वारा मुनिवरों! देखो, उसका समन्वय संग्रहित किया जाता है।

मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मानो देखो, दोनों अपने गुरु शिष्या भवा सम्ब्रहे दोनों विचार-विनिमय करते रहते थे। परन्तु देखो, वह रात्रि के अन्तिम काल में मुनिवरों! देखो, वह मुद्रिका बनाते थे। अपनी मुद्रिका बना करके, मन को उस मुद्रिका पर लगा देना, मेरे प्यारे! देखो, हृदय से उसका समन्वय हो जाता था। और मानव का जो हृदय है वह बेटा! देखो, संसार के ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी माना गया है। क्योंकि हृदय से ही मानव स्नेह करता है, हृदय से ही मानव पंचीकरण को जानता है, हृदय से ही मानव अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ता है, हृदय से ही मानव नाना प्रकार के परमाणुवाद को जान करके मानो देखो, अपने यन्त्रों में यन्त्रित हो जाता है। परमाणु हृदय ही अगम्य ज्योति को जान करके, बेटा! देखो, ऋषि मुनि अन्तर्मुखी हो करके, वेद की पोथी को, वेद के मन्त्र के गम्भीर रहस्यों को जान करके बेटा! उसको बाह्य जगत् में प्रवेश करते रहते हैं।

हृदय का परमात्मा के हृदय से मिलान

तो मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण का जीवन जब मुझे स्मरण आता है तो भगवान कृष्ण मानो देखो, अन्धकार हो, प्रकाश हो, वह सदैव अपने जीवन को प्रकाश में लाना, ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्मचर्य की आभा में, ब्रह्मवर्चोसि उसे कहते हैं जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके

और पांचों अंगुष्ठानों का समन्वय उनके विचारों से मानो देखो, उसको समन्वय कराता है और उसको ले जा करके साकल्य बना करके, हृदय रूपी यज्ञशाला में मेरे पुत्रों! देखो, अगम्य ज्योति बना करके ज्ञान रूपी अग्नि को प्रचण्ड करके इस बाह्य जगत् के साकल्य को ला करके उसमें बेटा! जो स्वाहा कर रहा है, आहुति दे रहा है, वह स्वाहा कह करके बेटा! देखो, हृदय को परमात्मा के हृदय से मिलान मिलाना चाहता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्ण का जीवन मानो देखो, ऋषि के आश्रम में पनप रहा था, पनप रहा था आनन्दित हो करके पनप रहा था। मेरे प्यारे! देखो, भक्त सुदामा मानो देखो, उनके मित्र सुदामा थे। वह सुदामा के साथ भी मुनिवरों देखो, उनका विचार-विनिमय होता रहता था। वे सुदामा भी मानो देखो, क्योंकि वह भी दार्शनिक और तत्त्ववेत्ता के सम्बन्ध में मानो इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय करते रहते थे। परन्तु कृष्ण में यह विशेषता रही है कि जो ऋषि ने एक समय में विवेचना दी है, उस विवेचना को वह मानो देखो, स्मरण कर लेते थे और स्मरण करके उसी का अनुष्ठान करते हुए उसे बाह्य जगत् में प्रसारित करते थे और बाह्य जगत् से प्रसारित करके उसे समेट करके फिर वह आन्तरिक जगत् में ले जाते थे। आन्तरिक जगत् में ले जा करके वह उसको मुद्रित रूप में बनाते थे। तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्याएं, प्रत्येक मेरा प्यारे ऋषिवर मानो देखो, मुद्रित होना चाहता है, मुद्रित होना चाहिए। मुद्रित उसे कहते हैं जो बेटा! देखो, अग्नि तत्त्वों को जानना चाहता है, जल तत्त्वों को जानना चाहता है। मेरे पुत्रो! मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट करते हुए भी कहा है। भगवान कृष्ण ने भी मानो देखो, इस जल तत्त्व को जानते हुए मुद्रिका के गहरे समुद्र में चले गए। मानो देखो, गहरे समुद्र में जा करके उन्हें एक बिन्दु प्राप्त हुआ। मानो देखो, अगाध समुद्रों में जा करके, एक वेद का मन्त्र उन्हें स्मरण आया मानो अगाध समुद्र में जा करके और वह वेद का मन्त्र कहता था, सम्भविता अग्नि वो भवा अस्वानं ब्रह्मे वाचनमं प्रहे व्रता देवा मानो देखो, वह यह वेदमन्त्र और इस वेदमन्त्र में जो ज्ञान और विज्ञान मानो इसके गर्भ में विद्यमान था, उस गर्भ को उन्होंने जानने का प्रयास किया।

तो बेटा! वह गर्भ को कैसे जाना? मानो देखो, वेदमन्त्र कह रहा था, वेदमन्त्र की प्रतिभा यह कहती थी, एक बिन्दवा भवः सम्भवे देवाः क्योंकि परमपिता परमात्मा ने जब यह संसार की रचना की तो रचना के सम्दर्भ में मानो देखो, उन्होंने पंचीकरण से ऊर्ध्वा में जो पंचीकरण में वास कर रहा है, पंचीकरण का जो विभाजन ऐकीवाद का पंचीकरण में जो विभाजन कर रहा है, मानो उस चेतना का उन्होंने प्रदर्शन कराया। वह चेतना के ऊपर उन्होनें अनुसन्धान करते हुए मानो देखो, इस चेतना के सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार देते हुए कहा, सम्भवः प्रवे वृताः मेरे प्यारे! देखो, वृताः का जन्म हुआ। वह वृताः किसे कहते हैं? जब बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा ने इस संसार का मन्थन किया। संसार का जब मन्थन किया तो मुनिवरों! देखो, एक बिन्दु की रचना, एक उन्हें कहीं प्राप्त हुआ। महतत्त्व को जब मथा गया तो उससे मन्थन करने से एक बिन्दु का जन्म हुआ। उस बिन्दु को चेतना मे, मानो देखो, गति प्राण प्रहे असुता वह प्राण की आभा से वही बिन्दु मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम अन्तरिक्ष को प्रदान किया। अन्तरिक्ष मानो देखो, अपने में उसे स्थिर नहीं कर सका। वही बिन्दु, वही प्रतिभा वही जन्म प्रवेः वायु में प्रवेश किया, वायु भी उसे न रख सका क्योंकि वायु एक गति है। परन्तु देखो, वही प्रेय बिन्दु मेरे प्यारे! अग्नि में प्रवेश किया, तो अग्नि भी उसे अपने में स्थिर नहीं कर सकी। मेरे प्यारे! वही बिन्दु वरणोसा उस बिन्दु को वरणस स्वाहा कहते थे। परन्तु वह बिन्दु मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा भान है क्या वह आपो में प्रवेश कर दिया, जब आपों में प्रवेश कर दिया वहीं देवता का पूजन होने लगा। वहीं देव-प्रवृत्ति की आभा का जन्म हो गया। मेरे प्यारे! वही बिन्दु मानो प्रवेश करके आपो में, वही मुनिवरों! तेजोमयी गति बन गयी। वहीं तेजोमयी गति बन करके देखो, माता और पिता के हृदय में मानो देखो, जल बिन्दु उसी रसों का स्वादन होने लगा। उसी बिन्दु की रक्षा करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, वनस्पतियों का रस भी आने लगा। उसी आपों में वनस्पतियों का रस आया, रस आने के पश्चात् मानो

देखो, बिन्दु के आँगन में बेटा! देखो, सब परमाणु जो वनस्पतियों का रस था, परमाणु बन करके, रस के रूप में उस बिन्दु के आँगन में प्रवेश कर गया। जैसे एक बुद्धिमान है, एक ब्रह्मवेत्ता है, ब्रह्म की चर्चा कर रहा है। मानो नाना प्राणी आ करके, उसके अंग-संग विद्यमान हो जाते हैं और वह कहते हैं, महाराज! हमारी यह शंका है, उसका निवारण कीजिए। वह कहते हैं, कि ब्रह्म की शंका है। यह ब्रह्म एक गति है, कोई कहता है कि ब्रह्म एक कल्पतवृस्तु कहलाता है।

ऋत सत स्वरूप

परन्तु देखो, वह बुद्धिमान नाना प्रकार का परिचय दे करके यही कहता है क्या इसका मानो समाधान यह है जैसे मुझे स्मरण है मुनिवरों! देखो, पिप्पलाद ऋषि के यहाँ एक समय देखो, गार्गेपथ्य जा पहुंचे और गार्गेपथ्य ने यह कहा कि हे भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ कि ऋतश्चा ब्रह्मे प्राहा क्या भगवन! मैं इस वेदमन्त्र को जानना चाहता हूँ क्या मैं ऋत और सत् को जानना चाहता हूँ क्या इसी देखो, ऋषि से, ब्रह्मवेत्ता से जब यह प्रश्न किया गया कि ऋत, सत क्या है? तो मानो देखो, आचार्य, ब्रह्मवेत्ता उसका निवारण कर रहा है, निवारण करता हुआ कहता है कि ऋत् नाम प्रकृति का है और सत् नाम ब्रह्म का है। दोनों का समन्वय हो करके संसार की रचना हो जाती है। तो मानो देखो, ऋषिवर यह प्रश्न करता है परन्तु जैसे ब्रह्मवेत्ता निवारण कर रहा है। इसी प्रकार वह जो असु है वह जो मानो आपो में समाया गया था, उसके अंग संग नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस पहुंच जाता है। और नाना वनस्पतियों का रस जब उसके अंग संग आ जाता है तो वह अंग संग वनस्पतियों के रसों का उद्गम करने लगता है। उनके गुणों को उद्धृत करने लगता है।

प्रभु तुल्य माता

मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता है, अपने पुत्रों को, प्रातःकालीन अपने बाल्यों को पुत्र पुत्रियों को अपने समीप विद्यमान करके अपनी लोरियों का पान कराती रहती है और लोरियों का पान कराती कहती है, हे बालक! हे बालिका! तू मानो देखो, मेरे गर्भ से तुमने जन्म लिया है, तू महान् है, तू चेतना है, तुम मानो अकाय नहीं हो, अकाय तो केवल समन्वय होने से बना है। अकायं ब्रह्मे मानो अकाय तो मानो देखो, समन्वय का कृत कहलाता है। परन्तु ये चेतनामयी, आभामयी, रुद्रोमयी भागं ब्रह्म लोकां माता जब बालक को यह उपदेश देती है तो बालक-बालिका प्रसन्न हो रहे हैं। कहते है हे पूज्य माता! तू तो माता है। माता के शब्द का जो जन्म है मेरे पुत्रों! वह प्रभु! से उत्पन्न हुआ है। क्योंकि हमारे यहाँ प्रभु को माता कहते हैं। प्रभु ने अपने दायित्व को, माता के स्वरूप को पृथ्वी को प्रदान कर दिया तो पृथ्वी माता कहते हैं मानो देखो, जब पृथ्वी माता ने अपने स्वरूप को आपो को प्रदान करके बेटा! देखो, जो जननी माता है उसे अपना दायित्व दिया पृथ्वी ने, तो मानो देखो, उस ममता का जन्म हो गया पुत्रों! मेरे प्यारे! देखो, वह ममत्वानं ब्रह्मे सम्भवा देवाः मेरे पुत्रों! देखो, माता का जन्म हो गया और वह माता बन गई है वह जननी माता है। जिसके गर्भ में बेटा! वह शिशु बिन्दु मानो जो प्रभु! ने बेटा! जिस बिन्दु को मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष को दिया, अन्तरिक्ष ने कहा मैं इसे स्थिर नही कर सकता, वायु को दिया, वायु ने अग्नि को प्रदान कर दिया, अग्नि ने मुनिवरों! देखो, आपो में प्रवेश कर दिया, वही आपो है मेरे प्यारे! और यह मानो रजतव, वीर्यतव, ये वनस्पतियों का रस बिन्दु के अंग संग प्रवेश कर गया। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में यह बिन्दु है परन्तु देखो, वह धीमी-धीमी पनप रहा है। वनस्पतियों के रस, उसके अंग संग आ करके मेरे प्यारे! नाना धातुओं के रस, मुनिवरों! देखो, जितने रस हैं संसार के मुनिवरों! चाहे वह धातु के रूप में हैं, चाहे वह अन्नाद के रूप में हैं, चाहे वह खनिज के रूप में विद्यमान है मुनिवरों! देखो, चाहे वह तारामण्डल की जो नाना प्रकार की भीनी-भीनी किरणें आ रही हैं, धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है, सूर्य का प्रकाश आ रहा है, चन्द्रमा से रस आ रहा है, मेरे प्यारे! देखो, वह सर्व रसों का, मुनिवरों! देखो, सर्व ब्रह्माण्ड की सर्वत्र आभाएं मेरे प्यारे! उस शिशु

बिन्दु के समीप आनी प्रारम्भ हो जाती हैं। माता के गर्भस्थल में बेटा! वह जो प्रभु ने पृथ्वी माता कहा मानो देखो, अपना दायित्व दिया, और पृथ्वी माता ने जननी माता को देखो, अपना दायित्व दिया तो बेटा! देखो, उसमें हम जैसे पुत्रों! का निर्माण हो गया। वह निर्माण होने लगा मानो देखो, उसी नाना प्रकार की वनस्पतियों के रसों से, उस आभा का जन्म हो गया पुत्रों! मानो देखो, जब वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं, तो गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करने से बेटा! यह सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान मानव के समीप आने लगता हैं मुनिवरों! देखो, जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह तारा-मण्डलों में जाने का हो, मानो यातायात का हो, चाहे परमाणुओं को गठन करने का हो, परन्तु देखो, वहीं बिन्दु मानव के शरीर में मानव के रूप में प्रवेश हो, करके नाना प्राणियों के रूप में प्रवेश हो करके नाना प्राणी एक-दूसरे से बेटा! कटिबद्ध हो रहे है। एक-दूसरे में एक-दूसरे की प्रतिभा पिरोई हुई है।

मस्तिष्क में ब्रह्माण्ड

मेरे पुत्रो! वह जो प्रतिभा है वह एक महान् ज्योतिमयी कहलाती है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में, तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैंने तुम्हें कई काल में यह कहा है, कि मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल परिचय देने के लिए आता हूँ और वह परिचय क्या है? वह प्रभु ने बेटा! उस बिन्दु की रचना की। तो मानो भगवान कृष्ण ने संदीपन ऋषि से कहा, हे प्रभु! मैंने यह वेदमन्त्रों में अपनी ध्यानावस्था में, मुद्रा में प्रवेश कर गया। हृदय अगम्य ज्योति में प्रवेश करता हुआ मैंने परमात्मा के हृदय अगम्य ज्योति से जब मिलान किया तो प्रभु! मुझे कुछ ऐसा भान हुआ है कि मानव का जो लघु मस्तिष्क है, इस लघु मस्तिष्क में मानो देखो, इस प्रकृति का सर्वत्र मानो कुञ्जी सर्वत्र ब्रह्माण्ड इसमें ओत-प्रोत हो रहा है जैसे परमात्मा का जगत, यह ब्रह्माण्ड के रूप में है मानो नाना प्रकार की आभाओं के रूप में गतियाँ कर रहा है, तो इसी प्रकार यह जो शिशु रूपं ब्रह्मे कृतां देवाः यह जो मानो प्रभु ने अपना दायित्व जो एक-दूसरे को प्रदान किया है पृथ्वी ने कही गऊ माता के रूप में, ममता का उद्गत दिया है, कहीं मानो देखो, नाना प्रकार के रूपों में परिणत करने से निर्माता को माता का दायित्व दिया है।

बेटा! यह बड़ा विचित्र है, इसके ऊपर अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि परमात्मा के जगत् को जानने से, परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को जानने से, मेरे पुत्रों! देखो, यह प्रतीत होता है कि यह जो ब्रह्माण्ड है, ये गति कर रहा है, गतिशील है मानो देखो, वह जो गति है, वह चेतना है, वह मानो ममता के रूप में विद्यमान हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह आभामयी वाक् जब दोनों का, गुरु शिष्य परम्परा के आधार पर, विचार-विनिमय होता रहता था, तो मुनिवरों! एक समय भगवान कृष्ण ने यह कहा कि महाराज! मैं चित्त के मण्डल के ऊपर अपना अध्ययन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने देखो, अग्नि और पृथ्वी की दोनों की मुद्रिका बनाई। मुद्रिका बना करके भगवान कृष्ण बेटा! अन्तर्मुख बन गए। अन्तर्मुख बन करके ये मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण से मानो देखो, बीस वर्ष का काल जब समाप्त हुआ था, उस काल में यह मुद्रिका उन्होंने बनाई। और यह मुद्रिका बना करके मुनिवरों! देखो, बीस वर्ष के ब्रह्मचारी ने मानो यह मुद्रिका बना करके अन्तर्मुखी हो जाना, बाह्य जगत् में आना, मानो देखो, शिशु विज्ञान को जानना और बाह्य जगत्, आन्तरिक जगत् दोनों का समन्वय करते हुए आचार्य के चरणों में सदैव मानो देखो, वेदमन्त्रों के ऊपर अध्ययन होता रहता था।

तो मुनिवरों! देखो, संदीपन ऋषि महाराज ने एक समय ब्रह्मचारी से एक वेदमन्त्र का अनुष्ठान कराया। उन्होंने कहा इसको लगभग बारह दिवस तक तुम इसका अनुष्ठान करो। मेरे प्यारे! अनुष्ठान का अभिप्रायः यह है क्या उस वेदमन्त्र को लेकर के अध्ययन करना। उसके एक-एक शब्द के ऊपर मानो उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अध्ययन करना और अध्ययन करके उसके स्वरूप का वर्णन करना यह मानो देखो, जब उन्होंने वर्णाः प्रहे जब उन्होंने आज्ञा दी तो एक वेदमन्त्र के ऊपर बारह दिवस तक अध्ययन करने लगे। जब अध्ययन करने लगे तो

वेदमन्त्र क्या था? वेदमन्त्र था विष्णु चक्रां भवाः सम्भवेति देवं ब्रहाः शम्भु अप्रणां भूता ब्रहा वेद का वाक् यह कह रहा था कि तुम इसके ऊपर अध्ययन करो। मेरे प्यारे! देखो, भगवान कृष्ण ने बारह दिवस तक एकान्त मुद्रिका बना करके मुनिवरों! देखो, अन्तर्मुखी बन गए। अन्तर्मुखी बन करके वह देखो, वह ऋषि संदीपन उन्हें मुनिवरों! देखो, कुछ औषधियों का पंचांग बना करके, दूधेडिका, कृलवांचनी, सम्भूनिका, सर्पकेतु, कुछ औषधियों का बेटा! वह तपा करके मानो रस बना करके मानो रस बना करके भगवान कृष्ण को मानो देखो, प्रातःकाल प्रदान कराते थे। वह बारह वर्षो तक तक अनुसन्धान किया तो उसमें मुनिवरों! देखो, जितने भी ये नाना प्राणी हैं जैसे सर्प है, सुदुकेतु है, जैसे सिंह है, जैसे मृग है और गौ अस्वानी है यह कुछ पशु होते हैं जो वनचर हैं, उनकी भाषा को, उनका क्रिया-कलाप उनका आमोद-प्रमोद सर्वत्र इस वेदमन्त्र में वह विज्ञान विराजमान था। तो मुनिवरों! देखो, उसके विज्ञान को भगवान कृष्ण ने अध्ययन किया। तो हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! गुरु शिष्य की जो परम्परा है वह बड़ी विचित्र रही है। मानो देखो, गुरु और शिष्य दोनों एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, अध्ययन करना, उनके अध्यापन का कार्य मानो देखो, रूचिकर होता हुआ, जिस प्रकार का वह विज्ञान बनाना चाहते, अपने जीवन में उसी प्रकार की विद्या, उसी प्रकार की अनुभूतियाँ चक्र वह उनको प्रदान करते रहते थे।

तो मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा कि उनका काल बड़ा विचित्र रहा। मुनिवरों! देखो, वह इन्हीं वेदमन्त्रों के ऊपर अपने स्थूल शरीर को सूक्ष्म, आकुञ्चन बनाना, जैसा मुनिवरों! देखो, प्रकृति का स्वभाव है। इसी स्वभाव के आधार पर मानो विराट रूप की भी प्रतिक्रिया उसी में विद्यमान रहती थी।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार यह दे रहा हूँ हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! इन मानो देखो, मुद्रिकाओं के ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते रहते थे और वह जो मुद्रिका है, उस मुद्रिका विज्ञान को जानते हुए ऋषि-मुनि बेटा! अपने में पारायण होते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करते थे। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है? हम प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर अपना अनुसन्धान करना चाहते हैं। प्रत्येक वेदमन्त्र में, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! उसका ज्ञान, उसका विज्ञान, मुनिवरों! देखो, परमाणुवाद लोक लोकान्तर मानो उसके ऊपर अनुसन्धान करना चाहता हैं। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था कि यह जो मंगलं ब्रहे अस्तोः बिन्दं आपो है इस आपो में ही प्राणं ब्रहे अस्तोः, यह प्राण शक्ति उसमें समाहित रहती है। उसी से बेटा! मानो देखो, औषधियों के रसों का स्वादन होता रहता हैं यदि हमारे इस मानव शरीर की रचना में लोक-लोकान्तरों के परमाणु तरंगवाद नहीं है तो लोकों को नहीं जान पायेंगे। जान उसी रूप में सकते हैं जब हमारे अन्तर्हृदय में वह प्रतिभा विद्यमान रहती है।

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या? मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है। प्रत्येक मानव को आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बन करके प्रत्येक मानव को आध्यात्मिक याग करना चाहिए। बेटा! यागां ब्रह्मेः लोकाम् मानो देखो, यागिक बन करके, यागिक कौन है? जो बाह्य जगत् को जानता है। एक यज्ञमान बेटा! आहुति दे रहा है, यज्ञशाला में आहुति दे रहा है। वह आहुति अग्नि वायुमण्डल में प्रवेश करा देती हैं वह सूक्ष्म बन करके मानो देखो, उसकी विभक्त शक्ति प्रबल बनती हुई मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत् को आन्तरिक जगत् के क्षेत्रों में लाना ही मुनिवरों! देखो, यह विशेषता मानी जाती है। मेरे पुत्रों! आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है आज हम गुरु-शिष्य के सम्वाद में परिणत हो गए। मानो देखो, उस बिन्दु के ऊपर जिस बिन्दु की रचना माता के स्वरूप में मानो वही बिन्दु बन जाता है, वही पिता के रूप में बन जाता है, वही पुत्र के रूप में बन जाता है। मानो देखो, एक संकल्प शक्ति के द्वारा, प्रभु का यह जगत् है, यह संकल्प शक्ति ही कहलाती

है, बेटा! जिससे मानव वे शिशु बेटा! भिन्न-भिन्न रूपों में दृष्टिपात आ रहा है। उसको बेटा! एकोकी दृष्टि में, एकोकी आकुञ्चन शक्ति में लाना है, एक ही रूप में लाने के लिए बेटा! हमें प्रभु की याचना करनी है। हम प्रभु की याचना करते हुए अपनी अन्तरात्मा को जानने के लिए तत्पर हो जाएं।

बेटा! देखो, आज मैं मुद्रिका के सम्बन्ध में हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की मुद्रिकाओं के ऊपर चिकित्सा भी होती रहती थी, उस चिकित्सा के सम्बन्ध में मैं कल तुम्हें विशेष चर्चाएँ प्रगट करूंगा। क्या हमारे यहाँ मुद्रिका में चिकित्सा कैसे है वे चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे क्या प्रत्येक मानव रूग्ण रहता है मानो देखो, वायु को हम कैसे दमन कर सकते हैं? अग्नि को हम कैसे दमन कर सकते हैं? ये कल बेटा! देखो, भगवान कृष्ण और संदीपन ऋषि के संवाद में वार्त्ताएं उनका जो विचार है वे कल हम प्रगट करेंगे। आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। स्थान : लाक्षागृह, बरनावा।

३ भगवान कृष्ण का ऋषि संदीपन के आश्रम में

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का वर्णन किया जाता हैं हमारे यहाँ वेदों के पठन-पाठन का, जो क्रिया कलाप होता रहता है मानो उसमें नाना प्रकार के व्यंजन हैं, नाना प्रकार की धाराएं हैं। हमारे यहाँ, जब वेदों का पठन-पाठन किया जाता है तो बेटा! उसके नाना प्रकार माने गए हैं, जैसे हमारे यहाँ जटापाठ, घनपाठ, मालापाठ, विसर्गपाठ, उदात्त और अनुदात्त। मानो नाना प्रकार के पठन-पाठन करने के, नाना भेदन माने गए है। मानो उसमें भेदन करने वालों में अपनी-अपनी वृत्तियों को ले जाते हुए मानो उन्होंने बेटा! प्रत्येक स्वरों में कोई न कोई ऐसी प्रतिभा, ऐसा कोई समन्वय इन्द्रियों का रहता है जैसे बेटा! मानो अपने नौ द्वारों को योगेश्वर शान्त करता हुआ और एक मस्तिष्क में लघु अव्रणाः होता है, मानो एक ध्वनि होती है, जिसको हमारे यहाँ अनहद कहते हैं, मानो उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार का ध्वनि-चक्र चलता रहता है। तो मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें ध्वनि चक्रों के ऊपर विशष विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि हमारे वैदिक साहित्य में, भिन्न-भिन्न प्रकार की चर्चाएँ, भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराएं, भिन्न-भिन्न प्रकार का शब्दों का रूपांतर परम्परागतों से होता रहा है।

गुरु शिष्य की कामना

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है, हमारे यहाँ गुरु और शिष्य दोनों की परम्परा और उन दोनों का जो समन्वय है, वह बड़ा विचित्र रहा है क्योंकि जिस समय आचार्य ब्रह्मचारी को शिक्षा देता है, तो उसके हृदय में ये वेदना होती है कि मेरा यह ब्रह्मचारी महान् और पवित्र बने, और परन्तु ब्रह्मचारी यह चाहता है कि मैं आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके, अपने जीवन की जितनी गुत्थियाँ हैं, अपने जीवन की जितनी ग्रन्थियाँ हैं, मानो उनका सर्वत्र स्पाष्टीकरण हो जाए। मेरे प्यारे! गुरु-शिष्य का दोनों का बडा विशिष्ट बहुत विचित्र परम्परागतों से समन्वय रहा है। जैसे माता और पुत्र का विशेष समन्वय रहता है, जैसे माता जन्म दे देती है तो आचार्य उसे जीवन प्रदान करता चला जाता है। तो मेरे प्यारे! मैं विशेषता में न जाता हुआ, आज मैं तुम्हें वहीं ले जाना चाहता हूँ बेटा! जहाँ भगवान कृष्ण और मुनिवरों! देखो, महात्मा संदीपन ऋषि महाराज की चर्चा होती रहती है। मानो उन्होंने बेटा! स्वर विज्ञान के ऊपर, मुनिवरों! देखो, ऋषि ने स्वर विज्ञान के ऊपर अपनी कुछ टिप्पणीयाँ देने लगे। तो महात्मा संदीपन ऋषि ने, महामना ने यह कहा, हे कृष्ण! आओ, मानो देखो, जैसे तुम मेरे आँगन में विराजमान हो करके अपनी प्रत्येक ध्वनि को स्वीकार करो। मेरे प्यारे! उन्होंने अपने चरणों में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार की मुद्रिका के सम्बन्ध में, उन्होंने अपना विचार दिया, मुनिवरों! देखो, हस्त कि मानो जो देखो, उंगलियाँ में ब्रहे मेरे प्यारे! इसमें कुछ ध्वनियाँ होती रहती हैं उनकी यह जो कृतियाँ हैं, उनकी जो वासनी है मानो देखो, मुनिवरों! देखो, उनके ऊपर उनका विचार, उनका भाषाएं, भाषाओं का मानो उद्गम होता रहता है। एक मानव देखो, अपने ही एक अंगुष्ठान से सर्वत्र अपनी भाषा का प्रतिपादन कर देता है, उसमें मानो देखो, अक्षरों की प्रतिभा है, उसमें व्यंजन हैं, उसी में प्रति अग्रह कहलाया जाता है।

ब्रह्म का जगत

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं हैं पुत्रो! भगवान कृष्ण उनके चरणों में विद्यमान हो करके मानो देखो, उन मुद्राओं के सम्बन्ध में जानते थे कहीं मुनिवरों! उन्होंने अग्नि तत्त्व को प्रधान माना है, किसी ने आकाश-तत्त्व को प्रधान माना है, अन्तरिक्ष और किसी में मुनिवरों! देखो, जल और वायु का समन्वय किया है और पार्थिवता से इसका समन्वय करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, उसमें नाना प्रकार के स्वरों की

आभा का जन्म होता हैं मिलान करने से शब्दों की धाराओं का जन्म होने लगता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस विचार को देते हुए भगवान कृष्ण ने नाना आचार्या से नाना प्रकार के प्रश्न किया करते थे। उन्होंने कहा, प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो बाह्य जगत् है मानो ब्रह्माण्ड एक स्वरूप बना हुआ है, यह ब्रह्म का अनुपम जगत् है, इसको ब्रह्माण्ड कहते हैं। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो ब्रह्माण्ड गति कर रहा है यह स्वरों से कर रहा है या व्यंजनों से कर रहा है?

पांच प्रकार की गतियां

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय महात्मा संदीपन ने कहा कि जो भी गतियाँ हो रही हैं वह नाना प्रकार के व्यंजनों में हैं, स्वरों में हैं और देखो, अपनी-अपनी आभा में आभायित होने वाली प्रतिक्रिया चल रही है। क्या तुम्हें यह प्रतीत है मैंने कई काल में तुम्हें ये प्रगट करते हुए कहा था कि यह जो ब्रह्माण्ड है इसमें मानो पांच प्रकार की प्रतिक्रिया होती रहती है। इस ब्रह्माण्ड में पांच प्रकार की प्रतिक्रियाएं सबसे प्रथम मानो देखो, प्रसारण है उसके पश्चात् मानो देखो, इसी में गति है गति के पश्चात् इसी में ध्रुवा है, ध्रुवा के पश्चात् इसी में ऊर्ध्वा है और इसी में आकुञ्चन शक्ति विद्यमान रहती है। जितना संसार का, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल का जितना भी विज्ञान है वह सर्वत्र विज्ञान इन पांचों प्रकृति की गतियों से दृष्टिपात हो रहा है। मानो जितना भी विज्ञान आज हमें दृष्टिपात आ रहा है, जितना भी भौतिक विज्ञान है यह मानो देखो, प्रसारण में हैं, वही ध्रुवा में है, यही गति में है, और मुनिवरों! देखो, यही ऊर्ध्वा में होता हुआ, आकुञ्चन में सिमट जाता है। मानो देखो, इस प्रकार का ये देखो, विज्ञान काण्ड है विज्ञान की जो प्रतिभा है वह पांचों प्रकार की आभाओं में गति कर रहा है परन्तु देखो, इसका विचार अब्रूण कहलाया जाता है। मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण के हृदय में एक संकल्प जागा कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या इन पांचों गतियों का इस अन्तरात्मा से क्या समन्वय होता रहता है और इस ब्रह्माण्ड का तो मैंने जान लिया है कि इस ब्रह्माण्ड से कृत्तियाँ है परन्तु आत्मा से क्या सम्बन्ध है इसका?

आत्मा का रथ

तो महात्मा संदीपन ऋषि ने कहा, ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रातः कालीन था, तो मुनिवरों! उन्होंने कहा हे कृष्ण! यह जो अग्रताः सम्भवाः देवं ब्रह्मा मानो देखो, यह जो मैंने तुम्हें जो पांचों प्रकार की, ब्रह्माण्ड की आभा का वर्णन किया है। इसी ब्रह्माण्ड का समन्वय इस मानव के शरीर से होता है क्योंकि यह आत्मा का शरीर है। आत्मा का रथ है मानो देखो, रथ से इसका समन्वय रहता है। मानव के नेत्र हैं मेरे प्यारे! इसमें प्रसारण-शक्ति रहती है, इसी में आकुञ्चन शक्ति है, इसी में मानो देखो, गति है मुनिवरों! देखो, गति से अप्रतम ब्रह्मेः गच्छतो देवाः मेरे प्यारे! नेत्र संसार का चित्र ले लेते हैं। जिस वस्तु को दृष्टिपात किया जा रहा है। नेत्र केवल दृष्टिपात करते ही मुनिवरों! देखो, मन रूपी श्वञ्जनं विद्यमान है। वह उसकी आकर्षण शक्ति मानो देखो, उसकी आभा को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में प्रसारण, उसी में क्रिया, उसी में मुनिवरों! देखो, सर्वत्र ध्रुवा, ऊर्ध्वा, आकुञ्चन, प्रतिभा इसमें ओत-प्रोत हो जाती हैं। इसी प्रकार ये जो ब्रह्माण्ड है, जो मानो देखो, विज्ञानशाला के रूप में यह ब्रह्माण्ड कहलाता है। मुनिवरों! देखो, इसमें एक आकुञ्चन शक्ति है, एक प्रसारण है, वैज्ञानिकजन प्रसारण को जान लेते हैं तो मुनिवरों! वह गति में चले जाते हैं। गति में प्रवेश करते हैं तो ध्रुवा में चले जाते हैं। ध्रुवा को जानते हैं तो ऊर्ध्वा में चले जाते हैं। ऊर्ध्वा में से मेरे प्यारे! सर्वत्र को आकुञ्चन बना करके यन्त्रों का निर्माण कर लेते हैं। मेरे प्यारे! योगीजन जब साधना के क्षेत्र में जाता है, तो बेटा! देखो, इन्द्रियों में जो प्रसारण है, मुनिवरों! देखो, जो भी कुछ क्रिया कलाप हो रहा है, उस सर्वत्र को बेटा! योगीजन दृष्टिपात करते रहे हैं। यह तारामण्डलों की माला है, माला बनी हुई है। मेरे प्यारे! ये शब्दों की माला है वे शब्द भी मुनिवरों! आकार के सहित चलते रहते हैं। उन पर अच्छी प्रकार दृष्टिपात करता है, मानो इसी प्रकार प्रीति है, प्रेम है, स्नेह है, मानवीयता है। मेरे

प्यारे! देखो, उसमें चला जाता है। पांचों इन्द्रियों का जो स्वाहा है, मेरे प्यारे! देखो, इसको जान करके ये संसार में इसके स्वरूप को बाह्य जगत् में जान करके समेट लेते हैं, आकुश्चन कर लेते हैं। आकुश्चन करके मेरे प्यारे! देखो, वह अपने अन्तर्हृदय में ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हैं। अपने अन्तर्हृदय में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करते रहते हैं।

प्रकृति की आभा

बेटा! मुझे एक वाक् स्मरण आ गया है। ये संदीपन और भगवान कृष्ण का संवाद तो चलता ही रहा है परन्तु मुझे एक वार्त्ता सतोयुग के काल की स्मरण आ गई है पुत्रों! हमारे यहाँ एक हरितत नामक एक गोत्र हुआ है, जिस गोत्र का सम्बन्ध दद्दड़ गोत्र से रहा है। तो हरितत जो गोत्र था मुनिवरों! उसका ऊर्ध्वा से सम्बन्ध, परम्परा से बेटा! वायु गोत्र से रहा है तो मुनिवरों! देखो, वह हरितत गोत्र में बेटा! एक ऋषि हुए हैं, जिन ऋषि का नाम मेरे प्यारे! सुकन्वाकेतुक ऋषि महाराज था। सुकन्वाकेतुक ऋषि महाराज एक समय अपने आसन पर विद्यमान थे। वह आचार्यों से, मानो देखो, अपने गुरुओं से, ऋषि-मुनियों से ये चर्चा श्रवण करते रहे कि मैं आकुश्चन करना चाहता हूँ और मैं आकुश्चन कैसे करूं? अपने हृदयस्थली में विद्यमान हो करके इस संसार को हृदयमयी दृष्टिपात करने लगे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह जो ऋषि थे वे हरितत गोत्र ऋषि महाराज बेटा! वह मानो देखो, साधना के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। उन्होंने जब वैज्ञानिक तथ्यों से ये जान लिया कि यह पांचों गति ही प्रकृति की आभा कहलाती हैं। परन्तु देखो, मुझे क्रियात्मक अपने जीवन को बनाना है, क्रियात्मक क्षेत्र में मुझे अपने को ले जाना है। तो मानो देखो, उन्होंने ये विचारा कि कौन-कौन-सी औषधियाँ ऐसी हैं जिन औषधियाँ में प्रसारण भी हो, कुछ औषधियों में आकुश्चन हो, कुछ औषधियों में गति हो। पुनरूक्ति मानो इस प्रकार का मानो देखो, उन्होंने अपने में पांचो गतियों को जानने के लिए और आत्मा से, सम्बन्धित इस वाक् को जानने लगे। आत्मा से, इनका क्या समन्वय रहता है?

तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह इस वाक् को ले करके वह अपनी ऊँची उड़ान उड़ने लगे तो मुनिवरों! देखो, वृक्षों के क्षेत्र में पहुंचे, वह वनस्पति क्षेत्र में पहुंचे। मेरे प्यारे! वनस्पति क्षेत्र में जा करके, उन्होनें रसना के अग्रभाग को, बारह वर्ष तक, छिद्रों को जानने के लिए, उन्होनें बेटा! उसकी जानकारी के लिए अनुसन्धान किया और बारह वर्ष का एक ही अनुष्ठान किया उन्होंने। उस अनुष्ठान से यह हुआ यह हुआ जितने रसना के अग्रभाग मेरे प्यारे रसना के अग्रभाग को के छिद्र हैं जिसमें पांचों रस समाहित रहते हैं वही रस मुनिवरों! देखो, इन वनस्पतियों में ओत-प्रोत रहते हैं और उन वनस्पतियों को जानने के लिए मेरे पुत्रों! उन्होंने अनुष्ठान किया। बारह वर्ष के अनुष्ठान करते हुए रसना पर विजय प्राप्त कर ली, रसना के रसों को विजय कर लेता है, विजय कैसे करता है? बेटा! उसमें शीतली प्राणायाम किया जाता है, शीतली जो प्राणायाम् है उसे करने से और उसमें मुनिवरों! देखो, अग्नि अग्नवाकेतु मुनिवरों! देखो, मुद्रा में मुद्रित किया जता है। मानो देखो, उन्होंने वह प्राणायाम किया। जल को उन्होंने मुनिवरों! अन्तरिक्ष से शीतली प्राणायाम से उन्होंने अपने में धारण किया, परन्तु देखो, छः माह तक यह अध्ययन किया। छः माह तक उन्होंने अग्नेश्वरी प्राणायाम किया। अग्नेश्वरी प्राणायाम वह होता है। मेरे प्यारे! देखो, कुम्भक को प्राची कृताक करते हुए, विश्वा अनुगात्त करते हुए मेरे प्यारे! देखो, उसमें उसको ले करके वह अग्निवर्णा कहलाया गया, जिसमे शरीर में अग्नि प्रचण्ड हो जाए। अग्नि प्रचण्ड होना एक प्राणायाम है। उन्होंने बेटा! वह एक चन्द्रकेतु सोम प्राणायाम किया। मेरे प्यारे! देखो, उसको लेने से, प्राणायाम को करने से उनकी रसना पर मेरे पुत्रों! देखो, विजयता को प्राप्त हो गये। रसना के अग्रभाग के छिद्रों को जाना। छिद्रों को जान करके अग्नि का अनुष्ठान किया। जल अनुष्ठान किया मेरे प्यारे! देखो, वह इस प्रकार के अनुष्ठान किए तो मुनिवरों! वह बारह वर्षों का तप करने के पश्चात् मुनिवरों! देखो, अपने में विजयता को प्राप्त हो गए। कामां ब्रह्मवे सम्भवः जो मानव रसना के रसों का स्वादन करता हुआ मेरे प्यारे! इस पर विजय कर लेता है, वह ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर लेता है और ब्रह्मचर्य

व्रत को धारण करने वाला ब्रह्मवर्चोसि बनने के लिए तत्पर होता है। प्राणायाम ब्रह्मा प्राणायाम रूद्रो प्राणायाम समभवा मेरे प्यारे! देखो, वह मानो ब्रह्म की आभा में रमण करने लगता है, एक प्राण सखा के द्वार पर मुनिवरों! देखो, मन को स्थिर कर लेता है, मन को स्थिर करता हुआ खेचरी प्राणायाम के द्वारा शीतली प्राणायाम के द्वारा, विश्वानं प्राणायाम के द्वारा मानो देखो, भिन्न-भिन्न की आभा में गति करने लगता है तो रसना पर विजय हो जाता है। एकोकी रसना पर विजय करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने पंचांग औषधियों का पान किया। उन्होंने कुछ वृक्षों के रसों को जल में तपा करके अग्नि के द्वारा मुनिवरों! देखो, पान किया। ऐसा मुझे कुछ स्मरण है। मुनिवरों! देखो, उन ऋषियों ने देखो, बारह वर्ष का अनुष्ठान करते हुए, उन्होंने और उसके पश्चात मानो देखो, इन्द्री के ऊपर अनुसन्धान करते हुए, केवल अब्रहा सम्भवे रसना ग्रही अम्ब्रहो वह रसना के ऊपर अनुसन्धान करते हुए मेरे प्यारे! उन्होंने उसके पश्चात् श्रोत्रीय इन्द्रियों के ऊपर अनुसन्धान किया। श्रोत्रीय इन्द्रिय के पश्चात् चक्षु इन्द्रिय पर अनुसन्धान करते हुए उनको ला करके उनका जितना भव्य जगत् था सूक्ष्म जगत् था, मेरे प्यारे! देखो, सब जगत् को ले जाकर के बाह्य ब्रह्माण्ड में उसकी कल्पना की। ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हुए मुनिवरों! उनको आकुञ्चन शक्ति में, आकुञ्चन करते हुए सर्वत्रता को, मुनिवरों! देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में, उस साकल्य की आहुति देने के पश्चात् मेरे प्यारे! अपने में सफलता को प्राप्त हो गए।

तो विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! मैं ऐसी चर्चा कर रहा हूँ जो बेटा! किसी काल में हम साधकों के मध्य में ये चर्चा किया करते थे। मानो साधकों को यह जब यह शिक्षा देते रहते थे तो मुनिवरों! देखो, आज समय इतनी आज्ञा नहीं दे रहा है। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, यह क्रियाएं, ये विचारधाराएं, केवल देखो, हमारे ऋषि-मुनि ही नहीं, त्रेता के काल में, इस प्रकार का देखो, विज्ञान रहा है। इस प्रकार का यौगिकवाद भी रहा है परन्तु इसका दुरूपयोग भी होता रहा है। तुम्हें ये प्रतीत होगा श्वेतम नामक राजा की कन्या का नाम सुरसा था देखो, उसका नाम तो सोमकेतु था। परन्तु सोमकेतु माता कहती थी परन्तु पिता उसे ऋचा कहता था। और ऋचा के अब्रहा मेरे प्यारे! देखो, जब वह गुरु के यहाँ अध्ययन करती थी तो वह उसको सुरसा कहा करते थे, मेरे प्यारे! देखो, सुरसा ने बहुत से विज्ञान को जाना। मानो इन्हीं पांचों प्रतिक्रियाओं को वेद की लेकर उन्होंने बेटा! देखो, बहुत सी प्रतिक्रियाओं को बाह्य जगत् में जानते हुए मानो देखो, आन्तरिक जगत् में जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, मुखारबिन्दु को बहुत ऊर्ध्वा में मानो कर लेना, आकुञ्चन कर लेना ये सब क्रिया देखो, उनके समक्ष आती रहती थीं। मेरे प्यारे! देखो, सुरसा अपने मुखारबिन्दु को बहुत गति से कर लेती थी परन्तु देखो, उसी प्रकार देखो, आकुञ्चनता में लाने के लिए भी तत्पर रही। परन्तु देखो, उन्होंने बहुत से प्राणियों को, बहुत से मनुष्यों को मुख में अर्पित कर लेना, मानो देखो, उसको आकुञ्चन की आभा को परिणत कर लेना तो मुखारबिन्दु में एक स्वानचनकेतु नामक एक यन्त्र था उनके द्वारा। जो उन्होंने मुख में आश्वातन दिया। जिस समय तुम्हें प्रतीत होगा, महाराज हनुमान मानो देखो, जामवन्त और मुनिवरों! देखो, सम्पाति की प्रेरणा से जब समुद्र को यन्त्रों से मुनिवरों! गति करने लगे तो मुनिवरों! देखो, सुरसा का स्थान आता था। देखो, प्रारम्भ में सुरसा ने उस यन्त्र को मुखारबिन्दु पर धारण किया हुआ था। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें हनुमान को परिणत कर लिया। मेरे पुत्रों! देखो, हनुमान जी सुरसा से भी मुनिवरों! देखो, विशेष वैज्ञानिक थे। मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने शरीर को प्रसारण शक्ति का प्रहार किया, महाराजा हनुमान ने अपने शरीर को विशाल बनाया। उनके देखो, धारण में एक यन्त्र था जिस यन्त्र की आभा से मनुष्य जीवित रह सके और यन्त्र का विनाश हो जाए। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह यन्त्र महाराजा जामवन्त की प्रेरणा में, महाराजा सम्पाति ने दिया। महाराजा सम्पाति के राष्ट्र पर ही महारानी सुरसा देखो, राज्य करती रहती थी, शासन करती रहती थी। तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महाराजा! सम्पाति ने मुनिवरों! देखो, एक यन्त्र दिया उन्हें, जिस यन्त्र का नाम संगतक नामक था। संगतक नामक यन्त्र को उन्होंने दिया जामवन्त

को। सुरसा के यन्त्र में जो मुखमानित यन्त्र कहलाता था। मुनिवरों! यन्त्र का नाम विकृत हुआ, उस यन्त्र का आक्रमण होकर विनाश हो गया और हनुमान उसमें से जीवित निकल करके लंका में प्रवेश कर लिया।

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, जिन यन्त्रों को मानो देखो, जिन क्रियाओं को क्रियात्मकता में ऋषि-मुनि किया करते थे और मुनिवरों! वही विज्ञान, वही आभा जब राजाओं के समीप आ पहुंची तो उन्होंने उसे यन्त्रों के रूप में लेना प्रारम्भ कर दिया। वैज्ञानिकों ने उसे यन्त्र के रूप में ला करके, मेरे पुत्रों! देखो, उसका नाना रूपों में प्रतिपादन किया गया। यन्त्रवादों में यन्त्र की आभा रमण होती रही परन्तु इस प्रकार का विज्ञान हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! पांचो प्रकार की गतियों में मानो गतिशील होता रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल कुछ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ, इन पांचों गतियों पर सर्वत्र विज्ञान गति करता है। मानो इसी से यन्त्रवाद है। इसी से मुनिवरों! देखो, साधना के क्षेत्र में, साधनावाद भी इसी के क्षेत्र में रहता है। मुनिवरों! देखो, पुरातन काल में बेटा! जब विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा ब्रह्मचारियों को प्रदान की जाती है तो ब्रह्मचारियों का मानवीयत्व महान् बनता था, ब्रह्मचारियों का जीवन ऊर्ध्वा में गति करता है। मेरी प्यारी माता जब अपने गर्भस्थल में अपने बालक को कर्त्तव्यवादन करती हुई मानो बालक को गर्भ में शिक्षा देना प्रारम्भ करती है। इसी प्रकार की शिक्षा मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक माता ने दे-दे कर उसका अनुभव किया।

ऋषि पराशर का माता द्वारा शिक्षा

मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है। इसी सन्दर्भ में बेटा! एक समय बहुत पुरातन काल की वार्त्ता है। बेटा! एक हमारे यहाँ ऋषि हुए हैं, जिनका नाम मुनिवरों! देखो, पाराशर कहलाया जाता हैं वह ऋषि हुए परन्तु पराशर ऋषि को बाल्यकाल से यह उन्हें सिद्ध था कि वह प्रत्येक भाषा की, प्रत्येक प्राणी की और कुछ पक्षियों की भाषा उन्हें स्मरण थी। मेरे प्यारे! देखो, उन भाषाओं में क्या-क्या विज्ञान था? मेरे प्यारे! कुछ ध्वनियाँ होती रहती थीं, कुछ परमाणु गति करते रहते थे। तो मुनिवरों! कहीं उनकी माता ने, शकुन्तमानुक उनकी माता का नाम था, उन्होंने एक समय दर्शनों में कहीं यह अध्ययन किया कि बालक को जो मानो देखो, उसके मस्तिष्क को श्वासों की तरंगें उसमें परिणत कर देती हैं माता, तो उसके श्वासों की जो गतियाँ होती हैं जो श्वास में विचार होते हैं वही विचार मुनिवरों! देखो, बालक के अन्तःकरण में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसा कहीं उन्होंने दर्शनों में अध्ययन किया, जब अध्ययन किया तो मुनिवरों! माता ने इन वाक्यों का अध्ययन करके, जब पराशर मुनि जब उनके माता के गर्भस्थल में विद्यमान थे, तो मुनिवरों! देखो, माता यह कहा करती थीं, एकान्त स्थली में विद्यमान है, गर्भ में रहने वाले आत्मा से चर्चा करती रहती थी। मानो देखो, वह कहा करती थी, हे आत्मा! तू भव्य है, हे आत्मा! तू एक रस रहने वाली है, मानो तू मेरे गर्भस्थल में आई है, तेरा क्या संस्कार है मेरे से? तेरा क्या सम्बन्ध है? मानो देखो, यह आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रहती थी, और यदि तू इसका उत्तर नहीं देती आत्मा तो तेरा मेरा जो सम्बन्ध है वह केवल संकल्पमात्र से ही रहेगा। मानो देखो, संकल्प मैंने किया, पतिदेव ने किया, संकल्पमात्र से देखो, वह बिन्दु आभा में प्रवेश हो गया हैं वही बिन्दु मानो जल में प्रवेश करता हुआ, तू मेरे गर्भस्थल में आत्मा अमृत ले करके आया है। मानो देखो, हे बालक! ये जो संसार है इस संसार में तू आया है, ये संसार बड़ा विचित्र है, यहाँ इस संसार में मानो देखो, कोई अपमानित कर रहा है, कोई मान कर रहा है, कोई दुरिता में परिणत कर रहा है तो कोई आभा में परिणत कर रहा है, कोई पुष्पों की वृष्टि कर रहा है, कोई धूलिका में परिणत करा रहा है। हे देवत्याम्! हे आत्मा! तू भव्य है, तू कथमोसि है। तू कैसे मेरे गर्भ में आया? मानो देखो, माता ये वार्त्ता प्रगट करती रहती थी। जब माता निद्रा की गोद में जाती और निद्रा की गोद में जाने के पश्चात् जब मानो वह सुषुप्ति में प्रवेश करती हुई और जब वह देखो, स्वप्नावस्था में किसी काल में चली जाती थी, माता की स्वप्नावस्था में उस

अन्तरात्मा का एक आकार बन करके क्योंकि जो विचार उसने बनाए वह आकार बन करके आत्मा यह कहा करती थी, सम्भवः देवः सम्भवः रुद्रा सम्भवः भद्रम् भवे सम्भवः हे माता! मैं भद्र बन करके तुझे माता बनाने के लिए आया हूँ क्योंकि मेरा सकल्प केवल इतना है, ममतव है, उस संकल्प में ग्रता है, मानो मेरा पुण्य तेरे गर्भ में आने का, क्योंकि तू भव्य और पवित्र है। यह कहा करता था वह आत्मा! परन्तु जब माता के गर्भ से बालक जगत् में आया, संसार में आया, माता की लोरियों को पान करने लगा, माता उसके नेत्रों में मानो मस्तिष्क से वही श्वासों की गति उसे देती रहती थी और देखो, श्रोत्रों में उस श्वास की गति का वर्णन करती रहती थी। हे बालक! यह जो प्राण गति कर रहा है यह निःस्वार्थ है, इसमें कोई स्वार्थ नहीं है। हे बालक! यह प्राण ही इस संसार में निःस्वार्थ होकर गति कर रहा है और प्रत्येक इन्द्रियों में स्वार्थ विद्यमान है। हे बालक! हे आत्मा! तू महान् है। यदि तूने मेरे गर्भस्थल में प्रवेश किया है, मानो देखो, तेरा ये कर्त्तव्य है जो मैं उच्चारण कर रही हूँ। ये विचार बनाकर उसको देती रहती है कि हे बालक! यह संसार तो एक संशय आश्वान कहलाया जाता है।

बेटा! देखो, वह बालक, जब माता के उन भावों को श्रवण करता रहता, वह मग्न होता रहता। माता के आँगन में बालक आनन्दित हो रहा है, मग्न हो रहा है, मानो औषधिपान कर रहा है। माता की लोरियों का पान कर रहा है, माता को आनन्दित कर रहा है, माता के मानो देखो, भव्य विचारों को, अपने अन्तःकरण में प्रवेश कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब वह बालक कुछ प्रबल हो गया। प्रबल हो होने के पश्चात् वही बालक कहता है, हे माता! तू मेरी भव्य माता है, मानो तूने मुझे पवित्र बनाया है। माता! तुझे पवित्र बनाऊंगा। मेरे प्यारे! माता को बालक कैसे पवित्र बनाता है? जब माता का पुत्र बालक, जब आचरणों से पवित्र बन जाता है, आचरणों में वह तपस्वी बन करके ब्रह्मचर्य व्रत को अपना करके प्रत्येक श्वास की गति को प्राणायाम में पिरो देता है, ब्रह्म में मन को पिरो देता है, बेटा! देखो, माता का गर्भाशय पवित्र हो जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ, विचार देता हुआ, आज मैं बेटा! दूरी चला गया हूँ। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वही पारा मुनि कितने पवित्र थे, मानो वह विज्ञान में भी अग्रणी थे। मेरे प्यारे! वे पांचों प्रकृति की गतियों को, ब्रह्माण्ड की गतियों को बेटा! भली-भांति जानते थे। मेरे प्यारे! क्योंकि-माता ने उसे अन्तःकरण में अपने श्वासों को, अपने विचारों के परमाणु बेटा! श्वासों के द्वारा उनके मस्तिष्क में ओत-प्रोत करा दिए। मस्तिष्क मुनिवरों! देखो, ज्ञान की, विज्ञान की आध्यात्मिकवाद बेटा! की कुंजी माना गया है। उन्हें वह माता प्रदान करती रहती थी। माता ने ब्रह्मा सम्भवे देवाः मेरे पुत्रों! देखो, पारा मुनि तपस्या करते थे, दर्शनों में परिणत हो गए। मेरे प्यारे! ममता नहीं थी, ममतव था मानो देखो, ममता नहीं था। मोह नहीं था। वह तपस्वी भयंकर वन में तपस्या में परिणत हो गए। तपस्या करते हुए, तपस्या का जीवन ही संसार में महान् है। बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था, तपस्या का क्षेत्र क्या है? तपस्या किसे कहते हैं? तपस्या का अभिप्रायः यह है कि प्रत्येक मानव की इन्द्रियां, उन इन्द्रियों के विषय को व्यापक रूप से जानना और जान करके, उसको आकुञ्चन हृदय में प्रवेश कर देना। मेरे प्यारे! देखो, उस विज्ञान को, आभा में परिणत करने का नाम इन्द्रियों के ऊपर, इन्द्रियों के ज्ञान और विज्ञान को जान करके मेरे प्यारे! एक प्राण स्वरूप में परिणत हो जाना, गम्भीर मुद्रित हो जाना, मेरे प्यारे! देखो, उसका नाम तपस्या कहलाती है। तपस्या का अभिप्रायः मैंने पुरातन काल में भी कई काल में वर्णन करते हुए कहा है।

ब्रह्माण्ड में प्रभु द्वारा गतियां

आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह है, आज मैं वही जाना चाहता हूँ जहाँ से बेटा! हमने इन वाक्यों का विचार प्रारम्भ किया था। मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण जी महाराज, मानो देखो, महाराजा संदीपन मुनि महाराज के द्वारा यह अध्ययन करते थे। आचार्य से यह प्रश्न किया उन्होंने महाराज! यह

पंचमहा जो क्रियाएं है, पंचमहा जो जगत् में आभा दृष्टिपात हो रही है जिनसे यह जगत् क्रियाशील सा दृष्टिपात आ रहा है इनका आत्मा से क्या सम्बन्ध रहता है? मैं आत्मा के सम्बन्ध को मैं भली-भांति जानना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह कहा कि मैं आत्मा के सम्बन्ध को जानता चाहता हूँ तो महात्मा संदीपन ऋषि ने कहा, हे कृष्ण! मानो देखो, यह पंचाम् ब्रह्मे है, प्रकृति से जब चेतना का मिलान होता है तो मानो ये पंच महा यह गतियाँ इसमें से सदैव उत्पन्न हो जाती हैं। और यदि चेतना का इसमें स्रोत नहीं होगा तो मानो देखो, परमाणु में गति का संचार नहीं होगा। इसीलिए वह जो गति है, परमाणुवाद में जो गति आकुश्चन में है, जो गति प्रसारण में है, जो गति गतियों में है, जो गति ध्रुवा और ऊर्ध्वा में है, इस गति को देने वाला बाह्य जगत् में वह चैतन्य देव है और आन्तरिक मानव के शरीर में यह गति देने वाली यह आत्मा है। तो आत्मा से इसका विशेष सम्बन्ध रहता है। इसीलिए वेद के ऋषियों ने कहा है कि यह आत्मा को जानने वाला ही मेरे प्यारे! इस ब्रह्माण्ड की प्रतिक्रिया को जान जाता हैं मेरे पुत्रों! देखो, आत्मा को जानने वाला वैज्ञानिक बन जाता है। आत्मा को जानना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है, आत्मा को कैसे जाना जायेगा? बेटा! ये प्रतिक्रियाएं मैंने तुम्हें भिन्न-भिन्न रूपों में परिणत की हैं।

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। मैं कोई व्याख्यान देने नहीं आया हूँ केवल विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव इसके ऊपर अनुसन्धान करने वाला हो। अनुसंधानित रहना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कहा रहा है? हमारा ये अनुष्ठान् जगत् क्या कह रहा है? हम गम्भीर मुद्रा में जाना चाहते हैं, गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करने वाला मानव ही इस संसार-सागर से पार होता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं कहाँ चला गया हूँ। इसी पांचों प्रकार की, इसी ब्रह्माण्ड की प्रतिक्रियाओं को लेकर के मेरे प्यारे! वैज्ञानिक अपने क्षेत्र में चला जाता है। वैज्ञानिक अपनी आभा में चला जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! एक समय सुधन्वाकेतु नामक एक ब्रह्मचारी था। सुधेनकेतु ब्रह्मचारी ने मेरे पुत्रों! महर्षि पारा मुनि के यहाँ तपस्या करते थे। तपस्या करते, वेदों का अध्ययन करते हुए वेद में एक मन्त्र आया और मन्त्र यह कह रहा था समाकृतं ब्रह्मे आस्वां दिव्यं ब्रह्मे अस्तः। मेरे प्यारे! देखो, इसी वेदमन्त्र को लेकर के उन्होंने पांचों गतियों पर अनुसन्धान किया। इसमें से उन्होंने नाना प्रकार की चित्रावली रूपक यन्त्रों को जानने का प्रयास किया। उनको जानते हुए मुनिवरों! देखो, उनकी यन्त्रवेला में प्रवेश करते हुए अपने में मुनिवरों! देखो, महानता को प्राप्त हो गए।

विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! आज का हमारा, आज मैं कोई विशेष विवेचना में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार केवल यही यज्ञं भवा सम्भवे देवा अन्तरिक्षां दिव्या गतप्रह्वे असुता मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार का याग परम्परागतों से बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में मानो देखो, होता रहा है। माता के मस्तिष्कों में, क्रियात्मकता में होता रहा है। मुझे स्मरण है महाराजा संदीपन ऋषि आश्रम में बेटा! प्रातःकालीन मानो देखो, योगा-याग होता था। योगा-याग किसे कहते हैं? बेटा! याग अमृते मानो देखो, दो वस्तुओं के मिलान का नाम याग माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, मनस्ततव, प्राणस्ततव, इन्द्रियतव सम्भवः। मानो देखो, सर्वत्र इन्द्रियों के मिलान का नाम, ध्यानावस्था का नाम बेटा! योग है। मानो देखो, योग से परिणत होते, मानो देवयाग में परिणत हो जाना देवयाग उसे कहते है जहाँ देवताओं का पूजन होता है। देवता कौन हैं? मैंने कई काल में बेटा! मैंने इसकी विवेचना की हैं। देवता वह कहलाता है जो देता है, देवता वह कहलाता है जो महान् है। देवता वह कहलाता है जो सौम्य है। देवता वह कहलाता है जो मुनिवरों! देखो, देवत्व की आभा में सदैव मुनिवरों! महानता का प्रसारण होता रहता है। तो मुनिवरों! यहाँ परमात्मा का नाम भी देवता है और पंचमहाभूतों का नाम भी देवता है। देखो, यहाँ पाण्डियतव अप्रतं ब्रहे अस्मुतहि मानो वह भी देवता है।

ऋषि याग

मुनिवरों! देखो, देवत्व को धारण करने वाला उनको भोज्य देना मानो देखो, वायुमण्डल में सूक्ष्म परमाणुओं का प्रसारण कर लेना, घृत के द्वारा, साकल्य के द्वारा वह देवपूजा के रूप में कहलाता हैं हे यज्ञमान! जब तू अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जब तू देव की पूजा करता है, देवताओं का पूजन करता है तो जानो तेरे आन्तरिक जो देवता हैं। तेरे शरीर में जो मानो देवत्व कार्य कर रहें हैं, वह मानो तेरे शरीर को महान् बना करके तुझे वही देवता की श्रेणी में प्रदान कर सकते हैं। मेरे प्यारे! वही तो देवता है। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! यज्ञमानं ब्रह्मे लोकाः। वह प्रातःकालीन, उनके यहाँ देवपूजा होना, देवपूजा के पश्चात् देखो, ऋषि याग होना, ऋषि याग किसे कहते हैं? ऋषि-मुनियों के जीवन चरित्र को अध्ययन करना और ऋषि-मुनियों की वाणी को और मन्थन किया हुआ जो जगत् है उनकी जो लेखनियाँ हैं मानो देखो, उसको अपने में धारण करता हुए बाह्य जगत् में प्रसारण करना वह ऋषि याग कहलाता है। इसके पश्चात् ऋषि याग के पश्चात् मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा को उसमें पिरो देते हैं। वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा है। मेरे पुत्रो! देखो, यहाँ प्रत्येक मानव को साधक बनना है। चाहे वह याग के द्वारा हो, चाहे वह देवयाग के द्वारा हो, चाहे ब्रह्मयाग के द्वारा, चाहे ऋषि याग के द्वारा। प्रत्येक मानव को बेटा! अपने-अपने कर्तव्यवाद में परिणत होना हैं ये हमारे विद्यालयों की बेटा! परम्परागतों से एक प्रणाली मानी जाती है। यही परम्परा है, इस परम्परा को मानो अपने हृदय में धारण करता हुआ इस संसार-सागर से पार हो जायेगा। इसके पश्चात् जब ये तीनों क्रिया कलाप हो जाना, उसके पश्चात् मेरे प्यारे! वहाँ विज्ञान की क्रियात्मक शिक्षा देना महाराजा संदीपन ऋषि के आश्रम में जहाँ मुनिवरों! देखो, इस प्रकार की यज्ञशालाएं, विचार-शालाएं जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की देव पूजाओं के सम्बन्ध में चिन्तन और मनन होता रहा वहाँ मेरे पुत्रो! देखो, सम्भवे प्रह्वा सतप प्रह्वे असुतो वहीं उसी स्थलियों पर विज्ञान के परमाणुओं को जानना यह जो प्रकृति की मैंने पांच गतियों का वर्णन किया हैं मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम मानो प्रसारण आता है, क्रिया आती है, प्रसारण क्रिया की प्रतिभा को जान करके, मेरे प्यारे! उसके पश्चात् ध्रुवा और ऊर्ध्वा में और मुनिवरों! देखो, आकुञ्चन में लग जाना यह इन ब्रह्मचारियों के यहाँ शिक्षार्थियों का विशेषतव था, शिक्षा की प्रणाली एक महान् बनती है। महान् उस काल में बनती है जब मानव अपने जीवन को क्रियात्मक, बाह्य जगत् को क्रियात्मक दृष्टिपात करता हुआ और आन्तरिक जगत् में प्रवेश कराता हुआ अपने हृदय अगम्य ज्योति को दृष्टिपात कर लेता है। मेरे प्यारे! अपनी अगम्य ज्योति को प्राप्त करने वाला है।

मानव ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। भगवान कृष्ण की भांति वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। मेरे पुत्रो! मुझे तो परमपिता परमात्मा की अनुपम कृपा से भगवान कृष्ण के जीवन को अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था कि वह सदैव अपने जीवन को क्रियात्मक बनाते रहते थे क्योंकि उनका विज्ञान सदैव इनका योग भी महान् था, उनका अनुष्ठान भी महान् था। उनका आयु भी विचित्र था। मैंने तुम्हें पुरातन काल में कहा था भगवान कृष्ण का जब भगवान कृष्ण मृत्यु को प्राप्त हुए ३६२ वर्ष की आयु थी उनकी। तो इतनी आयु में सर्वत्र प्रतिक्रियाएं की।

उनके जीवन के काल में कितना अध्ययन रहा है। यह मैं चर्चाएँ कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् हमारा बेटा! यह समाप्त होने जा रहा है आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने में महानता की ज्योति को जानते हुए अपने में हम सीमित न रह जाएं। हमारा जीवन व्यापकवाद में रहना चाहिए। आज मैंने बेटा! एक विषय पर तुम्हें सतोयुग के ऋषि की भी चर्चा की। त्रेता के काल के कुछ राष्ट्रीय विचारों की चर्चाएँ भी की। भगवान कृष्ण महाराज की चर्चा करते हुए आज का विचार हमारा समाप्त होने जा रहा है। विचार-विनिमय क्या था? ये जो जटापाठ, धनपाठ, मालापाठ, उदात्त, अनुदात्त यह जो नाना की ध्वनियाँ हैं यह मुनिवरों! पांचों इन्द्रियाँ हैं। पांच कर्म इन्द्रियाँ हैं इनके समन्वय से इस मस्तिष्क में नाना प्रकार

प्रकार की स्वर ध्वनियाँ होती रहती हैं। बेटा! उन स्वर ध्वनियों को श्रवण करने वाला ध्वनि को अपने में पान करने वाले को विशेष योगी कहते हैं। ये चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। स्थान लाक्षाग्रह बरनावा

४ त्रि-विद्या का योग द्वारा साक्षात

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव की महिमा अथवा उसकी ध्वनि का वर्णन होता रहता है। क्योंकि जितना भी यह संसार है, चाहे वह जड़वत में हो, चाहे वह चैतन्यवत में हो, परन्तु उसमें जो एक ध्वनि हो रही है और उस ध्वनि को, प्रत्येक प्राणी अपने में पान कर रहा है, उस ध्वनि का जो स्रोत है, वह एक अनुपम महान देव की ही आभा कहलाती हैं इसीलिए हमारे वैदिक साहित्य वालों ने, उस ध्वनि के ऊपर बहुत चिन्तन और मनन किया है। क्योंकि मानव का यह शरीर है, रचना हो रही है रचनाकार रचना कर रहा है, परन्तु जब वह वस्तु जब रचना में पूर्ण रूपेण आ जाती है तो उस रचना के एक महान पिण्ड में नाना प्रकार की ध्वनियों और गतियों का प्रसारण होता रहता है। मेरे प्यारे! मानव वाणी नहीं उच्चारण कर रहा है, मानव नेत्रों से अपनी भाषा का वर्णन कर देता है, तो वह एक अमोध ध्वनि कहलाती हैं बेटा! मानव अपने शब्दों से, अपनी भिन्न-भिन्न रूपी असतो से मौन रह करके भी अपनी अन्तरात्मा की वार्त्ता को प्रगट कर लेता है। मेरे प्यारे! मानव एकान्त-स्थली पर विद्यमान है। वह मानव मुद्रित हो रहा है और अपनी मुद्रा में मुद्रित होता हुआ, वह अपने हृदय की मानो देखो, सुगन्धि को वह अपने हृदय की महान सुगन्धि को किसी महाउसके आश्रम में बेटा! सुगन्धित हो रही है। वह नहीं कह रहा है कि मैं सुगन्धि कर रहा हूँ। परन्तु उसका जो श्वास है वह जो मानो एक परमाणु अपने में ध्वनि कर रहा है और वह ध्वनि कैसी है? क्या ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई बेटा! वह ध्वनि है। वह जो ध्वनि का प्रसारण कर रहा है, मानो वह जो ध्वनियाँ आ रही हैं, उसको प्रत्येक मानव, उस ध्वनि के लिए ललायित रहता है और यह कहता है साधारण प्राणी कि यहाँ तो किसी महापुरुष की ध्वनि है। मानो देखो, उसके विचारों की, उसकी तपस्या की यह सुगन्धि है।

पवित्रता की ध्वनियां

तो मेरे प्यारे! जब प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर हम अध्ययन करते हैं और अध्ययन में ये चिन्तन करते हैं कि हमें सुगन्धि देनी है, हमें ध्वनि देनी हैं, वह ध्वनि आ रही है, उसका प्रसारण कर रहा है। उसी ध्वनि को लेखनीबद्ध हो करके अपने में लेखक बन रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मानव, ब्रह्मचारी, अपने माता-पिता को अपना परिचय पत्र देता हुआ, एक लेखनी प्रगट कर रहा है। वह अपने हृदय की एक अनुपम जो ध्वनि है उस ध्वनि को मुनिवरों! वह पत्रिका में प्रसारण कर रहा है। उस हृदय की वाणी को, उस हृदय की ध्वनि को, उस हृदय की अमंगलं असुतो मौन रहने वाली आभा को जब परिचय किसी को दिया जाता है, वह ध्वनि को परिचय अपने में धारण करता हुआ प्रसन्न हो रहा है। कैसा जगत है? बालक कह रहा है विद्यालय में, अपने आचार्य के चरणों में ओत-प्रोत हो करके माता को एक लेखनीबद्ध कर रहा है। मानो देखो, जब गृह में होता है तो ब्रह्मचारी अपने आचार्य, पूज्यपाद को लेखनीबद्ध कर रहा है। अपने हृदय के उद्गार कह रहा है। अपने हृदय की ध्वनि रूप बाह्य जगत बेटा! में लेखनीबद्ध हो रही है, मुनिवरों! देखो, वह कैसी लेखनी है? वह उसके हृदय की पवित्र ध्वनि है। जैसे वेदमन्त्र मानो देखो, अपने में ध्वनित होता रहता है और वह जो वेदमन्त्र ध्वनित होता है उस ध्वनि को जो श्रवण करता है वह पवित्रतम हो जाता है, वह पवित्र आभा में परिणत हो जाता हैं जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता हैं विद्यमान हो करके अपनी धर्म देवी से अपने उद्गार प्रगट करता है हे देवी! यागः ब्रह्मे वस्तुतम् देवाः हे देवी! हम याग में परिणत होना चाहते हैं। हम यागमयी अपने को बनाना चाहते हैं। हम अपने मानो देखो, याज्ञिक वेदी को महान बना करके द्यौ-लोक में जाना चाहते हैं। मानो वह यज्ञमान अपनी देवी से कह रहा है। देवी कहती है सम्भवः देवः ब्रह्मः वाचम् नमः प्रवेः हे प्रभु! आप तो सूर्य के तुल्य हैं। मानो देखो, चन्द्रमा सम्भवे मेरी तो सदैव ये कामना

रहती है कि योगां ब्रह्मे वाचन्नमा प्राणं रूद्रा वह जो प्राण हैं जो ब्रह्म के आस्वात कहलाए जाते हैं। वह अन्तरात्मा की छाया कहलाती है। वह जो प्राण हैं उन प्राणों को एकाग्र करके प्रभु! आप योगी बनो। मैं योगेश्वर बन करके हम पवित्र याग करेंगे। साकल्य बाह्य जगत का याग होगा। आन्तरिक जगत का हम अपनी अन्तरात्मा को जानने का याग करेंगे। यहीं तक नहीं, वह कहते हैं कि अन्तरिक्ष में जितना विज्ञान है, अन्तरिक्ष में जितना विज्ञान है हम उसको याग रूप बनाना चाहते हैं। मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष में जो नाना तरंगें गति कर रही हैं, वायु मण्डल में क्या? अन्तरिक्ष में गतियाँ हो रही हैं, वायु गति दे रहा है, मेरे प्यारे! वह जो परमाणु हैं एक-एक परमाणु में मुनिवरों! देखो, सर्वत्र सृष्टि का जो चित्र हो रहा है वह चित्रण वैज्ञानिक यन्त्रों में हमें दृष्टिपात आएगा। मेरे प्यारे! देखो, पति-पत्नी इस प्रकार के याग में जब लग जाते हैं तो उनके जीवन में एक सफलता आने लगती है। पवित्रता की ध्वनियाँ आने लगती हैं।

तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! यही ध्वनि मुझे स्मरण है, महाराज शिव और देखो, पार्वती, जब गान गाते थे, गान गाकर के नटवर एक उनका नृत्य होता था, जब नटवर नृत्य होने लगा तो मुनिवरों! देखो, उस नृत्य में मानो ध्वनियों में वह एक-एक जो नृत्य था उनका मेरे पुत्रों! देखो, नटवर जो नृत्य था उस एक-एक नृत्य में एक आभा परिणत हो रही है। उस मानो देखो, ध्वनि ध्वनित हो रही है, मानो उस एक ध्वनियों का प्रसारण हो रहा हैं एक कामवासना वाला प्राणी है वह अपनी वाणी से, नेत्रों से मेरे प्यारे! देखो, वह विष को बिखेर रहा है। एक मानो योगेश्वर बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में इस वाणी की ध्वनि को पिरो करके मुनिवरों! देखो, वह सुगन्धि प्रसारण कर रहा है। तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! मैं कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ आज कोई व्याख्यता नहीं हूँ न व्याख्यान देने आया हूँ केवल तुम्हें यह परिचय देने आया हूँ कि मुनिवरों! देखो, हमें अपने जीवन को महान बनाना है।

भगवान कृष्ण का यौगिक संकल्प

भगवान कृष्ण का जीवन मुझे स्मरण आता रहता है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, भगवान कृष्ण का जीवन ऐसा महान्, ऐसा पवित्र, मानो जब वह जो पंचीकरण, अपनी इन्द्रियां को समेट करके, वह जो हृदयस्थली में ले जाते थे तो मानो देखो, उनकी योग की प्रवृत्तियाँ बिखर जाती थीं और योग की प्रवृत्तियाँ जब बिखर करके मुनिवरों! देखो, जब बाह्य जगत से सुगन्धि को लाती थीं, आन्तरिक जगत से वह सुगन्धि प्रसारण होती थी। तो मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव के समीप विद्यमान हो करके वह अनुसन्धान करते रहते थे। अनुसन्घान मेरे प्यारे! प्रत्येक इन्द्रिय का अनुसन्धान, प्रत्येक प्राणों का अनुसन्धान, क्या ये प्राण कौन थे यह किस-किस प्रकार का प्राण हैं? उसको जानना है तो मेरे पुत्रों! देखो, वह इस प्रकार वह अपने में मुद्रित होते हुए, अपनी महान आभा को सुगन्धि में लाना ही उनका कर्त्तव्य कहलाता था। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, उनके चरणों में पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान रहते थे। एक समय बेटा! देखो, उनके एक मित्र, विद्यालय में अध्ययनं ब्रह्मेः मित्र बने, मानो जिनको सुदामा कहते थे। सुवञ्जना गच्छतं देवा वह मानो दोनों विचारक बन करके बेटा! वनों में पीपल के वृक्ष के नीचे अनुसन्धान कर रहे थे।

भगवान कृष्ण और सुदामा की आध्यात्मिक चर्चा

एक समय उन्होंने महात्मा ने मंगलं ब्रहे गुरु ने यह कहा कि अध्ययन करो। मानो तुम अध्ययन करो उन्होंने तृतीय कहा कि तुम अध्ययन करो तो मेरे प्यारे! दोनों अध्ययन के लिए एक वृक्ष के नीचे विद्यमान हो गये, अध्ययन करने लगे। तो उन्होंने देखो, महात्मा की वार्त्ता को पान करते हुए सुदामा ने कहा, हे कृष्ण! आचार्य ने हमें तीन समय कहा है कि तुम अध्ययन करो, अध्ययन करो, अध्ययन करो, ऐसा क्यों कहा है? कृष्ण जी बोले कि हे सुदामा! तुम पूज्यपाद गुरुदेव की आन्तरिक ध्वनि को नहीं जानते हो, यो तो यह तो उनकी आन्तरिक ध्वनि है

आन्तरिक ध्वनि में ही तो वह मुद्रित हो करके मुद्रिका बनती है। मानो देखो, पूज्यपाद गुरु ने कहा है क्या तुम अध्ययन करो, अध्ययन का अभिप्रायः यह है क्या वेदमन्त्र का अध्ययन करो। तुम ज्ञान का अध्ययन करो परन्तु जब द्वितीय कहा कि अध्ययन करो तो वह कहते हैं कि वेद की ध्वनि को तुम प्रसारण करो तुम उसके सुयोग्य हो जाओ, जब तक उसके योग्य हो जाओ तो उसका प्रसारण करो मानो देखो, तृतीय कहते हैं तुम अध्ययन करो तो वह कहते हैं कि अध्ययन का अभिप्रायः यह है कि अपना स्वतः अध्ययन कर लो। अपना अध्ययन करना क्या है? मानो देखो, जो हमारे मानवीय शरीर से, प्रत्येक इन्द्रिय से विज्ञान की धारा, नित्यप्रति मानो देखो, जो तरंगें ओत प्रोत होती रहती हैं। बाह्य जगत में वह तरंगें जाती हैं और आन्तरिक जगत में वह तरंगें आती हैं उनसे हम भौतिक विज्ञान में प्रवेश करते हैं। इन्हीं विचारों को अध्ययन, स्वतः करने से, हम अपनी अन्तरात्मा को जानते हैं हम अन्तरात्मा को जान करके प्रभु से मिलान करते हैं। तो मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है कि तुम स्वतः अपना अध्ययन करो। हमें स्वतः अपना अध्ययन करना है।

स्वतः अध्ययन कैसे किया जाता है? यह एक विचार का विषय रहता है। एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके अध्ययन की मानो नाना प्रकार की आभाएं हैं। जब अध्ययन करता हुआ मानव चरम सीमा पर पहुंच जाता है। तो बेटा! अध्ययन की परम्परा भी समाप्त हो जाती है। विचार देता हुआ कृष्ण कहता है, हे सुदामा! तुम पूज्यपाद गुरुदेव की भाषा को नहीं जाने। पूज्यपाद ने कहा था, कि हे ब्रह्मचारियों! तुम अध्ययन करो। हे ब्रह्मचारियों! तुम अध्ययन करो। परन्तु अध्ययन का अभिप्रायः केवल अपना अध्ययन करना है। कहाँ तक पंहुचना है अपने को मानो इसके ऊपर विचार-विनिमय आज हम करना चाहते हैं पुत्रों! भगवान कृष्ण ने कहा था कि हे सुदामा! हमें वहाँ तक जाना है जहाँ हम संसार को विजय कर सकें। अपने को विजय करना ही संसार को विजय करना हैं यह संसार विजय नहीं हुआ करता हैं परन्तु जब हम अपने को अध्ययन में ला देते हैं, अपना स्वतः अध्ययन कर लेते हैं, अपने में हम मुद्रित हो जाते हैं, अपने में हम महान और मौन हो जाते हैं, अपने में हम वेद के पठन-पाठन के प्रकाश में रमण करते हैं तो उस समय मानव का अपने को विजय करना ही संसार को विजय करना है। तो मेरे प्यारे! भगवान कृष्ण ने यह सब उच्चारण किया और यह कहा कि हे सुदामा! हमें, तुम्हें यह कहा कि तुम अध्ययन करो, तो तुम्हें हमें मानो देखो, दोनों को मुद्रित हो जाना है और मुद्रित कैसे हो जाना है? कि मानो देखो, यह संसार पांचों हो वस्तुओं पर विद्यमान रहता है।

अंगद की योग मुद्रा

तुम्हें यह प्रतीत होगा, क्या तुमने साहित्य में, पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया था, एक समय में क्या हमें अध्ययन करते हुए। जिस समय त्रेता के काल में रावण और राम का संग्राम होने का विचार बना, परन्तु राम और रावण का संग्राम होने की जब वार्त्ता आई तो राम ने बालि पुत्र को यह कहा कि तुम रावण के समीप चले जाओ, वहाँ जा करके तुम मानो यह उच्चारण करो। रावण से मुद्रित हो करके, कि तुम अपने में अपनित्व हो जाओ। तुम्हारा यह संग्राम प्रिय नहीं हैं तो मानो देखो, उस समय बालिपुत्र मेघनाथ ने जब देखो, वालि पुत्रों! भवा सम्भवे वाचनमं ब्रह्मे वाचं भविते अस्तो सम्भवा देवतं जब बालि पुत्र ने वहाँ से गमन किया तो भ्रमण करते हुए मानो देखो, वह लंका में, रावण के राज्य में पहुंचे। मानो लंका का कुछ भ्रमण किया और उन्होंने यह सूचना दी कि मैं राम का दूत बन करके आया हूँ। जब दूत बनने की वार्त्ता आई, तो मानो वह राज्यसभा में पहुंचे। रावण ने कहा, कहो, तुम कैसे आ पहुंचे? उन्होंने कहा, प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि आप रावण हैं, आप राजा हैं, आपका बहुत ऊँचा आपका जीवन रहा है और आपका राष्ट्र भी पवित्र रहा है परन्तु देखो, माता सीता को तुम ले करके आए, यह राष्ट्र को अपराध होता है। जिस राजा के राष्ट्र में मानो मेरी पुत्रियों का हनन किया जाता हो, वह काल रावण! प्रिय नहीं होता। तुम्हारे राष्ट्र में ये प्रियता नहीं है। तुम अपने महापिता के साहित्य को ले करके चलो। मानो तुम

अपने महापिता का साहित्य राष्ट्र को दो। तुम्हारे महात्मा कागभुषुण्ड जी, महर्षि लोमश इत्यादियों ने तुम्हारे यहाँ अश्वमेध याग कई समय कराए हैं। परन्तु एक समय महर्षि वक्रेतकेतु ऋषि ने तुम्हारे यहाँ यागों का चलन कराया। परन्तु देखो, अब तुम्हारे यहाँ देखो, यह याग नहीं कहता, यह तुम्हारी राष्ट्रीय पद्धति नहीं कहती, तुम माता सीता को मुझे अपना मानो सेवक बना करके माता सीता को मुझे अर्पित कर दो। और तुम्हारा दोनों का सम्बन्ध हो जायेगा। विच्छेद से मिलान हो जायेगा। परन्तु रावण ने कहा कि यह महाकृत्य है।

मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा कुछ स्मरण है, ऐसा कुछ मुझे प्रतीत हो रहा है क्या उस समय मुनिवरों! देखो, उन्होंने सम्भवा बालि पुत्र बोले कि तुम क्रोध में क्यों आते हो? यह मेरे पर क्रोध करने का तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मैं सेवक हूँ मानो देखो, एक मानो देखो, वनचर का, मैं राम का सेवक हूँ। वह वनों में रहते हैं, चाहे वह कहीं रहते हों, परन्तु मैं उनका सेवक हूँ, मैं न्याय की वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ। आप न्याय को न्याय स्वीकार नहीं कर सकते तो राजा की पद्धति भ्रष्ट हो जाती हैं मुनिवरों! देखो, जब बालिपुत्र ने यह कहा, मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि रावण क्रोधित हो गए। परन्तु देखो, उस समय वह यौगिक मुद्रा में प्रवेश कर गए। उन्होंने बेटा! देखो, प्राणों के ऊपर अध्ययन किया था। मेरे प्यारे! देखो, शरीर के सर्वत्र प्राण को वह अपने पग में मुनिवरों! देखो, उन्होंने स्थिर कर लिया और वह जो प्राण था एक ही पग में आ गया। और उन्होंने कहा, मेरे जो पग को दूरी कर सकता हो तो, मैं माता सीता को त्याग दूंगा और मानो देखो, राम को ले करके अयोध्या चला जाँऊगा। यह वाक् उन्होंने प्रगट किया। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि यह वही मुद्रा थी जो भगवान कृष्ण और सुदामा मानो देखो, गुरु आश्रम में बेटा! चर्चा कर रहे थे, वह मुद्रा क्या थी? मुनिवरों! देखो, प्राण, अपान, उदान और व्यान को मिलान करते हुए सर्वत्र प्राण की सत्ता को मेरे पुत्रों! देखो, उस मानप्रहे एक ही पग में ले आए। एक पग में लाने से उनके यहाँ कोई ऐसा मानो देखो, बलिष्ठ नहीं था, जो उनके बालिपुत्र के पग को दूरी कर सके। दूरी करने वाला कोई न रहा तो विचार हुआ कि अब क्या करें? मेरे प्यारे! देखो, जब सर्वत्र बलवान जितने जो बलिष्ठ थे, जितने देखो, मानो यन्त्रों-तन्त्रों के निर्माण करने वाले थे, वहाँ विराजमान होने वालो अक्षय थे, और नारायंतक थे, परन्तु अहिरावण भी थे, मेघनाद इत्यादि सर्वत्र विद्यमान थे। उन्होंने जब उनके पगों को अस्वान करने का प्रयत्न किया तो किसी से न हो सका। क्योंकि वह तो प्राण-शक्ति थी। आत्मा की, चित्त की प्रवृत्तियों को एकाग्र करके वह मुद्रित हो करके, प्राण को ला करके। अब देखो, जब अन्तिम में रावण को मद मोह आ गया। मद मोह आ जाने के पश्चात रावण ने जब उनके पग के लिए ग्रत किया, अपनी क्रिया की, तो उस समय उन्होंने अपने प्राण को, अपनी मुद्रा से अमुद्रित बना करके और प्राण को ज्यों का त्यों वही ला करके पग को दूरी कर लिया। उसने कहा, हे रावण! आप तो राजा हैं और ऐसे राजा हैं कि जिसके राष्ट्र में न सूर्य उदय होता है, न अस्त होता है। आप इस प्रकार के व्यापक राजा है परन्तु देखो, यह जो राजा ग्रती है आपकी यह जो हीनता है, यही तेरे राष्ट्र को नष्ट कर सकती है। मानो देखो, उन्होंने बाली पुत्र ने, जब यह कहा, अंगदो सम्भवेति मानो अंगद जी ने जब यह कहा कि सो भद्रे आपं ब्रीहि असुतो चरणं बन्धु मंगलं ब्रहे उन्होंने कहा यह चरणों को स्पर्श करना है तो तुम राम के चरणों को और माता सीता को ले करके, राम के चरणों को स्पर्श कर और माता सीता के चरणों को स्पर्श करके कि यह मेरे से चर्य पाप हो रहा हैं मानो जब उन्होंने यह कहा मुनिवरों! रावण मौन हो गए। रावण से कोई उत्तर नहीं बना।

शरीर द्वारा ब्रह्माण्ड की परिक्रमा

तो विचार-विनिमय क्या? भगवान कृष्ण ने कहा, हे सुदामा! हम और तुम दोनों विद्यमान हैं। आचार्य ने कहा है कि इस प्रकार का तुम दोनों अध्ययन करो। अध्ययन क्या? यह जो हमारे शरीर में प्राण, अपान जो गति कर रहा है, इन दोनों को रसना के द्वारा, आहर के द्वारा, व्यवहार के द्वारा मानो अपने ब्रह्मचर्यवत को धारण करके

उसको मुद्रित बना लेना चाहिए। हम मुद्रा में लाना चाहते हैं। हम स्वयं मुद्रित होना चाहते हैं। मुद्रा का अभिप्रायः क्या है? कि हमारा यह जो शरीर है यह ब्रह्माण्ड की कल्पना करता हैं यह शरीर हमारा सर्वत्र भू-मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। मानो देखो, लोक-लोकान्तरों की परिक्रमा कर रहा है। इसी में आभायित हो रहा है। प्रकृतिवाद को, जड़वत को शून्य आभा को यह अच्छी प्रकार जानता है। मेरे प्यारे! देखो, सुदामा ने कहा, हे कृष्ण! वार्त्ता तो बहुत प्रिय आपने प्रगट की है परन्तु यह हम जानना चाहते हैं कि मुद्रा का विज्ञान से क्या समन्वय रहता है? विज्ञान से इसका क्या सम्बन्ध है? भगवान कृष्ण ने कहा कि मानव जब ध्यानावस्थित होता है कि हमें यह वस्तु जाननी है। हम एक वस्तु पर अनुसन्धान करते हैं। अनुसन्धान क्या है कि हम यह चाहते हैं कि माता अपने प्यारे पुत्र को स्नेह कर रही है। जब माता स्नेह करती है उसका हृदय, उसके रक्त की जो तरंगे हैं वह माता के शरीर में हैं। माता के रक्त की तरंगें बाल्य के शरीर में हैं। दोनों का जब परस्पर मिलान होता है, दोनों की जब परस्पर स्नेह की प्रतिभा होती है, तो एक-दूसरे परमाणु में परमाणुओं के मोह का संचार उत्पन्न हो जाता है और वह जो संचार है वह मानो देखो, ममतव को धारण करा देता है। वही ममता की आभा में रमण करा देता है। परन्तु देखो, कृष्ण ने कहा, हे सुदामा! तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए।

अन्तरिक्ष में ध्वनियां

अब रहा यह विज्ञान की वार्त्ता। विज्ञान में एक मानव यह जानना चाहता है कि मुझे कोई वार्त्ता प्रगट कर रहा है। मेरे नामोकरण की वार्त्ता दे रहा है। उस वार्त्ता को मैं मुद्रित हो करके कहता हूँ। शान्त रहो, मुझे कोई भी वाणी से ध्वनियाँ कर रहा है, उस ध्वनि को स्वीकार करता हुआ कहता है कि यह ध्वनि जहाँ से आ रही है और जहाँ मैं हूँ वह बहुत दूरी है। दूरी का, जहाँ परस्पर मिलान हुआ है उस मिलान के ऊपर मुनिवरों! देखो, अनुसन्धान करता है। वह वैज्ञानिक जब, उस दूरी का अनुसन्धान करता है तो अनुसन्धान करता हुआ एक यन्त्र का निर्माण करता है, उन तरंगों को एकत्रित करता हैं उन परमाणुओं को एकत्रित करके उनको क्रियात्मक में ला करके मानो देखो, एक यन्त्र बना करके ध्वनियाँ आ रही हैं, ध्वनि मानो उस यन्त्र में प्रवेश कर रही है, हम उसे श्रवण कर रहे हैं। वह ध्वनि अन्तरिक्ष से आ रही है।

अथर्वा ऋषि की चर्चाएं

मेरे प्यारे! देखो, मुझे एक वार्त्ता स्मरण आ गई है, भगवान कृष्ण और सुदामा की चर्चा में एक वाक् आया। भगवान कृष्ण ने कहा कि हे सुदामा! एक समय मैं पूज्यपाद गुरुदेव के एक दिवस का तुम्हें स्मरण होगा, उस समय मैं अध्ययन कर रहा था। जब अध्ययन कर रहा था, तो मुझे मानो देखो, ब्रह्मा के पुत्र एक अथर्वा हुए हैं जो उनके ज्येष्ठ पुत्र कहलाते थे। जहाँ से यह ब्रह्मा वंशलज प्रारम्भ हुआ हैं, वह मानो ऋषियों का वंशलज प्रारम्भ हुआ। वह जो अथर्वा थे, उनको अथर्वा क्यों कहते थे? अथर्वा कहते हैं जो स्थिर रहने वाला हो अथर्व प्रवे वर्णां सम्य ब्रही सम्भवमि वर्चो दिवत्याम लोकः मानो देखो, अथर्वा का अभिप्रायः यह है अथर्वं ब्रहे कृणं ब्रह्मा वाचन्नं ब्रह्मे कृतं भवति असुतो देवा मानो देखो, वह जो स्थिर रहने वाला हो। स्थिर रह करके अपने हृदय की गति से ही मानो वह संसार की आभा को, संसार की इस दूरी को वह मापते रहते हैं और कैसे मापा जाता है? इसके ऊपर हम बहुत सूक्ष्म सा विचार करेंगे। वह कैसे मापा जाता है? मानो देखो, मापने वाला मापता रहता है। अब मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक वस्तु को मापा अथर्वा ने और वह एक समय मानो ऋषि-मुनियों के समाज में पहुंचे। ऋषि-मुनियों के समाज में पंहुचे, तो ऋषि-मुनियों ने कहा कि प्रभु! आप अपने अनुभव की कुछ चर्चा कीजिए। उन्होंने मुनिवरों! देखो, अपने अनुभव की चर्चा प्रारम्भ की। अपने अनुभव की चर्चा जब देने लगे तो उन्होंने अपने अनुभव की विवेचना करते हुए कहा सो ब्रहे वाचा कि मानो मैंने कुछ वेदों की ध्वनियों को श्रवण किया है, कुछ याग किया है और याग के पश्चात मानो अपने जीवन के रथ को ले करके मैं अन्तरिक्ष में पहुंचा हूँ। और जीवन में अन्तरिक्ष के

रथ को मानो एक समय मैं वेदमन्त्र में कहीं यह अध्ययन कर रहा था। वेद का पाठ यह कह रहा था, गत प्रह्वा वाचा मंगलं ब्रह्मे व्रता मानो मंगल का प्राणी अपनी ध्वनि कर रहा है। मंगल का प्राणी ध्वनि कर रहा है मंगल के प्राणी की जो ध्वनि है वह कृतियों में रमण कर रही है। मानो देखो, उसी समय मैं इस अनुसन्धान में लग गया। मैं अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वार पर पहुंचा। वहाँ मैंने इसके ऊपर अनुसन्धान किया। परन्तु देखो ब्रह्मवर्चोसि उस अथर्वा ने यह कहा ब्रह्मा के जेठे पुत्र ने मानो देखो, यह कहा कि मैंने एक यन्त्र का निर्माण किया था जो मानो देखो, ध्वनि जैसे लोकों से आती थी लोकों से आने वाली ध्वनि का पृथ्वी से उसका मिलान होता रहता था और मिलान हो करके उस ध्वनि को मैं श्रवण कर रहा था। उस ध्वनि को यन्त्रों में लाने का मैंने प्रयास किया। मैं उसी समय त्रीचकेतु नामक ऋषि के द्वार पर पहुंचा। त्रीटकेतु ऋषि महाराज इसके ऊपर पूर्व योगाभ्यास करके अनुसन्धान कर चुके थे। मानो मैं जब उनके द्वार पर पंहुचा मैंने जब उनसे प्रश्न किया प्रभु! आपने यह सब कैसे जाना? तो उन्होंने कहा कि हमारी जो अनुष्ठान मुद्राएं हैं जिस मुद्रा को योगीजन करते हैं वह मुद्रा है मानो देखो, इस मंगल में पार्थिव तत्त्व प्रधान है। मानो पृथ्वी को तुम देखो, वायु गति से दोनों का मिलान कर लो अरूवान भवे कृता और मिलान करके उसको यन्त्रों में अपने अनुभव में लाओ, अनुभव की वार्त्ता को यंत्रित करो। और यंत्रित करके मानो ध्याना यह जो मानव का हृदय है इस हृदय का समन्वय क्योंकि परमात्मा के हृदय होता हैं यह जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है यह परमात्मा का हृदय है। मानव का हृदय है दोनों का जब समन्वय होता है तो मानो देखो, इस हृदय में संसार की भाषाएं विद्यमान हैं। संसार की वार्त्ताएं विद्यमान हैं। मानो देखो, पंचीकरण वाला पंचम इसमें विद्यमान रहता है। जिस तत्त्व के लोक के प्राणियों की तुम वार्त्ता प्रगट करना चाहते हो ध्यानावस्थित हो करके उसी लोक से तुम्हारा तारतम्य हो जायेगा। यह वाक् ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने मानो सतोयुग के काल में प्रगट किये।

पृथ्वी के स्वभाविक गुण

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा कि सम्भवा देवा भगवान कृष्ण ने कहा हे सुदामा! तुमने यह जान लिया यहां नहीं। मैंने इतना कुछ अनुसन्धान मानो अध्ययन करने वाली, कुछ पोथियों से किया हैं उसी अध्ययन को मैं क्रियात्मक रूप में लाना चाहता हूँ। मानो देखो, जैसे ध्रुवा है ऊर्ध्वा है, मानो देखो, जैसे आकुञ्चन, प्रसारण और गति है ये प्रकृति की पांचों आभाओं का जन्म होता रहता है। किसी भी काल में प्रभु ने जब यह संसार रचा, इस पृथ्वी में मानो जब किसी चेतना का समन्वय हुआ, चेतना से मिलान होते ही यह पांचों प्रकृति के स्वभाव जागरूक हो गए और पांचों स्वभाव कौन से हैं? वह स्वाभाविक गुण हैं प्रकृति के मानो प्रसारण हैं, गति है, ऊर्ध्वा है, ध्रुवा है और आकुञ्चन है। ये पांच इसके मानो देखो, स्वाभाविक गुण हैं यह गुणों का गुणावादन होने लगा। इन गुणों को मुनिवरों! देखो, यही गुण देखो, एक बिन्दु के रूप में, माता के गर्भ में प्रवेश हो गए। माता के गर्भ से पुत्र का जन्म हुआ आकुञ्चन रूपों से, मानो देखो, वही पांचो गति उस मानव के शरीर में प्राकृतिक मानो देखो, विद्यमान हो गई। एक बिन्दु की आभा में बेटा! मैं कहाँ तक, इन वाक्यों को प्रगट करता रहूँगा, यह विषय पुत्र बहुत गहन विषय है। जब मैं किसी काल में बेटा! अध्यापन का कार्य करता रहता था तो ब्रह्मचारियों को यह अध्ययन कराता रहता था, ब्रह्मचारियों के अध्ययन की शैली मानो इतनी विचित्र रही है इतनी आभा में रही है क्या उसको मुनिवरों! देखो, निर्णय करना यह मानो देखो, असुत कहलाया जाता है।

विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्ण ने सुदामा से यह कहा हे सुदामा! पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि हे ब्रह्मचारिओ! तुम अध्ययन करो, तुम अध्ययन करो, तुम अध्ययन करो, क्योंकि तीन समय अध्ययन का अभिप्रायः तीन वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि तीन ही वाक्यों में मानो यह जगत समाहित हो रहा है। जैसे ओ३म् की तीन मात्राएं हैं इनमें यह जगत समाहित है, मानो देखो, पुनरूक्ति भी तीन ही प्रकार की रहती

है, वेद भी तीन ही कहलाए जाते हैं। मानो उनमें तीन ही प्रकार का विषय कहलाता है। संसार का जितना भी ज्ञान है विज्ञान है उसमें तीन प्रकार की ही वासनाएं हैं। मेरे प्यारे! ज्ञान, कर्म, और उपासना ये तीन प्रकार की विद्या वेदों में विद्यमान है। आगे बेटा! इसका वृक्ष बनता रहता है। मानो देखो, अंकुर रूपों में ये तीन ही विद्यमान हैं। प्रकृति के पांच गुण हैं परन्तु देखो, उसमें तीन प्रकार के परमाणु हैं। सबसे प्रथम पार्थिव परमाणु, जल परमाणु, अग्नि परमाणु इन्हीं परमाणुओं से मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष और वायु इन परमाणुओं को गति देती है, अन्तरिक्ष में परमाणु वास करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ये आभामयी जगत कहलाता है। ये त्रैतवाद है मानो देखो, यह संसार तुम्हें त्रैतवाद की आभा में परिणत हो रहा है। जब हम त्रैतवाद की वार्त्ता को ले करके चलते हैं तो हमें यह आश्चर्य होता है यह प्रभु! का कैसा अनुपम जगत है। बेटा! वेद का ज्ञान भी तीन ही प्रकार का है। मानव के शरीर में गुण भी तीन ही हैं। मानो देखो, ये तीन ही प्रकार की यज्ञमान यज्ञ में आहुति दे रहा हैं मेरे प्यारे! तीन ही प्रवृत्ति बन रही हैं। एक अंगला सम्भवो देवतां मेरे प्यारे! प्रभु का यह कैसा अमूल्य जगत है, पुत्रों! जिसके ऊपर हमारे ऋषि-मुनि एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं। विशेषकर वह मुद्रित होते रहते हैं। बेटा! ऋषि-मुनियों की सबसे प्रथम मुद्रा में जाना, मुद्रित होना, पंच महाभूतों को जानना, उनको यौगिकता में लाना मानो देखो, उसको बाह्य जगत के हृदय में प्रवेश करते हुए हृदय में ही मानो देखो, संसार को दृष्टिपात करना, यही उनकी विशेष यौगिकता कहलायी जाती है।

उपाधि काल

तो मेरे पुत्रो! आज मैं कोई विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। न मैं कोई व्याख्याता हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता की आराधना करते हुए, महिमा को जानते हुए, मेरे पुत्रों! मैंने कई काल में वर्णन किया। हमारे यहाँ भगवान कृष्ण की चर्चाएँ, जहाँ आती हैं, वहाँ शिव विज्ञान हमारे यहां बड़ा विशेष रहा है। हमारे यहाँ समय-समय पर नाना शिव होते चले आए हैं। क्योंकि हमने बहुत पुरातन काल तुम्हें यह निर्णय दिया कि यह सब उपाधि काल कहलाते हैं। ये सब उपाधियाँ कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव के यहाँ नित्य-प्रति बेटा! विज्ञान का नृत्य होता रहता था। भगवान कृष्ण भवे सम्भवा वाचन्नमं ब्रह्मे असुतो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा हनुमान और महाराजा शिव के पुत्र गणेशाय नमः ब्रह्मे मानो देखो, गणेश जी ये सर्वत्र मुनिवरों देखो, इस आभा में रमण करते रहे हैं। इस आभाओं की चर्चाओं में रमण करना इनका कर्त्तव्य रहा है। मुनिवरों! देखो, आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। मानो देखो, मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा था क्या मुनिवरों देखो, भगवान कृष्ण और महात्मा सुदामा मानो देखो, उनको महात्मा बाल्यकाल में कहते थे वह भिक्षा प्रवृत्ति पर अपने जीवन का निर्वाह करते रहते थे परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत हो करके वह आत्मा की चर्चा करते रहते थे। इसी प्रकार भगवान कृष्ण की भी चर्चा होती रहती थी।

आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या कि हम अपने में मुद्रित हो करके इस संसार को एक आभा में परिणत करते चले जाएं, मानो चाहे वह राष्ट्रीय विज्ञान हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे भौतिक विज्ञान हो। मेरे प्यारे! सबमें वह प्रभु! गुथा हुआ है। विज्ञान और ज्ञान से परिणत होने वाला वह प्रभुत्व कहलाता है। यह है बेटा! यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या मुनिवरों! देखो, विद्यार्थी काल में ब्रह्मचर्य काल में आचार्य के चरणों में ओत-प्रोत हो करके बेटा! संसार के विज्ञान को जाना जाता है मानो देखो, वही उनके चरणों में प्रतिभा का जन्म होता है यह है बेटा! आज का वाक् समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा ओ३म् देवा रथं ब्रह्म भू शोणां वाचन्न रथा .... स्थान : लाक्षाग्रह बरनावा समय : दोपहर ३ बजे

५ यह अनुपम जगत् एक माला के सदृश है

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, नाना प्रकार की ध्वनियों का और नाना प्रकार के क्रिया-कलाप प्रायः हमारे समीप आते रहे हैं। जब हम उन क्रिया-कलापों में अपने को ले जाते हैं और एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो एक ही वेदमन्त्र में, ब्रह्माण्ड का, एक एक ज्ञान का तन्तु उसमें निहित रहता है। एक ही वेदमन्त्र का चिन्तन करने से, मानव अपने को बहुत ऊर्ध्वा में ले जाता है। हमने तुम्हें बहुत पुरातन काल में, अपना वाक् प्रकट करते हुए कहा था कि ये जो वेदों का भिन्न भिन्न प्रकार का पठन-पाठन करने का जो प्रकार है, प्रायः ऋषि मुनि बेटा! इस ज्ञान के ऊपर अध्ययन करते रहते थे और गान गाने वाला गान गाता ही रहता है। क्योंकि यहाँ, प्रत्येक परमाणु और अणु उद्गानं ब्रहे तत्त्वा वह सर्वत्र प्रभु का गान गा रहे हैं। वेद का एक-एक शब्द है, उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की ध्वनियाँ हैं। उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रकार हैं। परन्तु वह गान गाया जा रहा है। बेटा! एक-एक शब्द, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है क्योंकि एक-एक परमाणु बेटा! उसी की गाथा गाता रहता है।

तो आओं मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज, अपने विचारों का आदान प्रदान करते रहते थे। उनका विचार-विनिमय चलता रहता था क्योंकि कागभुषुण्ड जी जहाँ ब्रह्मवेत्ता थे, वहाँ वह विज्ञान में, भी बड़े पारायण थे। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! वे वह नाना प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों की चर्चा करते रहते थे। परन्तु उनसे कुछ वाक्य लाकर के वह अपने एकान्त स्थलियों में विद्यमान रहते थे।

भगवान कृष्णा और महर्षि सन्दीपन की ज्ञान चर्चाएं

बेटा! मैं इन वाक्यों में न जाता हुआ, मानो उनके जीवन चरित्र का अध्ययन करने वाला, बेटा! भगवान कृष्ण और सुदामा जी दोनों ही अध्ययन करते रहते थे। जब ऋषि-मुनियों का जीवन बेटा! अध्ययन किया जाता है, तो मानव के जीवन की एक महान-धारा बन जाती है। मानव का जीवन, एक पवित्रवत् बनने लगता हैं तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। केवल कुछ परिचय देने के लिए आया, मेरे प्यारे! देखो, जब वह अध्ययन करते थे, तो महाराज भगवान कृष्ण ने बेटा! एक समय अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा, क्या हे प्रभु! मैं विज्ञान में मुद्रित होना चाहता हूँ यह जो विज्ञान है इसमें मैं कैसे मुद्रित हूँ? क्योंकि वेद के शब्द जब मुझे स्मरण नहीं आ पाते, तो उस समय मुझे क्या करना चाहिए? तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा संदीपन ऋषि ने ये कहा कि जब तुम मानो वेद के मन्त्र से वञ्चित होने लगो उसका विधिवत संगति न कर सको, तो उस समय तुम अपने प्रत्येक इन्द्रियों को समेट करके मानो अपने हृदय अगम्य ज्योति में प्रवेश कर जाओ, और अन्तर्हृदय की अगम्य ज्योति में जब तुम प्रवेश कर जाओगे, तो वह परमात्मा का जो हृदय है, वह ज्ञान से परिपूर्ण है तुम्हारा जो हृदय है दोनों का समन्वय करके और वह जो वेदवाणी है, वेदवाणी का वह जो प्रकाश है वह प्रकाश मानो देखो, तुम्हारी वाणी से उद्बुद्ध होने लगता है। मानो वह उदघृत हो जाता है।

सोलह हजार वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ कर्ता भगवान कृष्णा

तो विचार क्या है? मानो तुम अपने में मुद्रित होना चाहते हो। हे कृष्ण! तुम अपने में यह चाहते हो, कि मैं प्रत्येक वेद की ऋचा को अपने में अध्ययन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि भगवान कृष्ण ने सोलह हजार वेद की ऋचाओं को मुनिवरों! देखो, कण्ठस्थ किया और कण्ठस्थ करके उसका उद्गम चलता रहता था। प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को बेटा! जानने वाला मानो अपने में अनुसन्धानित हो रहा है। मुनिवरों! देखो, ब्रह्म

की चर्चा हो रही है। ब्रह्म के विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है। मुनिवरों! देखो, सर्वत्र राष्ट्र में क्या, मानो ऋषियों में, इन विचारों की प्रतिभा की चर्चा होती रहती है। मुनिवरों! देखो, इसी वेद के मन्त्रों को लेकर के, वह अध्ययन करते रहते थे। वह अध्ययन, मानो जहां ज्ञान का अध्ययन, जहाँ आत्म तत्त्वों का अध्ययन, वहाँ मुनिवरों! देखो, उनका भौतिक विज्ञान मानो देखो, विशालता में परिणत होता रहता था।

भगवान कृष्ण की अनुसन्धानवेत्ता बनने की इच्छा

मेरे प्यारे! देखो, गुरु आश्रम में, विद्या का अध्ययन करते हुए, मेरे पुत्रो! देखो, एक यन्त्र का निर्माण, एक समय मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने, और हनुमान जी ने दोनों ने एक स्थली पर विद्यमान हो करके हिमालय की कन्दराओं में, एक यन्त्र का अध्ययन किया था और वह यन्त्र इस प्रकार का था, सूर्य जैसे उदय हो रहा है, उस यन्त्र के प्रभाव से मानो देखो, वह सूर्य को अपने में ढांप लेता था और रात्री बन जाती थी। मानो देखो, सूर्य की कृतिका का समावेश हो जाता थी। तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय भगवान कृष्ण और सुदामा भी इस वाक् का अध्ययन कर रहे थे। उनके आभाओं का विज्ञानमयी जो तत्त्वमयी रहस्य था। उसके ऊपर अध्ययन हो रहा था। जब अध्ययन हो रहा था तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने भगवान कृष्ण ने महात्मा संदीपन ऋषि से यह कहा कि हे पूज्यपाद! आप तो वेद के मर्म को जानने वाले हैं धर्म के मर्म को जानने वाले हैं परन्तु हम यह जानना और चाहते हैं कि इस यन्त्र का निर्माण कैसे होता है? इस यन्त्र के निर्माण की, हम प्रतिक्रियाओं को जानना चाहते हैं। हमें ऐसा कुछ स्मरण है उन्होंने कहा, हे कृष्ण! मानो तुम भौतिक विज्ञान में जाना चाहते हो या आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करना चाहते हो? उन्होंने कहा, महाराज! विज्ञानां ब्रह्मे कृतां लोकाः हिरण्यं ब्रह्वे अस्तुतो दिव्या, बेटा! भगवान कृष्ण ने यह कहा कि मैं उस विज्ञान को जानना चाहता हूँ, जो विज्ञान वेद की प्रतिभा के गर्भ में विद्यमान रहता है। क्योंकि वेद नाम प्रकाश का है और देखो, मानव की प्रवृत्ति इस प्रकाश को जानना है, मानो प्रत्येक मानव की, प्रत्येक विद्यार्थी की, आचार्य के चरणों में ये उत्सुकता बनती है कि मैं प्रत्येक वस्तु का विशेषज्ञ बन जाँऊ। मानव उस धारा को जानना चाहता है, उसका विशेषज्ञ बनना चाहता है। भगवन! तुम्हारे चरणों में वैदिकता के मन्त्रों का बहुत-सा अध्ययन किया है परन्तु जो उनमें उद्गम है, उनमें जो रहस्य है, उन रहस्यों के लिए मैं आपके चरणों में विद्यमान रहता हूँ क्योंकि मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं अनुसन्धानवेत्ता बनूं। तो मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है उनके यहाँ जहाँ हमारे यहाँ विद्यालयों में बेटा! यज्ञशाला होती है, उन्हीं विद्यालयों में एक सूक्ष्म सी क्या विशाल विज्ञानशाला भी होती है। जहाँ ज्ञानशाला है मानो देखो, वहाँ विज्ञानशाला, जहाँ यन्त्रों का निर्माण, यन्त्रों का धातुपिपाद को निर्माण करने की विधिवत् क्रिया और यन्त्र उसमें विद्यमान रहते हैं।

भगवान कृष्ण द्वारा निर्मित अधेररत यन्त्र

तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब भगवान कृष्ण ने बेटा! देखो, यन्त्रों को जानने का प्रयास किया। वहाँ एक वेद में एक वाक् आया। सम्भवते असुताम देवं प्रमाणं ब्रीहि व्रतो देवा अग्नि के धून्द में यह विशेषता होती है क्या वह मानो कुछ वह कालिमा को ला करके, वह सूर्य की कृतियों को अपने में धारण कर लेता है। परन्तु वेद में जहाँ ये शब्द आया, वहाँ वेद के मन्त्रों में ये भी शब्द प्रतिपादित होने लगा, उन्हें कही उन्होंने कहा कि यह रात्रि क्यों होती है? मानो उन कणों को जानना चाहिए। मानो देखो, कहीं उन्होंने यह अध्ययन किया, सूर्यं ब्रह्मे पृथ्वी वचस्वाः यह पृथ्वी जैसे गतिशील रहती है, मानो देखो, सूर्य का जैसे-जैसे आँगन में गति करती सूर्य के सन्मुख आ जाती हैं। वहीं प्रकाश होता रहता है, परन्तु ये भी यथार्थ है परन्तु रात्रि मानव के दिवस में भी रात्रि आ जाती हैं वहाँ उन्होंने इन्हीं धातु-पिपादों पर अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया और वह इन वाक्यों पर अनुसन्धान करने लगे, कि मानव के आँगन में, जब मानव के मस्तिष्क में, सुसज्जिता आ जाती है। कृका अन्तति आ जाती है तो उस समय मानो देखो, मानव के नेत्रों के समीप अन्धकार आ जाता है। मानो देखो, इस अन्धकार की कालिमा

को ले करके उन्होंने कहीं वेदों में ऐसा अध्ययन किया, क्या, मुझे तो उस वस्तु को जानना है। तो मेरे पुत्रो! मुझे ऐसा स्मरण है उन्होंने भयंकर वनों में संदीपन ऋषि के यहाँ, अनुसन्धान करने लगे और उन्होंने यन्त्रों का निर्माण करना प्रारम्भ किया।

मानो देखो, उस विद्यालयों में अनुसन्धानशाला है, विज्ञानशाला है, उन वैज्ञानिक यन्त्रों में नाना धातु-पिपाद को लेकर के मेरे प्यारे! जल के परमाणुओं को, पृथ्वी के परमाणुओं से, समन्वय करते, अग्नि के परमाणुओं से, जब समन्वय किया गया, अग्नि के उन परमाणुओं में जिनमें धुम्र विशेष होता है, मानो उन परमाणुओं को ले करके, उन्होंने उस परमाणुवाद को अन्तरिक्ष में से लेना प्रारम्भ किया, कुछ धातुओं से लेना प्रारम्भ किया तो एक अंधरेखा नाम के यन्त्र का निर्माण किया था, जिस अंदेशवर नामक यन्त्र का मेरे प्यारे! देखो, महाभारत के काल में, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मुनिवरों! देखो, जब जयद्रथ को नष्ट करने की प्रवृत्ति के लिए आएं तो उन्होंने महारानी रुक्मणी से इस यन्त्र का प्रहार कराया था तो मेरे प्यारे! देखो, वह सूर्य को ढांपने वाला यन्त्र था।

मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में भी मैं विज्ञान में तुम्हें नहीं ले जाना चाहता हूँ परन्तु विचार-विनिमय क्या कि उस यन्त्र का भगवान कृष्ण ने निर्माण किया था। इसी यन्त्र को देखो, महाराजा शिव ने और महाराजा हनुमान ने इसी यन्त्र का दोनों की सम्मति से, मुनिवरों! देखो, त्रेता के काल में निर्माण हुआ था, और वह निर्माण होते हुए, जिस समय राम का काल था, जिस काल में देखो, भगवान राम देखो, और सम्भवे समा चटुत्म, रावण का, दोनों का संग्राम हो रहा था, मेरे पुत्रों! एक यान, उन्होंने ऐसे यन्त्र का, वायुमण्डल में प्रसारण कर दिया, कि अन्धकार छा गया। परन्तु देखो, वह रावण भी एक विशेष वैज्ञानिक था। उन्होंने ऐसे यन्त्र का निर्माण किया मानो जिससे वृष्टि हुई, अग्नि की वृष्टि होने लगी, सेना में त्राहि-त्राहि हो गई।

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! मैं यन्त्रकाल में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह क्या भगवान कृष्ण, मानो संदीपन ऋषि के यहाँ जब अध्ययन करते रहते थे तो मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन की प्रतिक्रियाएं मानो प्रारम्भ रहीं, अध्ययन चलता रहा, अड़तालीस वर्षों तक मुनिवरों! संदीपन ऋषि के यहाँ उन्होंने अध्ययन का कार्य किया। मानो अध्ययन उनका चलता रहा अड़तालीस वर्षो में वह मुनिवरों! देखो, विज्ञान में भी पारायण होने लगे। जहाँ बुद्धिमान, बुद्धिमता जहाँ मुनिवरों! देखो, उनका विज्ञान, विशालता में रहता था, वहाँ मेरे प्यारे! उनका सौम्य क्रिया-क्लाप था, वह चरित्र की प्रतिभा थी वह उस महानता में रहती क्या मानो देखो, उसका कोई अब्रहो ब्रह्वे स्वसता मानो देखो, उसकी संतुलना, उस समय कोई कर नहीं पा सकता था।

आज मैं विशेष चर्चा नहीं प्रकट करूंगा क्योंकि इस सम्बन्ध में मानो कल मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रकाश दे सकेंगे, परन्तु आज का विचार-विनिमय तो केवल यह है कि अम्ब्रहो सम्भवः देवाः। मेरे प्यारे! देखो, मैं उस काल में जा रहा था, जहाँ भगवान कृष्ण और सुदामा जी दोनों मुद्रित हो करके, ऋषि-मुनियों के मानो साहित्यों की चर्चा करते रहते थे। दोनों उनके जीवन चरित्र, उनके विचारों का जो आदान-प्रदान होता रहता था, उसके ऊपर उनका विचार-विनियम होता रहा, तो मेरे प्यारे! देखो, उनका विचार क्या होता? वह अपने में मुद्रित होने के लिए उन्होंने मुद्रित होने के लिए आत्म-तत्त्व की चर्चा करते रहते थे। क्या मानव अपने में कैसे मुद्रित हो जाता है? मानो देखो, अग्नि को पृथ्वी से मिलान करना चाहता है और अग्नि, और पृथ्वी को, वायु से मिलान करना चाहता है और वायु को अन्तरिक्ष में, मानो देखो, अग्नि से समन्वय करना चाहता है। मानो देखो, इस प्रकार का, उनका विचार-विनिमय आदान-प्रदान होता रहता था। उन विचारों को ले करके दोनों अपने में सम्भवः दिव्यम् गतप्रवः अस्वः रुद्रोः भागः दिव्यस्ते। मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, कि वह अपने में मुद्रित होना और योगाभ्यास के द्वारा कहीं अग्नि और पृथ्वी के मुद्रित हो करके, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाते थे, और चिन्तन करते रहते थे कि अग्नि का भण्डार इस पृथ्वी में कैसे गति कर रहा, मानो कैसे धातुओं को तपा रहा है, कैसे मानो

दृण बन रहा है? इसी प्रकार वह कहीं चन्द्रमा के मुद्रित होते हुए, शीतली आभा में रमण कर जाते और शीतली आभा में रमण करने से मुनिवरों! वे शीतली आभा को जान करके, वह चन्द्रमा की कान्ति के द्वारा बेटा! अपने मन की प्रवृत्ति को मानो देखो, उसमें परिवर्तित करते रहते थे। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! इसी प्रकार सूर्य विज्ञान, नाना प्रकार का मानो देखो, मुद्रा जानते थे। मुद्रा क्या होती है? मुद्रा यह है एक मानव ध्यानावस्थित होना चाहता है एक मानव बेटा! देखो, मुद्रित होना चाहता है वह अपने नेत्रों की ज्योति की श्रोत्रों की धारा को, घ्राण की मन्द सुगन्ध को और त्वचा की प्रीतियों को मेरे प्यारे! देखो, वाणी के उद्गम को, वह एक सूत्र में लाना चाहता है। वह एक सूत्र को बनाना चाहता है। यदि उसने अपनी पाचों अंनुष्ठानों को, एक सूत्र में लाने का और उनको मुद्रित करने का प्रयास कर लिया वहाँ प्राण शक्ति को लाने का प्रयास कर लिया है तो बेटा! पांचों इन्द्रियां, इन्द्रियों का विषय, हृदय में प्रवेश हो करके मानो देखो, हृदय में वह प्रचण्ड ज्ञान रूपी अग्नि का वह याग हो करके मेरे पुत्रों! देखो, मानव की बुद्धि के सम्पूर्ण तन्तुओं का स्पष्टीकरण हो जाता है। और मानव के जब मस्तिष्क के तन्तुओं का स्पष्टीकरण हुआ, तो वही मानव आत्म परमात्मा की, आत्मा की, प्राण का जितना विज्ञान है वह मानो उस महापुरुष के लिए खिलवाड़ की भांति हो जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, ये देखो, कागभुषुण्ड जी का और महर्षि लोमश मुनि महाराज का विचार-विनिमय होता रहता था मेरे प्यारे! देखो, कहीं मानव अग्नि के ऊपर अनुसन्धान करना चाता है, कहीं वायु के ऊपर विजित होना चाहता है, कहीं मानो देखो, वह शब्द के ऊपर विजित, अपने को विजय करना चाहता है। कहीं वाणी को विजय करना चाहता है बेटा! जब वाणी पर विजय कर लेता है तो मेरे प्यारे! उसका जो मानव दर्शन है, वह उसका ऊँचा बन जाता है वाणी के बेटा! दो प्रकार के स्वरूप माने गये हैं। एक वाणी का स्वरूप मानो देखो, एक वाणी का स्वरूप स्वादनों में, रसों में परिणत हो जाता है। एक रसों को विजय करने में परिणत हो जाता है।

सुधन्वाकेतु और अंगिरस ऋषि का सम्वाद

बेटा! जो आज वाणी से उद्गान गा रहा है, वेद की प्रतिभा का वर्णन कर रहा है मुझे स्मरण आता रहता है जब हमारे यहाँ ऐसा वर्णन आया है कि महर्षि अंगिरस मुनि महाराज एक समय बेटा! सुधन्वा केतु ऋषि के द्वार पर विद्यमान थे। जब विद्यमान थे, तो अंगिरस ऋषि ने उनसे कहा कि प्रभु! सुधंवाकेतु ऋषि से कहा कि मैं अपनी वाणी पर विजय करना चाहता हूँ। मैं अपनी इन्द्रियों पर विजय करना चाहता हूँ। तब उन्होंने कहा कि कौन-सी धारा पर विजय करना चाहते हो? उन्होनें कहा-प्रभु! मैं मानो वैदिक प्रकाश को लेकर के प्रकाश में अपने को स्नानित करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो मेरे प्यारे! देखो, ऐसा मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ अध्ययन किया कि अंगिरस ऋषि महाराज और सुधंवाकेतु ऋषि महाराज का, दोनों का सम्वाद चलता रहता था और दोनों के सम्वाद में यह आया कि वाणी को वह मानव ऊँचा बना सकता है जो मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन सकता हो, और ब्रह्मवर्चोसि कौन बनता है? जो वाणी को पवित्र बना लेता है, और दोनों एक ही सूत्र के मनके हैं। परन्तु विचार यह है, कि दोनों ही एक सूत्र के मनके हैं परन्तु विचार में यह आया, कि सम्भवो देवाः की वाणी को कैसे पवित्र किया जाए?

आहार के तीन प्रकार

बेटा! उसका आहार पवित्र होना चाहिए। आहार में पवित्रता, आहार कैसा होना चाहिए? बेटा! एक समय तो मानव वायु का आहार होना चाहिए और एक समय अन्नाद का आहार होना चाहिए। और एक समय मानव अपनी प्रवृत्तियों को संयम में लाने के लिए चिन्तन का आहार होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के आहार होते हैं। मानव के द्वारा, जिनसे मानव की प्रवृत्तियों में, महानता का जन्म होता है। मेरे पुत्रो! देखो, सबसे प्रथम

मानव को मुनिवरों! देखो, आहार पान करना चाहिए क्या सम्भवे देवा! वायु का आहार, प्रातःकालीन जब मानव अपने आसन से पृथक होता है अपनी नाना प्रकार की क्रिया कलापों से निवृत्त हो करके वह चिन्तन के लिए मानो सबसे प्रथम वह अपने में मुनिवरों देखो, प्राणायाम शीतली प्राणायाम और अग्नि प्राणायाम सोमभुक प्राणायाम नाना प्रकार के प्राणायामों का यहाँ वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, वायु का आहार वायु के ऊपर, अपना आहार करना चाहिए जो मानो देखो, वायु से आहार कर लेता है उसके पश्चात् वह अन्नाद के आहार को पान करना चाहता है बेटा! अन्न क्या है? मुनिवरों! अन्न कहते हैं जो प्रभु ने प्रसाद रूप में सृष्टि के प्रारम्भ में मानव को प्रदान किया। मेरे प्यारे! देखो, यह जो अन्न है मेरी प्यारी माता अपने भोजनालय में अन्न को तपा रही है परन्तु जब तपाती रहती है तो माता अपने पुत्र की प्रवृत्ति को ऊँचा बनाने के लिए गायत्री छन्दों का पठन-पाठन कर रही है। गायत्री छन्दों का जब पठन-पाठन हो रहा है, वेद की ध्वनियाँ हो रही हैं मुनिवरों! देखो, वह अन्न को तपाया जा रहा हैं तो वह जो माता के उद्गार है वाणी के वाणी का सम्बन्ध मुनिवरों! देखो, हृदय से होता है। हृदय का सम्बन्ध वेद रूपी प्रकाश से होता है। और वह जो प्रकाश है मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो, उससे वह जो परमाणु हैं उसमें जो एक मानो यन्त्र बन गया है, एक आकार बन गया है माता की वाणी का, बेटा! वह अन्न में विद्यमान हो जाता है वह संस्कारित्त हो जाता है। मुनिवरों! देखो, उस अन्न को पुत्र पान करता है तो उसकी बुद्धि महान् बनती है। पतिदेव पान करता है तो उसकी बुद्धि महान् बनती है। कोई महापुरुष अतिथि आ करके पान करता है तो बेटा! उसकी बुद्धि भी पवित्र बनती है, परन्तु वह अन्न कैसा हो? सात्विक अन्न हो और माता के, वेद के मन्त्रों की ध्वनि वाला अन्नाद होना चाहिए।

प्रभु का दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, मैं इसमें इतने कठोर, मानो देखो, इतने गम्भीर रहस्यों में तुम्हें नहीं ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय, मेरे पुत्रो! देखो, अध्ययन करना, मानो देखो, आहार करना, उसके पश्चात् जब आहार पवित्र होता है, तो मानव के व्यवहार की प्रवृत्तियाँ बन जाती हैं। व्यवहार पवित्र बनता है मेरे पुत्रों! वह सबसे प्रथम व्यवहार में, जनता में जर्नादन को दृष्टिपात करता है। मेरे प्यारे! वह समाधिष्ट होता है तो अपनी प्रवृत्तियों को आन्तरिक जगत् में ले जा करके वे परमपिता परमात्मा की गम्भीर सागर में चला जाता है, गम्भीर जगत् में चला जाता है। चेतना के सूक्ष्म रहस्य में चला जाता है, प्राण की आभा को जान करके मेरे पुत्रों! देखो, वह ध्यानावस्थित हो करके, वह बाह्य जगत् को आन्तरिक जगत् में दृष्टिपात करता है और आन्तरिक जगत् को बाह्य जगत् में दृष्टिपात करता है। बेटा! उसका ये संसार और हृदय का संसार दोनों का समन्वय हो करके बेटा! प्रभु! ही प्रभु! दृष्टिपात आने लगता है।

तो मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया हूँ? मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। आज मुनिवरों! देखो, मैं हम तुम्हें उस क्षेत्र में ले जा रहे हैं कि गम्भीर अध्ययन होना चाहिए। गभीर अध्ययन की चर्चा क्या है? मुनिवरों! आहार व्यवहार को पवित्र बनाना है। वाणी उद्गान गा रही है। वाणी प्राण को ले करके उद्गान गा रही है, मानो आहार गान गा रहा है तो प्राण को ले करके गा रहा है। मुनिवरों! देखो, प्राण ही मुनिवरों! देखो, प्राण ही मुनिवरों! देखो, अन्तिम मण्डले सतो चिन्तनाति ब्रहे वह जो चिन्तन सुधा है जिसके गर्भ में जाने से बेटा! प्राण के साथ ही देखो, बेटा! मन को पृथ्वी के गर्भ में ले जाता है, पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का धातु पिपाद का निर्माण हो रहा है, मानो उसको लेकर वही मुनिवरों! प्रवृत्ति उसकी और लोकों में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, ज्ञान और विज्ञान दोनों उसके सिद्ध हो जाते हैं वह ज्ञानी भी है, मानो देखो, वैज्ञानिक भी है। और वह मुनिवरों! विज्ञानवेत्ता बन करके वह इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करता है।

तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! विचार क्या है? वायु मुनि महाराज और उन दोनों के विचारों का आदान-

प्रदान होता रहता था। विचारों की प्रतिभा, इतनी महानता में मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात मानो देव पूजा, याग में परिणत होता है। मेरे पुत्रों! देखो, उस परिणत होने में, उसकी आभा का एक पवित्र जन्म हो जाता है तो मुनिवरों! देखो, यह उसकी मुद्रिका कहलाती है, यह मुद्रा कहलाती है। जिस मुद्रा के ऊपर मैं, कई समय तुम्हें से विचार दे रहा हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम प्रातःकालीन मुनिवरों! देखो, प्राण को ले करके, वह अंगुष्ठानों को ले करके वायु को विजय करना है वायु अंगुष्ठानों को अपनाने के लिए तत्पर हो जाएं। अग्नि को विजय करना, हो तो अग्नि और पार्थिवता से मिलान हो जाए, बेटा! देखो, यह अपने हृदय अगम्य् ज्योति से और हृदय असुताम् इन्द्रियों के द्वारा मानव अपने में स्पष्टीकरण करता है। भगवान कृष्ण ने बेटा! देखो, यही विशेषता थी, कि भगवान कृष्ण का जीवन मुनिवरों! देखो, जब उसका अध्ययन करने का, हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। तो ऐसा मानो मुझे दृष्टिपात हुआ, कि उनके जीवन में मानो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत् दोनों मानो सुसज्जित थे और दोनों पर मुनिवरों! देखो, अनुशासन करने के नाते, मेरे पुत्रों! देखो, वह विराट स्वरूप की प्रतिक्रिया को भी जानते थे। क्योंकि परमात्मा का यही तो विराट स्वरूप होता है क्या वह आन्तरिक जगत् को बाह्य जगत् को, दोनों को एक-दूसरे में समन्वय करने वाले हैं। जैसे प्राण और अपान दोनों को समन्वय करने से, अपान से, प्रकृति से अस्वानम को जाना जाता है परन्तु देखो, प्राण अपान को जानने से अन्तरिक्ष के परमाणुओं में किस-किस गति से परमाणु गति करता है? वह जाना जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने, जब विज्ञान और ज्ञान के ऊपर अध्ययन प्रारम्भ किया तो मुनिवरों! आध्यात्मिक विज्ञान भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया, दोनों का समन्वय जब तक नहीं किया जा सकता जब तक यह संसार ऊँचा नहीं बन सकता।

तो मेरे पुत्रो! आज का हमारा यह विचार, क्या कह रहा है? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम ऋषि मुनियों के ये विचार हैं। ऋषि मुनियों की जो धारणाएं हैं, उनको महान् बनाने के लिए बेटा! हम सदैव अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा है? मुनिवरों! देखो, हम किसी किसी अस्वत लोकों में गति करने के लिए तत्पर हो जाते हैं परन्तु बेटा! जब मुझे भगवान कृष्ण और नाना ऋषि मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है। मेरे प्यारे! ऋषि-मुनि यन्त्रों का निर्माण करके बेटा! कहीं वह मंगल में गए हैं, कहीं मानो वह सूर्य लोकों तक की यात्राएं हमारे आचार्यों ने विज्ञान के द्वारा की हैं। जैसे सूर्य की किरण है जो की गति कर रही है उसी के साथ अपनी प्रवृत्ति को ले जाना, अपने मन की धाराओं को ले जाना उनके ऊपर जब गम्भीर अध्ययन करना, बेटा! यही मुनिवरों! देखो, अपने मानवीय जीवन का अध्ययन करना है। इस अध्ययन प्रवृत्ति से ही ये समाज ऊँचा बन सकता है, ये अध्ययन की प्रवृत्ति से ही विद्यालय ऊँचे बनते हैं, इन्हीं मानो प्रवृत्तियों से राष्ट्र पवित्र बनता है। तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है? कि विज्ञान के नाना तंतुओं में, जब मानव प्रवेश करता है, नाना प्रकार के तंतुओं की वार्त्ताओं में रमण करता है तो मानो अपने में गम्भीर मुद्रित हो करके अग्नि का चलन करता है, अग्नि की आभा में मानो अपनी प्रवृत्तियों की समिधा बना करके हृदय रूपी अग्नि में बेटा! देखो, उनका स्वाहा कह करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाता है, वह मानो देखो, अन्तरिक्ष में रमण करता है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, कि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने नाना प्रकार की चित्रावलियों का निर्माण किया था।

द्वापर में चित्रावली

बेटा! वह चित्रावली भगवान कृष्ण के द्वारा भी थी। जिस काल में मुनिवरों! देखो, महाभारत का काल था। महाभारत का काल देखो, जब संग्राम प्रारम्भ होने लगा, तो मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण धृतराष्ट्र के द्वारा पहुंचे।

महाराजा धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे, मानो नेत्र नहीं थे, प्रज्ञा चक्षु थे, उनका मानो देखो, संजय प्रह्वा उनका एक सुमन था। मंत्री अपनी आभा में उनके चरणों की आस्वातम वन्दना करता रहता था। मेरे प्यारे! देखो, भगवान कृष्ण ने यह कहा कि हे भगवन! देखो, तुम्हारे इन राजकुमारों में संग्राम होने जा रहा है तुम क्या चाहते हो, तुम्हारी कोई इच्छा है? उन्होंने कहा कि संग्राम होने जा रहा है तो हे कृष्ण! मैं चाहता हूँ कि मेरे द्वारा ऐसा कोई यन्त्र होना चाहिए ऐसा यत्न होना चाहिए, जिससे यह क्रिया-कलाप जो देखो, कुरुक्षेत्र में हो वह मुझे हस्तिनापुर में वर्णित होता रहे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रिय, तो भगवान कृष्ण ने मानो देखो, संदीपन ऋषि महाराज के चरणों में विद्यमान हो करके उन यन्त्रों को जाना था। मेरे पुत्रो! देखो, यन्त्र क्रिया में लाना, लाया हुआ यन्त्र उन्होंने बेटा! चित्रावली धृतराष्ट्र के यहाँ प्रदान की और वहाँ कुरुक्षेत्र में संग्राम हो रहा है और उस यन्त्र में मानो देखो, उसका चित्र आ रहा है, वह चित्र मानो देखो, जैसे आता उसी प्रकार मानो संजय मानो देखो, प्रज्ञा चक्षु को प्रदान करता रहता था मुनिवरों! विचार-विनिमय क्या? विज्ञान मानव की चरम सीमा पर रहा है किसी-किसी काल में। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ मैं विज्ञान के तंतुओं में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। परन्तु देखो, यहाँ नाना प्रकार के चित्र बेटा! अन्तरिक्ष में गति करते रहते हैं।

विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते रहें। बेटा! यही चित्रावली यही यन्त्र लंका में जब राम और रावण का संग्राम हो रहा था, तो मुनिवरों! देखो, इसी यन्त्र के द्वारा, चित्रावली के द्वारा राम और रावण के संग्राम को भरत अपने में, अयोध्या में दृष्टिपात कर रहा था। मेरे प्यारे! वही यन्त्र वही संग्राम की प्रतिक्रिया, हिमालय की कन्दराओं में अपने राष्ट्र में विद्यमान हो करके, महाराजा शिव और पार्वती उनको दृष्टिपात करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, यहीं तक नहीं अब्रणा ब्रह्मे सम्भवां देवतवां मुनिवरों! देखो, जब सूर्य, में किसी भी प्रकार का अग्नि के प्रचण्ड से मुनिवरों! देखो, आक्रमण हो करके और सूर्य में गढेला बन जाता है। तो मेरे प्यारे! ऐसे चित्र महाराजा शिव के द्वारा थे कि जैसे उनका वहाँ आक्रमण हुआ। परमाणुओं का आक्रमण हुआ, सूर्य में गढेला हुआ, उसका चित्र मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव के यन्त्र में प्रवेश करता था। और वह उन्हें दृष्टिपात होता रहता था। मेरे पुत्रो! मैं विज्ञान के क्षेत्र में विशेष नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार यह देना चाहता हूँ क्या मुनिवरों! देखो, हमारा जो मानवीय वैदिक साहित्य है, वेद हमें क्या कह रहा है? वेद हमें किस मार्ग के लिए पुकार रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल भी स्मरण है, पुत्रों! जब महाराजा मार्कण्डेय ऋषि महाराज अपने मानो देखो, इस चन्द्रमा और पृथ्वी दोनों की आकर्षण शक्ति के द्वारा अपना स्थान बनाए हुए थे। अपना यन्त्र बनाए हुए थे, महाराजा शिव और पार्वती दोनों मानो देखो, यन्त्र में लगभग छः माह तक मार्कण्डेय ऋषि महाराज का संग होता था। तो मेरे पुत्रों! मैं विज्ञान के क्षेत्रों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ ऋषि-मुनियों का जीवन और देखो, वैज्ञानिको का जीवन, परन्तु देखो, आहार और व्यवहार जब पवित्र होते हैं तो मानव के मस्तिष्क की जो ग्रंथियाँ हैं उनका स्पष्टीकरण हो जाता है। वे प्रभु की आभा में रमण करते रहते हैं।

बेटा! देखो, यह तो मानव का विज्ञान है परन्तु कल समय मिलेगा तो परमात्मा के विज्ञान की चर्चा करेंगे कि वह प्रभु! कितना महान वैज्ञानिक हैं? बेटा! आज का विचार-विनिमय समाप्त। अब मुझे समय मिलेगा, आज के विचारों का अभिप्राय क्या? कि अब भगवान कृष्ण ने, नाना ऋषि मुनियों के जीवन चरित्र अध्ययन कर-कर के नाना प्रकार के विज्ञान को जाना बेटा! यह आज का वाक् समाप्त बेटा! अब वेदों का पठन-पाठन होगा। लाक्षागृह, बरनावा

६ महानन्द जी का राष्ट्र व समाज को उन्नत करने पर विचार

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महान् देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे देव इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान है। मानो उसी की प्रतिभा है जो प्रतिभा, इस संसार की एक-एक वस्तु में विद्यमान हैं बेटा! हमारा वेद का मन्त्र, उस एक-एक वेद के मन्त्र में बेटा! ज्ञान और विज्ञान की तरंगे विद्यमान रहती हैं। क्योंकि परमपिता परमात्मा का ये जो अमूल्य जगत् है मानो यह ब्रह्माण्ड, उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है अथवा यह उसका गृह माना गया है। जैसे यह मानव शरीर है, ये आत्मा का आयतन माना गया है इसी प्रकार मानो ये संसार एक आभा में रमण कर रहा है। ज्ञान और विज्ञान में गति करने वाला, बेटा! ये ब्रह्माण्ड एक महान् देव की गाथा गा रहा है। क्योंकि देव की गाथा कौन गाता है? देव की गाथा कौन गा रहा है? उस देव की गाथा इस प्रकृति का एक-एक परमाणु गा रहा है मानो एक ब्रह्माण्ड की जो रचना है वह रचना ब्रह्म की ही गाथा गा रही है। मेरे प्यारे! परमाणु अपने में गतिशील रहता है परन्तु उसे कौन गति दे रहा है? कौन मानो उसकी रचना में सहायक बन रहा है? मेरे प्यारे! यह चेतना वह चैतन्य देव है। तो बेटा! ये भिन्न-भिन्न प्रकार की रचना है, इन रचनाओं के मूल में कोई वस्तु है। इन रचनाओं के मूल में मानो देखो, कोई एक रचाने वाला है और वह रचाने वाला मेरा प्रभु है, मेरा अनुपम देव है।

ब्रह्म की रचना

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके मानो अपने में उस प्रभु का चिन्तन करते रहते थे और उसके ब्रह्माण्ड को निहारते हुए उस ब्रह्माण्ड की आभा में रमण करना बेटा! एक सर्वत्रता का कर्त्तव्य रहता था। मैं बेटा! इससे पूर्वकाल में भगवान कृष्ण की चर्चा कर रहा था। मेरे प्यारे! देखो, कृष्ण की चर्चा करते हुए, संदीपन ऋषि और इत्यादि ऋषि-मुनियों की जहाँ चर्चाएँ आती रहती हैं। मानो जहाँ ब्रह्म का वर्णन है, जहाँ मुनिवरों! एक आभा में रमण करने वाला यह अनुपम ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर गुरु-शिष्य दोनों विद्यमान हो करके, अपना प्रायः विचार-विनिमय करते रहते थे। मेरे प्यारे! वह विचार, एक अव्यहत गति से, गतिशील रहने वाला, वह विचार अन्तरिक्ष में विद्यमान रहता है। उसी अन्तरिक्ष के ऊपर, मेरे प्यारे! परमाणुओं का समूह, परमाणुओं की आभाएं बेटा! तरंगे मानो देखो, इस मानो देखो, अन्तरिक्ष में तरंगित होती रहती हैं। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, प्रत्येक आभ्यं ब्रह्म सूत्ता याज्ञां ब्रह्मे लोकाः मानो देखो, यह याग गति करता रहता है, यह संसार एक प्रकार की यज्ञमयी, आभामयी, ध्वनिमयी, श्रोत्रमयी में ही बेटा! सर्वत्रता में ही ब्रह्म की आभा और ब्रह्म की रचना ही दृष्टिपात आती रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! कुछ तो चर्चाएँ हुई थीं। नाना ऋषि-मुनियों का कुछ विचार-विनिमय हुआ था परन्तु वह विचार एक भव्य आभामय, ज्योतिमय बन करके रह गया। तो मेरे प्यारे! देखो, मानव के जीवन में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार उदधृत होते रहते हैं। उन विचारों को लेकर के, मानव ऊर्ध्वा उड़ान उड़ता रहता है। जो बेटा! देखो, गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, हम सदैव मानो परम्परागतों से एक आभा का जन्म होता रहा है। आज मैं बेटा! विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूंगा क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्दों की आज कुछ अब विवेचना करेंगे, अब मैं अपने वाक्यों को यहीं विराम देना चाहता हूँ।

पूज्य महानन्द जीः- का प्रवचन ओ३म् श्वंजना रथं यज्ञं भविताः देवं अन्तरिक्षो रजशन्नमा देवं भद्रा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि मण्डल! आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, मुझे बहुत समय के पश्चात् कुछ समय प्रदान किया और मैं अपने को धन्य मानता हूँ। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी प्रभु के सम्बन्ध में या कृष्ण जी

के सम्बन्ध में, संदीपन ऋषि के सम्बन्ध में, अपना विचार देते रहे और वह उनका विचार मानो एक अमृतमयी धारा में रमण करने वाला विचार है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय कराया था, कि यह जो आधुनिक काल का जो यह काल है वर्तमान का यह जो जगत है यह अपनी-अपनी आभाओं से बहुत दूरी चला गया है। अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परम्परागतों से ही, कुछ परिचय कराता रहता हूँ और आज भी मैं कुछ परिचय कराने के लिए आया हूँ। बहुत समय हुआ, जब मैंने बहुत से वाक्यों को उद्धृत करते हुए कुछ परिचय दिया था। आज भी मैं वर्तमान में भी अपना कुछ वार्त्ताओं का परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय क्या है? आज मैंने एक युक्तियाँ प्रगट की एक वेद की लोलुक्तियां थी, वे याग के सम्बन्ध में संकेत देता रहता है। एक वाक् यह है कि मानव के सुन्दर रूपों में रमण करने वाला उसका चरित्र उसकी महानता का प्रदर्शन होता रहता है और एक वाक् उसमें विष्णु भवे कृतं ब्रहेन राये नमस्ते आज राष्ट्र की भी चर्चा होती रहती है। जहाँ राष्ट्र की चर्चाएँ होती रहती हैं। जहाँ मानो देखो, भिन्न- भिन्न रहता है जहाँ राष्ट्र की चर्चा होती रहती है जहाँ देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों का उद्गम होता रहता है अथवा उनकी उद्गमता, उनकी भव्यता जो मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहती है जो मानव राष्ट्र की आभा में रमण करने वाला है।

विज्ञान से समाज में अराजकता

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था, कि ये जो संसार है आधुनिक काल का जो यह जगत् है मानो नाना प्रकार की रूढ़ियों वाला जो जगत् है, समाज है, इन रूढ़ियों का विनाश कैसे हो? परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव ने इसका निराकरण करते हुए, बहुत-सी वार्त्ताओं की चर्चा इन्होंने प्रगट की। आज मैं भी उन्हीं वाक्यों में हम जाना चाहता हूँ। क्या मानो देखो, प्रत्येक वस्तु को मानव को व्यापक रूप से दृष्टिपात करना चाहिए। जिस समाज में, जिस मानव में व्यापकवाद नहीं होता वह समाज और वह काल समाज के साथ में इसका परिवर्तन द्वितीय रूपों में परिणत हो जाता है। इससे पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया कि जिस काल में विज्ञान में मानो दूरिता आ जाती है विज्ञान के दूरिता होने के कारण ही राष्ट्र में, समाज में मानो देखो, अराजकता का प्रसारण हो जाता है। जब विज्ञान का दुरूपयोग राष्ट्र जब व्यवसायी बन जाता है राष्ट्र को जब द्रव्य की और पदों की लोलुपता हो जाती है उस समय वह राष्ट्र कुछ काल में रसातल को चला जाता है।

परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया कि ये विज्ञान आपने कहा है। परन्तु देखो, विज्ञान के सम्बन्ध में यह बहुत सूक्ष्म वार्त्ता है आधुनिक काल की जब मैं विद्यालय में, आधुनिक काल के मानो देखो, जब मैं वैज्ञानिकों के समीप जाता हूँ और वैज्ञानिकों से चर्चा करता हूँ कि यह तुमने कितना ऊर्ध्वा में विज्ञान जाना है? तो वह विज्ञान की वार्त्ता प्रगट करते हैं और विज्ञान को कहते हैं हमारा यान कहीं मंगल के लिए गति कर रहा है। कहीं चन्द्रमा के लिए गति कर रहा है। परन्तु ये विज्ञान बहुत पूर्वतम ब्रह्मे आधुनिक जो काल है, वह भी विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है। परन्तु जब मैं पुरातन काल के उस विज्ञान में जाना चाहता हूँ तो आधुनिक काल का जो विज्ञान है जो वह अभी तक मानो देखो, इकाई में भ्रमण कर रहा है। वह इकाई में क्यों भ्रमण कर रहा है? इसके ऊपर मैं आज विचार देना चाहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई वार्त्ताएं प्रगट करते हुए कहा था, विज्ञान की चर्चा करते हुए राष्ट्रों की चर्चा करते हुए, वैदिक साहित्य के मानो देखो, प्रश्नों को जब हम अपने में क्रियात्मक लाना चाहते हैं? तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात होता है क्या उनकी आभाएं कितनी विचित्रता में रही हैं। उनका विज्ञान कितनी महानता में रहा है। परन्तु आधुनिक काल का विज्ञान मानो देखो, सूर्यों की किरणों को अब तक इसके विज्ञान में मानो इकाई क्या इसको जानने को तत्पर होना तो चाहता है परन्तु इतना नहीं होना चाहता। मैंने वह काल भली-भांति दृष्टिपात किया हैं जिस काल में देखो, महाराज हनुमान इत्यादि अपने विद्यालय में, अपनी मानो देखो, विज्ञानशालाओं में, वह एक-एक सूर्य की किरणों को ले करके, यत्रों में,

उससे विद्युत् ले करके उस विद्युत को यन्त्रों में प्रवेश करके, जो आधुनिक काल का जो यन्त्र वह पृथ्वी के रसों से गति करता है, उस काल का जो यन्त्र था, वह सूर्य के रस को ले करके सूर्य की किरण को साथ ले उसी से विद्युत ले करके देखो, वह यान लोकों की परिक्रमा करता रहता था। आधुनिक काल का जो विज्ञान है वह पृथ्वी के रसों को ले करके, पृथ्वी के रसों की कोई सीमा होती है, मानो जिस लोक का यह विज्ञान है, जिस लोक की यह प्रतिभा है, वह उसी की आभा में यह गति कर रहा है परन्तु देखो, पुरातन काल का विज्ञान है वह शक्तिशाली है उस विज्ञान में कोई न कोई मानो देखो, धुरी है और वह धुरियों में गति करता रहता है। परन्तु पुरातन काल का विज्ञान एक महानता की ज्योति में रहा है, उसमें अभिमान नहीं होता क्योंकि राष्ट्र की आभाएं अपनी आभा में मानो निहित है। इसके पश्चात् राजा जब व्यवसायी बना है, जिस काल में, उसी काल में, प्रजा का विनाश हुआ है। उसी काल में अग्नि की धाराओं का, अग्नि की तरंगों का जन्म हो गया हैं जिससे मानव, मानव की प्रतिभा नष्ट हो गई है। मानो इसी प्रकार आज मैं विशेष विवेचना नहीं देना चाहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ मैं परिचय देना चाहता हूँ। आधुनिक काल का वैज्ञानिक चन्द्रमा में जाने के लिए तत्पर हुआ, परन्तु चन्द्रमा से जब कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तब चन्द्रमा की यात्रा में शान्तवना को प्राप्त हो गया है। इसके मूल में क्या-क्योंकि आज का जो विज्ञान है, जो जानकारी के लिए नहीं है वह स्वार्थवादी बना हुआ है। परन्तु पुरातन काल का विज्ञान स्वार्थवादी नहीं था। वहाँ वह जाकर के अपनी आभाओं को अपने यन्त्रों को इतनी चरम सीमा पर ले गए कि चन्द्रमा में जाना, वहाँ के प्राणीमात्र को दृष्टिपात कराना, वहाँ के प्राणियों को, कौन-सा तत्त्व प्रधान वाला प्राणी है वह प्राणी कैसे उड़ान उड़ता है? परन्तु देखो, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को बहुत पुरातनकाल में भी, ये वार्त्ता प्रगट की थी परन्तु देखो, आधुनिक काल का वैज्ञानिक जा करके कुछ मानो चन्द्रमा के रजों को ला करके वह मौन हो गया। परन्तु देखो, अब रहा यह की धर्म और रूढ़ियाँ क्या स्वीकार करती हैं? विज्ञानवेत्ता तो यह कहते हैं कि चन्द्रमा तो एक लोक है परन्तु रूढ़िवादी कहते हैं कि परमपिता परमात्मा का ये एक प्रकाश है, इसमें कोई द्वितीय मानो देखो, सिद्धांत नहीं है, एक ही वाक् आता है, कि वास्तव में चन्द्रमा प्रकाश है और वह चन्द्रमा प्रभु का प्रकाश है, परन्तु वह यह कहते हैं। कुछ प्राणी, ऐसा नही कि सर्वत्रता में है। परन्तु देखो, उसी से संवतसर को स्वीकार करते हैं परन्तु विचार क्या है कि वैदिक साहित्य यह कहता है संवतसर का जो निर्माण हुआ है कि संवतसर का जो उत्पादन होता है वह सूर्य से होता है, वह चन्द्रमा से नहीं होता क्योंकि चन्द्रमा में एक कला नहीं होती, चन्द्रमा में जब एक कला नहीं होती, तो मुनिवरों! अपनां ब्रह्मे। उस एक कला का एक दिवस भी नहीं बनता, जब वह दिवस नहीं बनता, तो वही इसमें माह भी नहीं बनते, इसमें दिवस भी नहीं हैं और जब दिवस भी नहीं बनते, तो अहोरात्र भी नहीं बनते, मनवंतर भी नहीं बनेगा, मनवंत्तर भी नहीं बनेगा तो मोक्ष की प्रतिभा भी नहीं बनेगी।

सूर्य सिद्धान्त से दिवस

परन्तु देखो, ये मैंने एक विचार दिया है, जो विचार अकृतियों में, विचार जाता है परन्तु चन्द्र सिद्धान्त को मानने वाले भोले प्राणियों से, विशेष करके मोहम्मद के मानने वाले मानो चन्द्र सिद्धान्त के ऊपर, वह अपनी आभा को वेद की प्रतिभा को अपने से दूरी कर देते हैं, परन्तु मैं इस विचार में, राजा का, राष्ट्र का कर्त्तव्य उसके क्या यहाँ, बुद्धिमान एकत्रित हो करके सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। एक सिद्धान्त की धारा को अपनाना चाहिए। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानो एक सिद्धांत चला आ रहा है। सूर्य सिद्धांत से, मानो सूर्य की, पृथ्वी की गति बनती है, गति से दिवस और रात्रि बनती है और जब दिवस तथा रात्रि बनती है, उसी से अहोरात्र माह बनता है और माह से वर्ष बनता है और वर्षों से मानो एक कल्प बनता है और कल्पों से ही देखो, अहो व्रीणि, अहो सम्भवे अहो अस्सुतम् मनवंतर बनते हैं। मनवंतर बन करके, इसी गणना आगे वर्णित की जा सकती है।

परन्तु विचार-विनिमय क्या? परन्तु जब चन्द्र सिद्धांत के ऊपर और हम विचार-विनिमय देना प्रारम्भ करते हैं

लोक धटित नहीं होते। एक कला उसकी समाप्त हो जाती है परन्तु देखो, वह कला सूर्य सम्पूर्ण कलाओं से सदैव युक्त रहता है क्योंकि उसका सम्बन्ध द्यौ से है। चन्द्रमा का सम्बन्ध सूर्य से है तो वह जो द्वि कलाओं वाला है उसका सम्बन्ध द्यौ से रहता है तो द्यौ और यह दोनों मिलान करके आभा में गति करते रहते हैं। परन्तु देखो, इस प्रकार यह मैंने यह सूक्ष्म परिचय दिया पूज्यपाद गुरुदेव को।

राष्ट्र निर्माण के लिए समाज के चार बिभाग

आगे जो द्वितीय परिचय देना है हमें, केवल यह है कि हम यह उच्चारण कर रहे थे कि आधुनिक काल का जो विज्ञान है आधुनिक काल की जो परम्पराएं हैं परन्तु देखो, उस आभाओं को, पुरातन की आभाओं में ले जाना चाहते हैं। हमारे यहाँ यह नियमावली परम्परागतों से ऋषि मुनियों ने निर्णयात्मक बनाई कि संसार में निर्णय कौन करेगा? इस समाज का विभाजन हो रहा है, स्वतः विभाजन हो रहा है परन्तु इस विभाजन को बुद्धि युक्त कौन निर्णय दे सकता है? तो विचार गया, भगवान मनु के काल में मनु के काल में विचारा गया कि समाज को किन भागों में नियुक्त करना चाहिए। तो भगवान मनु ने और रेणमानुक ऋषि महाराज दोनों ने समाधिष्ट हो गये और इसी विषय को लेकर कि समाज का कैसे विभाजन होगा और कौन विभाजन करेगा और कितने प्रकार का विभाजन होना चाहिए? यह मानो भगवान मनु जी सूर्य और पृथ्वी के ऊपर मानो देखो, वह अग्नि और पृथ्वी के दोनों के गति ले करके वह अपनी सिद्धांतिक मुद्रा में परिणत हो गये। अपने हृदय की मुद्रा में परिणत हो गये। अपने मन की प्रवृत्तियों को समेट करके, वेद के मन्त्र ने मन को मानो देखो, प्राण की गति को वह मन आभा में रमण कराया वह अपने में मुद्रित हो गए और जब मुद्रा में परिणत हो गये, जब मुद्रित हो गये मुद्रित हो जाने के पश्चात् उन्हें भान हुआ है छः माह तक उन्होंने केवल रसों का पान करके वृक्षों के और उन्होंने समाधिष्ठ हो करके विचार-विनिमय करते हुए मानो अपने-अपने सत्यप्रवे वह छः माह तक उस मुद्रा में रहे। उस छः मुद्रा में रह करके उन्होनें उसके पश्चात् देखो, उनके हृदय में वह आया यह अकाटय सिद्धान्त है समाज का, वह अकाटय सिद्धांत है जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता कि समाज की देखो, मानव की चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं। मानो देखो, इन प्रवृत्तियों के आधार पर भगवान मनु ने अपना एक सिद्धांत बनाया, अपना एक विचार दिया समाज को और विचार क्या दिया, क्या यह जो समाज है, मानो देखो, एक राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए। राष्ट्र के निर्माण की चर्चा भी उन्होंने की। उसके पश्चात्, राष्ट्र की चर्चा के पश्चात् उन्होंने समाज को चार विभागों में विभक्त कर दिया और चार विभाग बन गए समाज के।

विद्यालय से विभाजन वर्ण

मानो देखो, बुद्धिमान है जो तार्किक है जो अणु और परमाणुओं को जानकर के त्याग और तपस्या में परिणत रहने वाला है वह मानो देखो, बुद्धिमान है। उसे आयु का अध्ययन करना चाहिए, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! बहुत पुरातनं ब्रहे सम्भवः देवत्ययां कहा है। हे मेरे पूज्यपाद समभवाः देवत्यां उन्होंने पुत्रों और बेटा कह करके मानो ऋषियों-मुनियों को तथा अपने शिष्यों को सम्बोधित करके कहा था। भगवान मनु ने कहा था क्या हे सम्भवो! सम्भवे ऋेतानि कृति मानो देखो, यह समाज चार विभागों में बुद्धिमान, त्याग और तपस्या में जो निष्पक्ष रहने वाले हैं, जैसे न्यायालय में न्याय करने वाला, जब उसमें पक्ष आ जाता है और निष्पक्ष नहीं रहता तो, वह न्याय नहीं कर सकता। इसी प्रकार देखो, जो ब्राह्मण है, जो बुद्धिमान है, जो विद्यालयों में शिक्षा देता है उस समय वह ब्रह्मचारियों का अध्ययन करता है। ब्रह्मचारियों का अध्ययन कौन कर सकता है? जो मुनिवरों! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो इसको जानते हैं, यह मैं ऐसी वार्त्ता प्रगट करा रहा हूँ। जैसे मानो देखो, सूर्य की एक मानो देखो गृति आवस्ति एक सूक्ष्म सी ज्योति है। परन्तु देखो, मैं उस वाक्यों में नहीं, विचार क्या देखो, जब विद्यालयों में प्रवेश करते हैं, तो भगवान मनु का सिद्धांत स्मरण आता है कि भगवान मनु ने यह कहा था कि जब समाज का विभाजन हो तो

आचार्यजन, बुद्धिमान मानो देखो, ब्राह्मणजन होकर के, वह अध्ययन करने वाले हों और ब्रह्मचारियों के मस्तिष्कों का अध्ययन करें, उनकी प्रवृत्तियों का अध्ययन करें। तीन दिवस तक इसीलिए तीन रात्रि और तीन दिवस में मानो देखो, उसकी जानकारी हो। पठन पाठन का कर्म कैसा है? उस पठन पाठन में कैसी प्रवृत्तियाँ हैं? मानो देखो, जब इस प्रकार का अध्ययन आचार्यों का होता है उस अध्ययन के साथ-साथ, उस अध्ययन की प्रतिक्रिया में जाकर के वह अपने में जाकर के वह अपने में समाज का वह निर्माण करते हैं। देखो, शुद्र का एक बालक है एक बालक क्षत्रिय का है एक राजा का पुत्र है एक पंक्ति में भोज्यपान करने वाले हैं। पंक्तियाँ लगी हुई हैं आचार्य अध्ययन कर रहा है उस अध्ययन को लेकर के अपनी आभा में परिणत होते रहते हैं और वह समाज का निर्माण कौन करता है? शूद्र का बालक, ब्राह्मणतव को प्राप्त होता है और उसी वैश्य का पुत्र ब्राह्मण और ब्राह्मण के कुल में जन्म लेने वाला वैश्य बन सकता है। जैसे जिसकी प्रवृत्ति हो। इसका निर्माण विद्यालयों में होता है। जब विद्यालयों में इनका निर्माण होता है, तो विद्यालय पवित्र होने चाहिएं। मानो देखो, कौन करेगा? इसका समाज के अध्ययन, समाज के विभाजन को कौन निर्णन दे सकेगा। वह जो विद्यालय में आचार्य विद्यमान है वह इसका निर्णय देगा। परन्तु देखो, जब मैं इस मनु के सिद्धांत को, मनु के विचार को, जब मैं यह विचारता रहता हूँ यह इतना अकाटय है देखो, एक शूद्र है जो केवल सेवा कर सकता है वह अकृतम उसके गृह में जन्म लेने वाला बालक पुत्र भी देखो, ब्राह्मण बुद्धिमान बन सकता है। इस प्रकार की आभा जब भगवान मनु ने क्रेतकेतु ऋषि इत्यादियों ने प्रगट किया था।

आधुनिक काल का शिक्षक

परन्तु हे पूज्यपाद गुरुदेव यह तो पुरातन काल का समाज रहा। परन्तु देखो, जब मैं आधुनिक काल के विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, पुरातन काल के विद्यालयों में तो मैंने अध्ययन किया है आपने भी अध्ययन किया और भी नाना आचार्यों ने अध्ययन किया है और अध्यापन का कार्य भी किया है और निर्णय देने का भी कार्य किया है, परन्तु जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली, आधुनिक जगत् का शिक्षक समाज है आधुनिक काल का जो गुरु समाज है वह कैसा बन गया है? उस पर विचार मुझे देना है परन्तु देखो, इसके ऊपर विचार देना है हमारे यहाँ यह देखो, कोई भी किसी प्रकार की संसार में भाषा हो। कोई भी भाषा हो, चाहे वह चन्द्रमा की भाषा हो, चाहे वह मंगल की भाषा हो, चाहे वह किसी भी राष्ट्र की भाषा हो, वह जिस राष्ट्र की भाषा हो, उस भाषा में यदि चरित्र नहीं है। जिस भाषा में यदि उच्चारण करने का अधूरापन हो तो देखो, उस भाषाओं के गर्भ में अचरित्र विद्यमान रहता है। जैसे मानो कोई भी भाषा को वह पूर्ण रूपेण नहीं होती है। एक वाक् है और वह वाक् लगभग देखो, कई प्रकार जैसे उसके कई प्रकार होते हैं यह सिद्धांत परम्परा का है। परन्तु वह एक ही वाक् है देखो, कितने मानो नाती इत्यादियों को एक ही भाषा में परिणत किया जाता है तो वह भाषा में अधूरापन होता है इस भाषा के गर्भ में जहाँ भी अधूरापन होता है उस अधूरेपन के गर्भ में मानो देखो, अविज्ञान और जो अधूरेपन के गर्भ में यहाँ ऐसा हम मानते हैं कि उसके गर्भ में अचरित्र मानो विद्यमान रहता है और जिस भाषा में रूपेण रहता है, जैसे देवताओं की भाषा है, देव भाषा है, इसी प्रकार जैसे वेद की पवित्र देखो, आभा कहलाती है, उसको हम आभा कहते हैं। इसी प्रकार उसका रूपांतर किए हुए को, हम भाषा कहते हैं परन्तु वह रूपेण जो शब्द जहाँ है वह शब्द वहीं उच्चारण किया जाए, जैसे हमारे यहाँ गौ नाम का शब्द है, गौ नाम कई प्रकार से उच्चारण किया जाता है। गौ नाम पृथ्वी है तो उसके गर्भ में, गौ नाम के प्रारम्भ के गर्भ में चरित्र विद्यमान है परन्तु इसी प्रकार यह जो नाना प्रकार का एक सिद्धांत मानो देखो, कृतियों में रमण कर रहा है वह चक्र के रूप में गति कर रहा है, वह भाषं ब्रहे होना चाहिए। इसके पश्चात् आचार्यों के कुल में जब मैं प्रवेश करता हूँ तो आयुर्वेद का अध्ययन नहीं प्राप्त होता, अध्ययन नहीं किया जाता। आयुर्वेद का अध्ययन जब नहीं होता, तो ब्रह्मचारी के मस्तिष्क का अध्ययन कैसे किया जायेगा? परन्तु जब यह अध्ययन नहीं होगा तो यहाँ ब्राह्मण समाज का या

विभक्त व्यक्तियों का कैसे जन्म होगा? यह जन्म इस प्रकार नहीं हो रहा, यह न होने के कारण ही यहाँ समाज में रूढ़ियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उन रूढ़ियों का परिणाम यह है कि राष्ट्र-राष्ट्र को अपने तक लाना नहीं चाहता है।

इसी प्रकार जब मैं यह विचारता रहता हूँ, कि आधुनिक काल के जगत् को, कि हम जब राष्ट्र को, राष्ट्रवेत्ताओं के द्वार पर जाते हैं, तो राष्ट्रवेत्ताओं की मानो देखो, सभाएं होती हैं, विचार होते रहते हैं। मानो द्रव्य के आधार पर, जिस राजा के राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली का उद्गम होगा, वह कुछ काल में शिक्षा प्रणाली नेत्रहीन बन जाएगी। मानो आज मैं वर्तमान काल में, जो दृष्टिपात कर रहा हूँ वह ये है- क्या शिक्षा प्रणाली देखो, राष्ट्रवेत्ताओं के द्वार पर जब यह पहुंचती है तो केवल आधुनिक काल का जो समाज है, आधुनिक काल का जो शिक्षक वर्ग है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में है, चाहे वह किसी भी राष्ट्र में है परन्तु द्रव्य के एकत्रित करने में लगा हुआ है। एकत्रित द्रव्य को पदम् ब्रह्मे मानो देखो, वह जो द्रव्य है, जब द्रव्य एकत्रित करने में लगा हुआ है तो उनके यहाँ होने वाला जो सन्तान है, होने वाला जो पुत्र है परन्तु वह पवित्र और महान् नहीं बन पाता। क्योंकि जैसा द्रव्य आता है, वैसी उनकी संतानों को मानो उसी प्रकार की शिक्षाओं का वायुमण्डल बन जाता है और वायुमण्डल बन करके वह नाना आभा में, नृत्यों में अरूण ब्रहे उत्पन्न आवृत्तियों में ओत-प्रोत हो करके, अपने ब्रह्मचर्यव्रत को नष्ट कर रहा है। आधुनिक काल का समाज, जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, तो ब्रह्मचारीजनों ने मानो देखो, ब्रह्मचर्यजन अपने को ब्रह्मचारी नहीं कहता, अपने को ब्रह्मवर्चोसि नहीं कहता। विद्या का अध्ययन करने वाला, अपने को गार्हपथ्य अग्नि नहीं कहता, परन्तु देखो, वह कहता है कि यह पराः यह तो वार्त्ता वृद्ध हो गई है। अरे! मेरे भोले प्राणियों! यह वार्त्ता वृद्ध नहीं हैं संसार में सभी प्राणियों को वहीं आना है जिसे तुम वृद्ध कहते हो, वहीं पहुंचना है परन्तु देखो, जब बाल्यकाल में, शिक्षकों की सूक्ष्मता, आचार्यजन जब ब्रह्मचारियों पर मोहित हो करके शिक्षा प्रणाली की आभा बन जाती है तो कैसे विद्यालय ऊँचे बन सकते हैं? परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि यहाँ आभा में रमण कराना हैं मेरी पुत्रियों को आज के आचार्यों को गृह-सूत्रों का पठन पाठन नहीं कराया जाता है। परन्तु देखो, जहाँ उसके जीवन की चरी बनती हो, जीवनचर्या बनती हो। जहाँ जीवनचर्या नहीं बनेगी, वहाँ शिक्षा प्रणाली भी क्या रह सकेगी? परन्तु इस प्रकार का जो एक समूह बन रहा है, एक विचार बन रहा है, यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराएं बन रही हैं। आज जो राष्ट्रवेत्ता हैं, उनकी जो संतानें हैं, पुत्र-पुत्रियाँ हैं उनका जो नृत्य हो रहा है, उनकी जो अग्रा है वह ऐसे विद्यालयों में है जहाँ अनुशासन रहता है, साधारण जो समाज है उसकी सन्तान, उसके पुत्र-पुत्रियों ऐसे विद्यालयों में हैं जहाँ अनुशासन का नामोकरण भी नहीं किया जाता तो समाज, राष्ट्र कैसे ऊंचा बन सकता है? ऐसा खिलवाड़ हो रहा है इस समाज में।

रूढ़ियों से अज्ञान

परन्तु देखो, इसके ऊपर बुद्धिमान विचारक विचार-विनिमय करते चले जाएं और विचारें हम समाज को कैसे ऊंचा बना सकते हैं यदि संसार को, राष्ट्र को ऊंचा बनाना है तो समाज को अपनी रूढ़ियों को त्यागना होगा, धर्म की रूढ़ियों को त्यागना होगा, परन्तु वह जो रूढ़ियों हैं, वह रूढ़ियाँ मानो देखो, राष्ट्र के जीवन को विनाश के मार्ग पर ले जा रही हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार देने वाले विचारक, विचार केवल एक होता है। विचार अनेक नहीं होते, भिन्न-भिन्न नहीं होते विचारों का एकीकरण होता है धर्म एकोकीकरण होते हैं, धर्म भिन्न-भिन्न नहीं होते, धर्म एकोकीकरण है। परन्तु आधुनिक काल के राष्ट्रवेत्ताओं के द्वारा पर जाता हूँ तो वह नाना धर्म कहने लगता है, वह कहता है कि हम नाना धर्मों को इनकी विचारधाराओं का हम सम्मान करते हैं परन्तु जब मैं यह कहता हूँ हे भोले प्राणियों! संसार में नाना धर्म तो होते ही नहीं, धर्म तो केवल एकोकी वचन है, एकोकी ही चरण है परन्तु देखो, वही चरण एकोकी की व्याख्या करोगे, तो तुम्हारा राष्ट्र जीवित रह सकेगा, और यदि तुम नाना धर्म उच्चारण करते रहोगे, नाना धर्मों को एक सूत्र में लाना चाहते हो, तो वह सूत्र

ही नष्ट हो जायेगा, वह आभा में रमण नहीं हो सकेगा। धर्म को एक आभा में, एक सूत्र में लाने का तुम प्रयास करो। एक सूत्र में लाना है धर्म को।

धर्म का स्वरूप

धर्म किसे कहते हैं? देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में, वह वाक् प्रगट किए हैं, कई काल में उन वाक्यों की विवेचनाएँ की हैं। आज मैं उन वाक्यों में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल यही देना चाहता हूँ, कि मानव की इन्द्रियों में सर्वत्र धर्म विद्यमान रहता है। वह सर्वत्र ही एकोकी धर्म विद्यमान रहता है, धर्म केवल एकोकी चरण है, नाना चरणों में नहीं रहता। नाना चरणों में रहेगा, तो विकृति आ जाएगी। समाज में नाना प्रकार की आभाओं का जन्म हो जायेगा, इसके पश्चात् हमारे यहाँ गुरु-शिष्य की जो परम्परा है, मैंने भी पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत होकर के, बहुत-सी शिक्षाओं का अध्ययन किया है और नाना ऋषियों की परम्परा चली आ ही है परन्तु योग को दृष्टिपात करके आचार्य शिक्षा देता है, आचार्य वर्णों का निर्माण करता है कि वह क्षत्रिय है, यह ब्राह्मण है, यह वैश्य है और यह क्षुद्र है, समावर्ती है। इस प्रकार की संज्ञा विद्यालयों में निर्माणित होती है और राजा का यह कर्त्तव्य है कि प्रत्येक विद्यालय में इस प्रकार के विचार होते चले जाए, तो राजा के राष्ट्र की रूढ़ियाँ नष्ट हो जायेगी। जब तक रूढ़ि रहेगी तब तक मानव की स्वार्थ की प्रवृत्ति बलवती होती रहेगी। जब स्वार्थ बलवती हो जाता है तो उस काल में, उस राष्ट्र में, समाज में अन्धकार छा जाता है और वह जो अन्धकार है वही राष्ट्र और समाज को रसातल में ले जाता है।

विचार-विनिमय क्या? मैं विशेष चर्चाएँ नहीं देना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मुझे समय की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। विचार केवल यह है कि आज हम परमपिता परमात्मा की चर्चा को, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव करते रहते हैं। कई समय से वह यौगिक मुद्राओं के सम्बन्ध में अपने विचार देते रहते थे। प्रत्येक आभा में रमण करा रहे थे, कि वह जो हर्षोमय उल्लास होते हैं, अनुष्ठान होते हैं उनके। वह देखो, मुद्राओं के ऊपर चर्चा कर रहे थे, ये मुद्राएं हमारे यहाँ, परम्परागतों से साधना में सहायक बनी हुई हैं। वे सहायक बनती रहती हैं परन्तु यह सब विद्यालयों में, मुद्राओं का ज्ञान आचार्य विद्यालय में ब्रह्मचारियों को परिणत कराते रहते हैं। मैंने भी कई काल में, जब मैं विद्यालयों में अध्ययन करता था तो इन मुद्राओं के ऊपर मानो विचार आचार्य देते रहते थे। ये मुद्राएं सब विद्यालयों में प्रवेश कराई जाती थी। आधुनिक काल के विद्यालयों में जब प्रवेश करता हूँ तो विचर-विनिमय में करता रहता हूँ तो तब अर्थात् मुद्राओं का जो ज्ञान है तो वह कहते हैं कि हमें मुद्रा कदापि नामोकरण भी नहीं किया परन्तु कहाँ से है। जब उस शिक्षा प्रणाली को तुम क्रियात्मक नहीं बनाते। तो जीवन तुम्हारा इसी प्रकार चलता रहेगा।

विचार क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह अध्ययन की परम्परा प्रगट करा रहा हूँ। जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, तो अनाधिकार को जब शिक्षा देने का अधिकार प्राप्त होता है। द्रव्य की लोलुपता के कारण, तो राष्ट्र और विद्यालय जीवन को नष्ट करते चले जा रहे है। इसी प्रकार आज के विचार-विनिमय क्या? मैं कोई विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परिचय देने आया हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना परिचय देते रहते हैं आज मैं भी उन विचारों में गम्भीर मुद्रित होना नहीं चाहता हूँ। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। मुझे कल समय मिलेगा, तो मैं आधुनिक काल के विज्ञान के ऊपर कुछ चर्चा प्रगट करूंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी-अभी अपना कुछ विचार दिया, परन्तु इन विचारों में मानो कर्मठता और विचारशीलता है। आज का हमारा जो विचार, जो धाराएं केवल मुद्रा के ऊपर हम विचार व्यक्त कर रहे थे। मेरे पुत्र महानन्द जी ने अभी-अभी अपने विचार देते हुए कहा कि विद्यालयों में वर्ण-व्यवस्था के ऊपर अपना विचार दिया। वर्ण-व्यवस्था राष्ट्र में, विद्यालयों में होनी ही चाहिए। उनका निराकरण एक

आभा में राष्ट्रीय उद्गमों में होना चाहिए। यह विचार बहुत प्रिय लग रहे थे। परन्तु कल भी मेरे प्यारे महानन्द जी अपने कुछ विचार व्यक्त करेंगे। आज का हमारा यह विचार समाप्त होने जा रहा है। आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि मानव अपने जीवन को कैसे ऊंचा बन सकता है? राष्ट्र और समाज कैसे ऊँचे बन सकते हं? मेरे पुत्र यह कहाँ करते हैं कि राष्ट्र में रूढ़ि नहीं होनी चाहिए। क्योंकि रूढ़ि ही समाज का विनाश करती है। रूढ़ियों में, विचारों में परिवर्तन आते रहते हैं ऐसा ये कहते हैं परन्तु रूढ़ियों के सम्बन्ध में भी ये विचार देते रहते हैं। आज का विचार हमारा क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए परमात्मा के राष्ट्र में परमात्मा के भव्य जगत् में हम मानो ब्रह्माण्ड की रचना के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए ब्रह्म को हम अपने कृतियों में दृष्टिपात करते हुए जिससे हमें यह भान हो कि प्रत्येक वस्तु की जो रचना है वह प्रभु ही करता हैं जैसे माता के गर्भस्थल में शरीर की रचना होती है, कैसी सुन्दर वाणी प्रभु ने निर्माणित की है? माता नहीं जानती कौन निर्माणवेत्ता है, पिता नहीं जानता कौन निर्माणवेत्ता है? परन्तु सूक्ष्मसा सन्निधानमात्र से ही कर्म किया है, उस कर्म की रचना का जो स्वरूप है वह प्रभु के द्वार पर है, प्रभु ही रचना कर रहा है, कहाँ-कहाँ के सम्बन्ध संबधित किये हैं। कही चन्द्रमा को माता के जीवन से, गर्भ से परिणत किया है। सूर्य को, वशिष्ठ अरुणधती मण्डलों को नाना प्रकार के मण्डल उसमें ध्वनित रहें हैं और वे ध्वनियाँ हो रही हैं। ये चर्चा भी कल हम प्रगट करेंगे। वे जो ध्वनियाँ हैं अपने में ध्वनित होती हैं, अपनी आभा में रमण कर रही है। यह आज का विचार, अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन पाठन होगा। स्थान : लाक्षागृह बरनावा।

७ भगवान कृष्णा का गुरु संदीपन

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है।

मानो जो ये स्वर ध्वनि हो रही है जिस ध्वनि के सम्बन्ध में, बहुत पुरातन काल से ही चर्चाएँ होती रहती हैं और ऋषि-मुनियों के मस्तिष्को में, इस ध्वनि का प्रायः वर्णन होता रहता है, तो मेरे पुत्रो! वह ध्वनि कौन-सी है? जिस ध्वनि के आ जाने के पश्चात् मानव के जीवन में एक महानता का दिग्दर्शन होता है क्योंकि महानता के लिए, परम्परागतों से ही, मानव प्रयास करता रहा है और ये विचारता रहा है कि मेरे जीवन में आनन्द होना चाहिए। चाहे वह बेटा! राष्ट्र हो, चाहे वह ब्रह्मवेत्ता हो, चाहे वह गायक हो, चाहे वह घन-पाठन में गाने वाला ब्रह्मचारी हो, परन्तु उसका एक ही उद्देश्य रहता है कि मेरे जीवन में एक आनन्द होना चाहिए। एक आनन्द की ध्वनि होनी चाहिए। परन्तु विचार आता रहता है, जहाँ आनन्द का प्रदर्शन होता रहता है जहाँ आनन्द की प्रतिभा आती रहती है वहीं मेरे प्यारे! देखो, एक दुखद की भी ध्वनि होती है। परन्तु दुखद की ध्वनि में भी कहीं-कहीं मुनिवरों! देखो, एक परमानन्द का गायन प्राप्त होता है।

माता की ममत्व पूर्ण ध्वनि

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें ऐसे, विचारों को देने के लिए आया हूँ जिन विचारों में एक महानता विद्यमान रहती है। माता के गर्भस्थल में शिशु है, परन्तु जब वह माता के गर्भ स्थल से पृथक होता है तो माता को अपार एक कष्ट एक आभा में एक दुखद ध्वनि होती है। परन्तु जब वह बाह्य जगत् से पृथक होता है तो उस माता के मानो अन्तःकरण में एक आनन्द की ध्वनि होने लगती है। तो मुनिवरों! देखो, वह जो आनन्द की ध्वनि है वह ममता से परिपूर्ण है। परन्तु यदि वह कर्त्तव्य से पूर्ण हो जाए कर्तव्य से परिपूर्ण हो जाए तो माता और पुत्र दोनों ही अपने में विकासवादी बन करके, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बना सकते हैं। परन्तु यदि माता की ध्वनि जैसे हृदय में मानो प्रकाशित हुई, ध्वनि आनन्दित बनी दुखद के पश्चात्, परन्तु यदि वह ध्वनि मोह-ममता तक ही सीमित रह गयी, तो मानो देखो, कोई भी वस्तु उसे प्राप्त नहीं होती। वह दोनों आभा मैं रमण करने वाला जो जीवन था केवल ममता के आधार पर रह गया। परन्तु वह कर्त्तव्य की वेदी पर नहीं आ सका। यदि वह कर्त्तव्य की वेदी पर आ जाए, तो मुनिवरों! देखो, ममत्वां देवो भव वषणा वह माता पवित्र बन जाए और बाल्य भी पवित्र बन जाए और राष्ट्र और समाज उसमें में एक महत्ता की ज्योति प्रकाशित हो जाए।

तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विशेष चर्चा भी देने नहीं आया हूं, विचार ये देने के लिए आया हूँ कि मानव को अपने जीवन में, एक महान ध्वनि को अपनाना चाहिए। जो माता भी ध्वनिवादी है परन्तु वह भी स्थिर रह करके मौन रह करके जब अपने में मुद्रित हो जाती है, अपने में मुद्रित हो करके वह आभा में रमण कर जाती है। जैसे भगवान कृष्ण ने महात्मा संदीपन ऋषि महाराज से ये कहा था एक समय क्या हे भगवन! मैं विराट स्वरूप ब्रह्म को जानना चाहता हूँ। वह जो ब्रह्म का विराटमयी स्वरूप है उसे मैं जानना चाहता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि अपान और प्राण का दोनों का समन्वय कैसे करता है साधक? मेरे प्यारे! देखो, जब भगवान कृष्ण ने ये बाल्य काल में युवा अवस्था में मेरे पुत्रों! देखो, भगवान कृष्ण की आयु, उस समय मानो देखो, २० वर्ष २२ दिवस की आयु थी। जब ये उन्होंने यह प्रश्न किया तो महात्मा संदीपन ऋषि क्योंकि इस योग के मर्म को जानते थे, जहाँ वह व्याकरण के, ध्वनियों के मर्म को जानते थे वहाँ मुनिवरों! वह योग की प्रतिभा को भी जानते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, योग की प्रतिभा में ले जाते हुए, उन्होंने कहा कि तुम अपान और प्राण की आभा को कृष्ण तुम जानना चाहते हो यह प्रश्न तुम्हारा बड़ा एक महान् है? क्योंकि इस अपान और प्राण के मिलान करने वाले बहुत से ब्रह्मवेत्ता हुए हैं। मानो देखो, इसमें बहुत बुद्धिमान हुए हैं। तुम राष्ट्र और समाज की चर्चा करो, तुम विज्ञान की चर्चा करो। परन्तु उन्होंने कहा, नहीं, प्रभु! मेरे हृदय की यह आकांक्षा है और मैं चाहता हूँ कि मैं संसार में विराटमयी ब्रह्म को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय भगवान कृष्ण से संदीपन ने कहा हे ब्रह्मचारी! आओ, तुम विराजो! मानो वह विराजमान हो गए। उन्होंने कहा योग की आभा में तुम गमन करना चाहते हो। सबसे प्रथम उन्होंने अग्नि और गति दोनों की मुद्रा को उन्होंने मुद्रित करना प्रारम्भ किया। मेरे प्यारे! प्राण पर मन को जब आभाषित कर दिया, जब प्राण और मन दोनों का समन्वय, दोनों एक सूत्र में जब परिणत हो गए तो मानो देखो, वायु का जो वेग था, वह नाभि केन्द्र से प्रकाशित होता हुआ, गति करता हुआ मुनिवरों! देखो, प्राण की, मस्तिष्क में जो टिकटिकी मानो कृतिका है उसमें मुनिवरों! देखो, स्थिरता आ जाती है। आज मैं इस योग की आभा को तुम्हें परिचय दूंगा, केवल इच्छा सर्वत्र रूपेण में अनुभव की चर्चा नहीं करुंगा, केवल परिचय दूंगा और वह परिचय क्या है? जब टिकटिकी अस्वानम् हो जाती है वह जो कृतिका है जिसे हम त्रिवेणी कहते हैं जहाँ दोनों प्राणों का और मन का और प्राण और अपान का नाभि केन्द्र से समन्वय हो करके, दोनों का मिलान होता है। वह मूलाधार में भी होता है, नाभि चक्र में भी होता है। नाभि चक्र से वह आभां तत्त्वमन्नेवाः मेरे प्यारे! देखो, त्रय के स्थान में, तीनों प्रकार के, परमाणुओं का मिलान हो जाता है। क्योंकि वास्तव में, इस मानव शरीर में प्राण, अपान और उदान इन तीनों प्राणों के मानो देखो, एकाग्र करने से ही योग सिद्ध हो जाता है। कैसे होता है? प्राण में से मुनिवरों! देखो, जितना भी ये अन्तरिक्षवाद है, लोक-लोकान्तरों वाद है, इसमें ये जो परमाणुओं का उद्गम होता रहता है उसका वैज्ञानिक बन के, वह विज्ञान प्रकृति का इस अन्तरिक्ष की आभा में रमण हो जाता है। परन्तु जब यह अपान में जाता है तो निचला स्थान जो है पृथ्वी का गर्भ है, खाद्य और खनिज है, मुनिवरों! देखो, प्राण-अपान के मिलान होते ही दोनों के मुनिवरों! देखो, दोनों विज्ञान का स्पष्टीकरण हो जाता है। परन्तु जब उदान को लिया जाता है इसमें उदान का मिलान किया जाता है तो उदान के मिलान से मुनिवरों! देखो, जितना चित्त का मण्डल है वह नाना जन्म-जन्मांतरों का है, करोड़ों जन्मों का क्यों न हो परन्तु उसके संस्कार उसके समीप मानो नृत्य करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, ये तीन प्राण माने गए हैं प्राण, अपान और उदान इनकी त्रैति ही आभा को जानने से योगी बेटा! योगी योग सिद्ध हो जाता है।

आज मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। आज मैं योग के विद्यार्थी का आश्वासन देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह कि इनका मिलान कैसे? मानो देखो, यह समाधि ध्यानावस्थित ये मुद्रिका बनती है और मुद्रिका बन करके जब मन को एकाग्र किया जाता है तो ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु, उसके समीप आकर के प्रकृतिवाद नृत्य करने लगता है और वह नृत्य का बहुत-सा अनुभव ऐसा है जिसका वर्णन करता है, बहुत-सा अनुभव ऐसा है, जिसका बाह्य जगत में हम वर्णन नहीं कर सकते। तो विचार-विनिमय क्या? क्या मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कहता है, कि हम प्राण, अपान और व्यान तीनों का समन्वय करने से हमें बेटा! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतीति होने लगती है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार-विनिमय क्या, मेरे प्यारे महानन्द जी मानो देखो, कुछ विज्ञान की चर्चाएँ करते रहते हैं। मानो आज भी इन्होंने कहा है कि मैं विज्ञान के ऊपर कोई विवेचना करूंगा। परन्तु आज मेरे पुत्र, कुछ यागाम् ब्रह्मेः वसुरन्धनं वाचनं गतप्रवस्तोः यह आज कुछ मानो अपने विचार व्यक्त करेंगे।

पूज्यपाद महानन्द जीः- ओ३म् गतौ सर्वा भद्राणि में मन वाचाः नमा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी, कुछ आध्यात्मिकवाद विज्ञान की चर्चा कर रहे थे। इनके विचारों में, एक ऐसी महत्ता का प्रदर्शन होता है। जब हम इनके चरणों में ओत-प्रोत हो करके इस विद्या का अध्ययन करते थे, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव चरणों में ओत-प्रोत करा करके, इस यौगिक साधना को भली भांति प्रगट करते रहते थे। परन्तु आज मैं ये विचार देने के लिए नहीं आया हूँ, कि मैं अपने बाल्यकाल को ले करके, अपनी एक धारा को अपनाने के लिए प्रारम्भिक रचनाओं में परिणत हो जाँऊ। केवल हमारा विचार ये है कि इससे पूर्व काल में, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय दे रहा था, और वह परिचय था कि हम अपने में महान और अपने में विचित्र कैसे बन सकते हैं? मानो राष्ट्र, समाज और मानवता को कैसे ऊँचा बना सकते हैं? इससे पूर्व काल में, मैं मनु जी की चर्चा कर रहा था। मनु जी क्या कहते थे? मनु जी की विवेचना करने वाला, मानो इस संसार में बहुत से ऋषि मुनियों का जीवन, मुझे स्मरण आता रहता है। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी प्रगट करा रहे थे क्या **साधक ही संसार में वेद की प्रतिभा को जान सकता है** मानो तपस्वी ही संसार में उस तपोमयी ब्रह्म की आभा को जान सकता है।

मुद्राओं से मनन की प्रक्रियां

परन्तु आधुनिक काल वर्तमान का जो यह काल है, पुरातन काल को आधुनिक काल से जब मैं तुलना करने लगता हूँ तो आश्चर्य आता है। मानो देखो, आज का मानव आज का मानव, एक-एक वेदमन्त्र को ले करके मानो उसके ऊपर नाना प्रकार की अशुद्धियां, टिप्पणियाँ करता रहता है और जब वह टिप्पणी करता है वह कुछ ऐसा विद्यालयों में भी टिप्पणियाँ होती रहती हैं, कहाँ एकान्त स्थलियों पर भी टिप्पणियाँ होती रहती हैं, और वह टिप्पणियाँ भी अशुद्धता में परिणत हो रही हैं। जब मैं ये विचारता हूँ अरे, भोले प्राणियों! वेद के विषय को यदि तुमने वेद के ऊपर मन्त्र के ऊपर चिन्तन करना है तो उसके ऊपर मनन करना होगा। और वह जो मनन की शैली है, वह जो मनन की प्रतिभा है वह तुम्हें मानो मुद्राओं से प्राप्त होगी। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई काल से मुद्राओं के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहे हैं। अपने हृदय में जब मानव अपनी इन्द्रियों की प्रतिभा को आन्तरिक जगत् में ले जाता है तो उस समय नाना विचारों की अनुभूतियाँ होने लगती है। परन्तु जब मैं अनुभूतियों के क्षेत्रों से भी ऊर्ध्वा गति में जाने के लिए तत्पर होता हूँ तो आधुनिक काल के भौतिक काल के विज्ञान के ऊपर अपना विचार देने के लिए हम किसी-किसी काल में पूज्यपाद गुरुदेव से समय लेते रहते थे और अपने विचार, अपने हृदय की वेदना को सदैव प्रगट करते रहते हैं।

गुरुदेव का जीवन

आज जिस स्थली पर हमारी ये आकाशवाणी जा रही है वहाँ वेदों का पठन-पाठन हो रहा है। वहाँ मेरा हृदय बहुत प्रसन्न रहता है जब वेदों का गान होता है। परन्तु जहाँ हृदय में प्रसन्नता होती है वहाँ मानो देखो, हृदय में एक मानो देखो, व्याकुलता भी होती है। मैं यह स्मरण कराता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते ही हैं। परन्तु मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ वो समय था जब, ऐसे-ऐसे याग होते थे। पुत्रेष्टि याग होते, वृष्टि याग होते अग्निष्टोम याग होते, वाजपेयी याग होते। मानो उस समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को कजली वनों में से मानो जहाँ सिंह अपनी ध्वनियाँ करते रहते हों, मानो गज अपनी ध्वनियाँ करते रहते हों, मानो कजली वनों से ला-ला करके ब्रह्मचारी के द्वारा यागों की रचना होती रहती थी। परन्तु आधुनिक काल का जब मुझे पूज्यपाद गुरुदेव का वह जीवन आधुनिक वर्तमान और पुरातन काल का जीवन स्मरण आता है तो हृदय मानो देखो, मैं प्रभु को ही धन्यवाद क्या? प्रभु! की कृतिका का वर्णन करने लगता हूँ। प्रभु तू अनुपम है। तेरी महिमा कैसी विचित्र है? तू मानव को कहीं का कहीं पहुंचा देता है कर्म की आभा के ऊपर। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं पूज्यपाद गुरुदेव

को यह वर्णन करा रहा हूँ कि हम आज विज्ञान के ऊपर वैज्ञानिक स्थलियों में जब प्रवेश करते हैं परन्तु पुरातन काल का जो वैज्ञानिक था, यह प्रजा को, वह समाज को, वह विद्यालय में ब्रह्मचारियों को मानो यह शिक्षा देता था कि संसार में निर्भय रहना चाहिए। किसी प्रकार की भी मानव को भय की आभा नहीं आनी चाहिए। मानव सदैव जब अप्रतम पामराति अस्तो जब पामर प्रवृत्ति बन जाती है तब मानव में नाना प्रकार की मानो देखो, शंका, लज्ञा उत्पन्न हो जाती हैं। आधुनिक काल का जो वैज्ञानिक है वह नाना प्रकार से मानव को मानो देखो, भय की प्रतीति देता जा रहा है। अहा, मानव को निष्क्रिय बना रहा है। विज्ञान के सदुपयोग के स्थान में दुरूपयोग होता जा रहा है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय कराया है कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक, मानो देखो, चन्दमा की क्या, सूर्य की क्या, मंगल की यात्रा में मानो अपने को सफलतम् स्वीकार करता है और यह कहता है कि मैं मंगल में चला गया हूँ। यह जो मंगल मण्डल है मंगला धत्वहे प्रहे अस्तो इस में मानव का यान गति कर गया है। जब मैं यह विचार ले करके मैं जब महात्मा ध्रुव वाले और महात्मा नारद मुनि की विज्ञानशाला में प्रवेश करता हूँ देखो, देवर्षि नारद और महात्मा ध्रुव देखो, जब वह उनका विद्यालय मुझे स्मरण आता है तो महात्मा ध्रुव अपने यान में विद्यमान हो करके, सूर्य की किरणों से विद्युत को ले करके वह मानो देखो, नाना स्वाति लोकों की परिक्रमा करता रहा है जो मंगल से भी ऊर्ध्वा में मण्डल गति करने वाले हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा था, यह जो विज्ञान है इसकी स्थिरता भी मानव के तप के द्वारा रहती हैं यदि मानव में तप नहीं है। मानव वैज्ञानिक तपस्वी नहीं है तो विज्ञान भी स्थिर नहीं रह सकता। विज्ञान मानो देखो, कणों में परिणत हो जायेगा या विनाशता में परिणत हो जायेगा। ऐसा मानो देखो, मुझे स्मरण है। आधुनिक काल में विद्यालयों में मैं प्रवेश करता हूँ तो मानो देखो, वहाँ शिक्षा दी जाती है विज्ञान की, परन्तु क्रियात्मक जो जीवन है उससे मानव इतना कटिबद्ध नहीं जितना होना चाहिए। ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है, विद्यालय में प्रवेश हो रहा है, परन्तु देखो, जब उनका क्रिया-कलाप, उनकी कृतिका दृष्टिपात आती है तो हृदय में एक मानो कम्पायमानता दृष्टिपात आने लगती हैं।

पुरातन यन्त्र

आज मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ! पुरातन काल के मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विज्ञान की चर्चा करते हुए बहुत से रहस्यों को उद्धृत किया है! जो आधुनिक काल का वैज्ञानिक उन तथ्यों से मानो दूरी रहता है। आधुनिक काल का वैज्ञानिक तो ऐसा यन्त्र भी निर्माणित नहीं कर सका है जो मानव एक स्थली पर मानो किसी प्रकार की उद्दण्डता कर गया है और उस उदण्ड वाले प्राणी का, वह चला गया है परन्तु उसका चित्र लें-लें। ऐसा कोई यन्त्र अब तक निर्धारित नहीं हुआ। परन्तु देखो, पुरातन काल के ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं, भारद्वाज और वशिष्ठ मुनि आश्रम में, उद्दालक आश्रम में, ऐसे ब्रह्मचारी हुए हैं, मानो एक मानव चला गया है, ढाई घड़ी के पश्चात् भी उस मानव का चित्र लिया जा रहा है। देखो, यदि इस प्रकार का विज्ञान राजा के राष्ट्र में आ जाए तो राजा के राष्ट्र में मानो देखो, जो नष्ट करने वाले जो पामर प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं मानव हैं, उन व्यक्तियों को देखो, उनका ह्रास हो सकता है या उनको कारागार में स्थिर किया जा सकता है। नाना ऊर्ध्वा में क्रिया कलाप करने वाला अशुद्धियों में न रह जाए ऐसा मानो देखो, विज्ञान की, विज्ञान में सार्थकता विद्यमान रहती है। आधुनिक काल का विज्ञान उस यन्त्र को निर्माणित नहीं कर सकता है उसको देखो, इस मानव ने क्या जाना है? आधुनिक काल के समाज ने मानो चित्रावलियों को जाना है। वायु में चित्र गति कर रहा है! यन्त्रों के द्वारा, उन चित्रों को यन्त्र ले रहा है। ऐसे तो मानव सम्भवा देवा पूज्यपाद गुरुदेव यह कहा करते हैं कि मानव मानो एकान्त स्थली पर विद्यमान है, अन्धकार छाया हुआ है, एक मानव का प्रकाश आ रहा है या कोई माता अपने पुत्र के वियोग में, या पत्नी अपने पति के वियोग में, जब मानो देखो, अन्तर आभा में अपने पतिदेव को वाणी से पुकारती है और कहती है कि हे देव! कहाँ

हो? परन्तु देखो, उस देव के द्वारा, उस पत्नी का चित्र भी विद्यमान है परन्तु उसके शब्द के साथ में, चित्र गति कर रहा है। यह प्रभु का विज्ञान कितना है महान्? मैं आज जब अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता हूँ, हे पूज्यपाद! आधुनिक काल का वैज्ञानिक, यह निर्णय नहीं कर सका है अब तक, कि यह शब्द पिता के लिए है या पुत्र के लिए है, वह शब्द अन्तरिक्ष में गति कर रहा है! उन शब्दों को जानने के लिए, उन शब्दों को यन्त्रों में लाने के लिए मानव का चित्र नहीं आ रहा है परन्तु देखो, हाँ यन्त्रों के द्वारा अवश्य आ जायेगा यन्त्रों का एक केन्द्र बना हुआ है उसके द्वारा आ सकता है।

परन्तु देखो, जैसे माता मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब हम अपने योग के आँगन में प्रवेश करते थे, तो एक समय मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि हे प्रभु! आज तो महर्षि लोमश मुनि का आह्वान होना चाहिए! उनके विचारों का मानो आदान-प्रदान होना चाहिए। तो पूज्यपाद और हम वेद की ध्वनि के द्वारा उनके नामों का उच्चारण करते हुए आह्वान करते तो वह आत्मा अन्तरिक्ष में जहाँ भी होती, तो उस आत्मा का इस आत्मा से मिलान हो जाता मानो इस प्रकार का योग की साधना में, यौगिकता विद्यमान रहती है। जब मैं यह विचारता हूँ जैसे माता अपने पुत्र को आह्वान करती है, मानो अपनी वेदना उस बालक तक परिणत कर देती है तो मानव के हृदय में जो यन्त्रालय बने हुए हैं, उन यन्त्रालयों में वह चित्रण हो करके मानो देखो, एक आह्ववान की प्रवृत्ति जाती है आधुनिककाल का विज्ञान, प्रभु के विज्ञान को तो जानने के लिए तो तत्पर हो रहा है, परन्तु जहाँ यह विज्ञान सार्थक होना है, उस आभा पर नहीं आ रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान कहता है कि सूर्य जो मण्डल है, उसमें नाना प्रकार के मानो आक्रमण होते रहते हैं। आक्रमण हो करके वहाँ से, बहुत-सा सूर्य का भाग मानो देखो, पृथ्वी मण्डल पर क्या, बहुत से लोकों में वह आवृत हो जाता है। परन्तु जब इसके ऊपर आधुनिक काल के वैज्ञानिकों की चर्चाओं को श्रवण करते हैं तो हमारे यहाँ प्रायः ऐसा आक्रमण देखो, मानव के जीवन पर होता रहा है। परमाणुवाद पर होता रहा है। एक मानव है अपनी आभा में, मुद्रा में विद्यमान है, एक शक्तिशाली मानव ने आ करके उस प्राणी के ऊपर आक्रमण किया है। वह आक्रमण से मौन हो जाता है। आक्रमण से उसे क्रोध भी आता है परन्तु देखो, क्रोध में भी वह मौन हो जाता है। परन्तु क्रोध की आभा में क्या है? वह मानव की प्रवृत्तियों के ऊपर, एक प्रकार का आक्रमण हो रहा है। उस आक्रमणों का परिणाम क्या होता है? वह उस क्रोध को अपने में पान करता है, अपने में जल की भांति उसको मानो अग्रोत बना लेता है, अग्नि के द्वारा ही उसे मानो देखो, जब प्राण का प्राण पर आक्रमण होता है तो मानो नाग प्राण का ऊर्ध्वा मुख बन करके वही क्रोधाक्रमण मानो देखो, क्रोधाग्नि से वह बाह्य जगत में चला जाता है और जब बाह्य जगत में प्राणम्ब्रे अस्ते जब क्रोध चला जाता है तो मानव का जो अमृतमयी है, जो प्रकाशमयी देने वाले परमाणु हैं वह परमाणु भस्म हो करके, विष के रूप में मानो देखो, बाह्य जगत में, आन्तरिक जगत में मानो देखो, नाना प्रकार के रुग्णों के रूप में आ जाते है। तो परिणाम क्या है? मैं आज एक ऐसी विवेचना देने आया हूँ, जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, बारम्बार प्रगट करते रहते हैं परन्तु आधुनिक काल का कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो इस क्रोध की अग्नि का कोई यन्त्र निर्धारित कर सके।

महाराजा हनुमान जी और महाराजा गणेश द्वारा यन्त्र निर्माण

मुझे स्मरण है एक समय देखो, महाराजा हनुमान ने और शिव के पुत्र गणेश जी ने दोनों ने एक स्थली पर विद्यमान हो करके, एक यन्त्र का निर्माण किया था, जिस में क्रोधाग्नि को अंकित किया गया और क्रोधाग्नि को अंकित करने से, उसको वैज्ञानिक तथ्यों से उसका रूपांतर किया गया, विभाजन किया गया परमाणुओं का, तो मानव के हृदय का जो भयंकर जो क्रोध है, जो मानो देखो, वह मानव की विचित्र आभा को वह विद्वता की आभा को, यौगिक आभा को मानो देखो, वह अन्तरिक्ष में परिणत करके एक अग्नि का स्रोत बन जाता है, जिससे मानव की प्रवृत्तियाँ मानव के हृदय में मानो देखो, अग्नि प्रगट हो करके तुच्छ बन जाता है। इसी प्रकार यह बाह्य जगत

है, यह आन्तरिक जगत है। बाह्य जगत् में जब देखो, सूर्य के ऊपर आक्रमण होता है तो उसके कुछ भाग लोकों में जाते हैं, क्रोधाग्नि का जब मानव के शरीर पर प्रतिभाषित हो जाता है उसे पृथ्वी ही अपने में निगल जाती है, वायुमण्डल में देखो, परमाणु बन करके, अन्तरिक्ष को प्राप्त हो करके वही क्रोधाग्नि उस मानव को प्राप्त होती है, जिस मानव का क्रोध अन्तरिक्ष में चला गया।

तो आज मैं ऐसे वाक् तुम्हें प्रगट कराना चाहता हूँ जिन वाक्यों के ऊपर मानव बहुत-सी वार्त्ताओं को लाना कृति चाहता है। विचार-विनिमय क्या है? आज मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। मैं पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय नहीं देने आया हूँ। मैंने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में क्रियात्मक रूपों में इस विद्या का अध्ययन किया है। परन्तु आधुनिक काल का, जो विज्ञान है, आधुनिक काल का विज्ञान तो क्रोध का भी कोई चित्र निर्धारित नहीं कर सका है! क्या इस मानव का क्रोध है और इसमें कितनी मात्राएं हैं? उस क्रोध में कितना नृत्य हो रहा है? उसका कोई यन्त्र निर्धारित नहीं हो सका है। परन्तु देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय करा रहा हूँ परन्तु विज्ञान क्या बन रहा है? आधुनिक जगत् का जो विज्ञान है वह परमाणु शक्ति में विशाल है। परमाणु शक्ति को एकत्रित कर रहा है। परमाणुवाद में रमण कर रहा हैं वह समय दूरी नहीं है जब परमाणुवाद का इस मानो देखो संसार में आक्रमण होने वाला है। जब आक्रमण होगा तो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अग्नि में परिणत करना चाहता है। वर्तमान का जो काल है वह बड़ा विचित्र है। मानो एक-दूसरे के आधात का संशयियों पर विद्यमान हैं। वह यह विचार रहा है मैं इस राष्ट्र को कैसे अपने आक्रमण से विजय कर सकता हूँ। आज विजय होने के लिए नाना प्रकार की कल्पना कर रहा है मानव परन्तु राष्ट्र-राष्ट्र को निगलना चाहता है, राष्ट्र-राष्ट्र को अपनी आभा में रमण करना चाहता है।

सूर्य किरणों से यान निर्माण

परन्तु जब मैं यह विचारता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराता हूँ, कि पुरातन का विज्ञान आधुनिक काल का विज्ञान, आज का मानव मानो देखो, यात्रा कर रहा है अन्तरिक्ष की, पुरातन का मानव देखो, अपने यन्त्र को सूर्य की किरणों से, स्थिर करके मानो देखो, सूर्या की किरणों से, वह यान गति करता रहता था। परन्तु देखो, आधुनिक काल का विज्ञान देखो, सूर्य के ऊपर कुछ अनुसन्धान कर रहा है। उसका यह विचार है, आधुनिक काल के वैज्ञानिकों का, कि सूर्य की जो नाना प्रकार की किरणें हैं, जो प्रातःकाल होते ही, विद्युत् को बिखरना प्रारम्भ कर देती हैं और विद्युत मानव को जीवन देती है हम इन किरणों को जानना चाहते हैं। हम उन कान्तियों को अपने यन्त्रों में लाना चाहते हैं! परन्तु वह इतनी सफलता में अब तक नहीं पहुंचे हैं जितनी सफलता पुरातन काल में थी। पुरातन काल में मानो देखो, महात्मा ध्रुव और देवर्षि नारद मुनि अपना विद्यालयों मे मानो देखो, वह हिमालय की कंदराओं में विद्यमान थे। विचार कर रहे थे आचार्य से ये प्रश्न किया क्या हे भगवन! मैं सूर्य की किरणों को अपने में कैसे आदान-प्रदान कर सकता हूँ? उन्होंने मानो ब्रेल, अस्वातम्, कृतिका ये नाना प्रकार की धातु ले करके उसका एक यन्त्रों का निर्माणित किया। परन्तु सूर्य की किरण जैसे आती रही, मानो निचले भाग में वहाँ का परमाणुवाद एकत्रित होता रहा। देखो, सूर्य की किरणों में, एक मानो देखो, सर्ववस्तुत है देखो, जिसे हम शक्तिशाली जन्म कहते हैं, मानो देखो, जो खनिजों के रूप में, पृथ्वी के गर्भ में रहता है वह परमाणु रूप से, सूर्य की किरणों के साथ, गमन करता रहता है। वह परमाणुवाद मानो देखो, उसमें आना जैसे ही प्रारम्भ हुआ, यन्त्रों के द्वारा निचले स्थलो में यन्त्र विद्यमान है उससे परमाणुवाद एकत्रित हो रहा है। उस परमाणुवाद के द्वारा देखो, यन्त्र का निर्माण होने जा रहा है। यन्त्र का जब निर्माण हुआ तो सूर्य की किरण के साथ वह विज्ञान मानो गति करता रहता है।

याग का विज्ञान

हमारे ऋषि-मुनियों ने एक वाक् बहुत ही विचित्र कहा है। आज देखो, हमारे ऋषि-मुनियों ने, अध्ययन करते

हुए, सृष्टि के प्रारम्भ से यह कहा कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। मानव को याग करना चाहिए! मानो देखो, आधुनिक काल में या पुरातन काल की वार्त्ता तो मैं प्रगट करने के लिए तो क्या मैं आधुनिक काल के मानो नाना प्रकार के जितने भी रूढ़िवादी हैं, वह तो याग को यही कहता है कि यह तो मानो देखो, एक प्रकार का पाखण्ड है। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ अरे, भोले प्राणी! जब तू, अपनी नासिका के द्वारा सुगन्ध को लेता है तो इसको पाखण्ड कैसे कह सकता है? परन्तु वह पाखण्ड इसीलिए कहता है क्योंकि वह मार्ग ऐसा कठिन है वह ऐसा मार्ग है जहाँ न राष्ट्र है और न वहाँ किसी प्रकार की ईर्ष्या है और न किसी प्रकार की पद की लोलुपता रहती है। परन्तु देखो, जब पद की लोलुपता होगी, सम्प्रदायवादी बन करके, मानो देखो, रूढ़िवादी बन करके, अपने-अपने धर्मावलम्बी का एक मानो घोष करके राष्ट्र तक सीमित उनका जीवन रहता है उनकी सम्प्रदाएं रहती हैं, परन्तु देखो, राष्ट्र से ऊँचे हो करके देखो, जब तुम याग पर चिन्तन करोगे तो याग का विज्ञान तुम्हारे हृदय में समाहित हो जायेगा। परन्तु देखो, जब मानव यही नहीं विचार रहा है। एक देखो, यदि याग करने वाला देखो, आहार को पवित्र बनाता है। याग करने वाला वैज्ञानिक बन रहा है, याग करने वाला सुगन्धि को स्थापित करना चाहता है। याग करने वाला अन्तरिक्ष में अग्नि को जब मुखारबिन्दु में आहुति प्रदान करता है, वह सूक्ष्म बना करके, वायुमण्डल में प्रसारण कर देती है। वायुमण्डल में वह परमाणु मानो ओत-प्रोत हो करके अशुद्ध विचारधारा वाले परमाणुओं को निगल जाते हैं। स्वच्छ परमाणु को वह आभा में परिणत करा देते हैं। मानो जैसे पृथ्वी के गर्भ में सूर्य मानो जल को शक्तिशाली बनाता है, इसी प्रकार मानो देखो, याग का भी कोई रस है और याग का रस क्या है? वह स्वाहा है। याग का रस स्वाहा है मानो देखो, आगे ऋषि कहता है वाजपेयी याग करने वाला क्या देखो, इस मानब ब्रहे इस याग का जो रस है इस याग का जो रस बन करके बन करके अन्तरिक्ष में छा जाता हैं जब अन्तरिक्ष में छा जाता है मानो पाण्डित्य की वैदिक ध्वनि के द्वारा, होताओं के द्वारा, याग के द्वारा और यज्ञमान के संकल्प के द्वारा। ये परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में गति करता रहता है और वह अन्तरिक्ष में गति करता है और वायुमण्डल के बनने पर राष्ट्र की प्रतिभा बनती है। समाज की प्रतिभा बनती है वहाँ चरित्र और मानवता का देखो, ऊर्ध्वा में गति करता है। मानव का आहार और व्यवहार विचित्र बनता रहता है। आहार जब पवित्र बनता है तो व्यवहार पवित्र बनता है और जब व्यवहार पवित्र बनता है तो उसका विज्ञान का खण्ड भी विचित्र होगा, पवित्र होगा और जब विज्ञान ऊँचा होगा तो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बन करके परमात्मा को प्राप्त हो सकता है।

शुद्ध भाव से राष्ट्र कल्याण

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विवेचना देते हुए कहा है कि यहाँ रूढ़ियाँ नहीं होनी चाहिएं। राष्ट्र को चाहिए क्या रूढ़ियों को समाप्त करना है। बुद्धिमानों को ला करके, उनके क्रिया-कलापों को ला करके समाज के संग नियुक्त किए जाएं, जिससे समाज में एकता के सूत्र की चर्चा आ जाए। आधुनिक काल का मानो राजा कहता है क्या एकता के सूत्र में आ जाओ। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ, मैं आधुनिक काल के परमाणुवाद को जो अन्तरिक्ष में गति कर रहा है शब्दों में मानो मैं यह कहता हूँ हे भोले राजन! तू एकता के सूत्र में इस राष्ट्र को लाना चाहता है, एकता के सूत्र में तेरी मन की प्रवृत्ति भी नहीं है। जब तेरी मन की प्रवृत्ति एकता के सूत्र में, या राष्ट्र को ऊँचा बनाने में लग जाएगी उस समय मानो तू अपने ऐश्वर्य को त्याग करके अरे, जब राष्ट्रवेत्ता ही यहाँ माँस और प्राणियों का रक्त पान करके समाज को एक सूत्र में लाना चाहते हैं यह कैसी अद्भुदता मुझे दृष्टिपात आ रही है।

ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः

आज मानो मुझे स्मरण आता रहता है वह अश्वपति का काल मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय मुझे मानो वाजपेयी याग हुआ था एक समय, महाराजा अश्वपति के यहाँ मुझे बोले कि हे पुत्रों! समा ब्रणे मानो आज तुम

याग में चलें, महाराजा अवश्वपति के यहाँ से एक याग का निमन्त्रण आया है। मानो जब याग में पहुंचे, तो महाराज अश्वपति ने यह कहा है क्या याजनो! तुम मेरे याग को जब सफल कर सकते हो? जब मानं ब्रीहि असुतो होगा परन्तु देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा, हे राजन! हम तुम्हारे याग में जब उपस्थित हो सकते हैं जब तुम मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन जाओगे। आज मानो देखो, जब पूज्यपाद गुरुदेव ने ब्रह्मचर्य को कहा तो उन्होंने कहा, भगवन! मुझे स्वीकार है। देखो, आज मेरे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने पूर्व छ माह तक पूर्व ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान कराया। ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः क्या है? क्या प्रत्येक श्वास की गति को मुद्रित हो करके ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो देने का नाम ब्रह्मवर्चोसि है। मानो जब वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में श्वास को पिरो देता है उस समय राजा याग करता है। यज्ञमान याग करता है, होता जन भी मानो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोए जाते हैं। वह वाजपेयी याग राष्ट्र के कल्याण के लिए जब राजा तपस्वी है, ब्रह्मवेत्ता है, ब्रह्म की वार्त्ता कहता है, वह समाज को ब्रह्म की चर्चा कराता है तो वह राजा ऐसा है जो समाज को एक सूत्र में ला सकता है।

परन्तु मैं जहाँ उस काल की वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ जहाँ मैं आधुनिक काल की चर्चा करता हूँ, अरे, दूसरे के रक्त पान करने वाले प्राणियों! तुम समाज को एक सूत्र में लाना चाहते हो, तुम प्राणी मात्र को जब नहीं जानते तो सूत्र में तुम कैसे सूत्रित कर सकते हो! परन्तु देखो, यह वाक् मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया था, कि आधुनिक काल का विज्ञान भी अधूरेपन में है। आधुनिक काल का विज्ञान संकुचित हो गया है। वह मांसों का पान करने वाला, दूसरे के रक्त को पान करने वाला प्राणी मानो वैज्ञानिक है परन्तु जिस विज्ञान की घोषणा वह आज कर रहा है, कल जब घोषणा करेगा तो उसी धारा की विपरीतता उसे प्राप्त हो जाएगी। मानो क्यों हो रही है? कुछ समय पूर्व मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, आधुनिक काल के माँस भक्षण करने वाले वैज्ञानिकों ने ये घोषणा की क्या अद्यतम् क्या चन्द्रमा जो है उसमें प्राणी नहीं है।

प्राण और जीवन शक्ति से पिण्ड निर्माण

परन्तु देखो, उसमें अग्रहा नहीं है, मैं यह जानता रहता हूँ वैज्ञानिकों से, जब चन्द्रमा में जल नहीं है, जब चन्द्रमा में प्राण शक्ति नहीं है, जब चन्द्रमा में मानो जीवन शक्ति नहीं है, तो तुम्हें ये पृथ्वी के रज कहाँ से प्राप्त हो गए? जहाँ पृथ्वी के रज होंगे वहीं प्राण शक्ति होगी, वहीं वायु में मानो देखो, जल होगा क्योंकि जल ही पृथ्वी के पिण्ड को बनाता है। यह मानो देखो, वैदिक सिद्धांत है, क्या पिण्ड जितने भी बनते हैं, चाहे यही पिण्ड पृथ्वी का पिण्ड है, चाहे यही पिण्ड मानो चन्द्रमा के रूप में है चाहे यही मानो पिण्ड स्वाति रूपी पिण्ड में है, चाहे यही सूर्य के रूप में पिण्ड बना हुआ है। इन सब में एक प्राण शक्ति है और प्राण शक्ति आपो में रहती है। यदि आपो नहीं होगा, तो देखो, प्राण शक्ति स्थिर नहीं कर सकता और जब आपो नहीं है, तो जल नहीं रह सकता। जल नहीं रह सकता तो पिण्ड नहीं बन सकता। परन्तु देखो, पिण्ड बनता ही प्राण और जीवन शक्ति से है। मानो देखो, इस प्रकार की आभा मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय देना चाहता हूँ पूज्यपाद आधुनिक काल का विज्ञान भी अधूरेपन में नृत्य कर रहा है, क्यों कर रहा है उसके मूल में उनका आहार और व्यवहार पवित्र नहीं रहा है। उसके मूल में केवल यह है।

महाराजा कुम्भकरण का जीवन

हमारे यहाँ ऋषि मुनियों ने, महर्षि कणाद ने और भी नाना वैज्ञानिकों ने राजा रावण के विधाता कुम्भकरण ने और जब यह भारद्वाज मुनि के यहाँ घोषणा कराई गयी कि हम कुछ यन्त्र का निर्माण कर रहे हैं, और वह यन्त्र यहाँ से उड़ान उड़ के, चन्द्रमा में जायेगा और चन्द्रमा से हम और भी आगे उड़ान उड़ सकते हैं। यह घोषणा की, मानो यह घोषणा आज से नौ लाख वर्ष पूर्व महाराजा कुम्भकरण ने अपने विद्यालय में घोषणा की थी। और यह कहा था, उस घोषणा में, क्या सम्भवा देवं ब्रह्मे देवा सम्भविते देवाः यह वेद का मन्त्र है यह वेद का मन्त्र यह कहता

है क्या हम चन्द्रमा में जा सकते हैं, हम चन्द्रमा से ऊर्ध्वा और भी लोकों में जा सकते हैं इसी यत्र की आभा को ले करके परन्तु वह घोषणा एक धारा में रही, वह घोषणा ज्यों की त्यों अकाटय में रही परन्तु देखो, महाराजा कुम्भकरण का जीवन था, मैंने कई काल में यह प्रगट कराते हुए कहा था, वह दूसरों का रक्त पान नहीं करते थे मानो वह जल को पान करते थे और जल में मानो देखो, दुग्ध बना करके अन्न को पान करते थे। महाराजा कुम्भकरण ने देखो, पिच्चतर वर्षो तक तो देखो, उन्होंने मानो पिच्चतर वर्ष उन्होंने देखो, कणक का दुग्ध बना करके उसको अग्नि में तपा करके पान करते थे। पिपल और वृक्षो के मानो पत्रों का पिपाद बना करके पान करते थे। पच्चतर वर्ष का जीवन उनका ऐसा तपस्वी रहा।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया हैं महाराजा कुम्भकरण को जब संग्राम होते मृत्यु की शैय्या प्राप्त हुई उस समय ४८५ वर्ष की आयु थी। मैं यह विचारता रहता हूँ कि उनके जीवन की धाराओं में कितनी विचित्रता विद्यमान है। परन्तु जब मैं आधुनिक काल के वैज्ञानिकों को दृष्टिपात करता हूँ, आधुनिक काल का वैज्ञानिक मानो एक ही तत्त्व पर आज घोषणा कुछ कर रहा है जब उसका आगे तत्त्व प्राप्त होता है आगे उसी घोषणा में देखो, नाना प्रकार का भेदन प्राप्त होता रहता है। उसके मूल में मैंने वर्णन किया है उसके मूल में उसका आहार और व्यवहार विद्यमान है। परन्तु देखो, राष्ट्र की इसी प्रकार राष्ट्र का विधान है राष्ट्र की प्रतिभा है परन्तु राष्ट्र का मानो देखो, जब विधिवत् निर्वाचन कर रहा है राष्ट्र की प्रणाली निर्माण आज हो रहा है, कल उसी धारा को नष्ट करने के लिए तत्पर है, क्योंकि उसमें देखो, कितना स्वार्थवाद है। जब देखो, आधुनिक काल जो विधानम् ब्रह्मणे सम्भवः देवः जो निमार्णं ब्रीहि जो दूसरों को दण्ड देने की आज घोषणा हो रही है कि राष्ट्र कहता है दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। इस प्रकार का नहीं दिया जाना चाहिए। मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु द्वितीय काल में मृत्यु दण्ड दिया जाता है। उसके मूल में क्या है? उसके मूल में है मानो देखो, उनके विचारों का अधूरापन है।

भगवान मनु द्वारा राष्ट्र निर्माण

देखो, भगवान मनु के काल को, आज मनु सिद्धान्त को या मुन प्रणाली को ले करके जब राष्ट्र का निर्माण किया जाता है, उस राष्ट्र की, मनु जी के सिद्धांत की राष्ट्र की परम्परा को मानो देखो, यह संसार स्वीकार करता है, यह संसार एक आभा में लाता है एक धारा में लाता है, जो दण्ड उन्होंने दण्डित किया हैं क्यों किया है? उसके मूल में क्या है? भगवान मनु का जीवन जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव किसी काल में प्रगट कराते रहते थे। उन्होंने एक समय वर्णन करते हुए कहा था कि भगवान मनु का जो तप है वह नितांत रहा है। भगवान मनु जब तपस्या करते थे, उन्होंने सौ वर्षों तक देखो, तपस्या की और मुद्रित हो करके अपने हृदय से वेद के मन्त्रों का तारतम्य मिला करके मानो देखो, राष्ट्र का निर्माण किया। और यह उन्होंने सबसे प्रथम उन्होंने घोषणा की क्या धर्म जो है राष्ट्र धर्म की रक्षा करने के लिए है। मानो देखो, राष्ट्र का जितना निर्माण होगा उतना मानो विधिवत् होगा, उतनी धर्म की रक्षा होगी। देखो, धर्म की रक्षा करना, और मानवता का उत्थान करना, और विधिवत् चारो वर्णो की व्यवस्था उन्होंने निश्चित किया है आधुनिक काल में तो प्राणी उसको पाखण्ड कह रहा हैं ये चर्चा तो मैं कल ही प्रगट करूंगा। मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है आज जो मैं मानो देखो, इस प्रकार की विवेचना करता रहूँ। यह तो संसार वन है। मैं इन वनों में जाना नहीं चाहता हूँ।

मांसाहार से राष्ट्रीयता का अभाव

पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूँ कि दूसरों के रक्त पान करने वाला कदापि भी अपने राष्ट्र में एक सूत्र में समाज को नहीं ला सकता। परन्तु देखो, मेरी एक ही घोषणा है आज संसार में जो अपने मन की प्रवृत्तियों को राजा बन करके एक सूत्र में प्रवृत्तियों को नहीं ला सकता, ब्रह्म की चर्चा नहीं कर सकता, ब्रह्म की घोषणा नहीं कर सकता, समाज को एक सूत्र में लाने की घोषणा कर रहा है यह इसकी केवल विडम्बना मात्र रह

जाती है। आज मानो देखो, आज का विचार-विनिमय क्या है? मैं एक विचार दे रहा हूँ। क्या संसार में यदि राजा को अपने राष्ट्र को एक सूत्र में लाना है समाज को एक सूत्र में लाना है, इस पृथ्वी मण्डल को एक सूत्र में लाना है तो मनु जी के सिद्धांत को ला करके विद्यालयों को पवित्र बनाया जाए। और देखो, जितना भी विज्ञान है उसको मानो देखो, आत्मीयता से मन और प्रकृति के तंतुओं से चिन्तन किया जाए। आहार और व्यवहार को ऊँचा बनाने से उसका चिन्तन किया जाए तो राष्ट्र एक सूत्र में आ सकता है, अन्यथा यह राष्ट्र की एक विडम्बना रह जाती है! आज का विचार-विनिमय क्या है? मैं आज का विचार यह दे रहा हूँ कि मानव जब दूसरे के रक्तों का पान करेगा उसके हृदय में स्वार्थपरता आ जाती है और जो स्वार्थी प्राणी होता है वह अपने पुत्र को भी नष्ट कर देता है। परन्तु देखो, स्वार्थी प्राणी के लिए संसार में दर्शनों की भाषा में कोई स्थान नहीं रहता। इसीलिए देखो, अति स्वार्थ होना ही समाज की विनाशता का कारण है। आधुनिक समाज काल का जो स्वार्थपरता में मानो देखो, विशेषज्ञ बन रहा है। इसीलिए देखो, यह समाज एक दूसरे प्राणी, प्राणी को नष्ट करना चाहता है

आज का विचार-विनिमय हमारा ये मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा आज का हमारा यह विचार क्या क्या कह रहा है कि परमपिता परमात्मा की आराधना करने वाला प्राणी अपने में महान् बन करके अपनी आभा को ऊँचा बनाता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाता है और तपस्वी जीवन को ऊँचा बनाता है। तपस्वी ही देखो, संसार की आभा को ऊँचा बना सकता है वही समाज को सूत्र में ला सकता है यह आज का विचार अब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत से हृदय की विडम्बनाओं को, हृदय में इनके जो उद्गार थे, उन्होंने अपने उद्गार दिए। परन्तु इन उद्गारों में एक ऐसी सार्थकता, ऐसी महत्ता है मानो यह वाक् पुरातन काल में यह कदापित उच्चारण नहीं कर सकते थे, आज जिन वाक्यों का प्रतिपादन कर रहे थे। आज का विचार हमारा समाप्त होने जा रहा है शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज का विचार समाप्त

८ पुरातन काल की गुरु-शिष्य परम्परा व आधुनिक काल

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। मानो जिस आभा में सदैव रमण करने वाला रमणं ब्रह्मे वर्चो देवाः हिरण्यमयी रथाः वाचनमा देवं हृदयः वाचा रथेषु मंगलौ वरणेसु धर्वर्चतम् मेरे प्यारे! हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा की प्रतिभा मानो इस संसार में ओत-प्रोत है। जब हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर, परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करते रहते हैं। आज का हमारा वेद का मन्त्र ये कह रहा था हे यज्ञन्मथौ देवाः हे यजन्नमाः वरुणश्चं ब्रह्म लोकाः हे याज्ञिक पुरुषो! तुम अपने में महान और विचित्र बनने के लिए सदैव अपनी महिमा का वर्णन, महिमा का गान गाना ही हमारा कर्त्तव्य है। परन्तु जब हमारा ज्ञान और विज्ञान उस महान वैदिक साहित्य के आधार पर, इस मानव समाज में प्रसारण हो जाता है तो उस समय मुनिवरो! देखो, यह समाज अपनी महिमा का प्रभु की आभा में रमण करने लगता है।

तो आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र नाना यागों की चर्चाएँ करता रहता है और अपनी-अपनी आभा में, प्रत्येक मानवीयतव, अपनी मानवता का सदैव दर्शन कराता रहता है। जब हम मानवता का प्रायः दर्शन करने लगते हैं, तो वेद का वाक् हमें नाना प्रकार की वार्त्ता प्रगट करता हुआ अपने में महान और विचित्र बना देता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है कि वरुणश्चं दिव्यां गतेसु सर्वं आभ्यां रुद्रः मेरे पुत्रों! देखो, बहुत पुरातन काल से ही हमारे यहाँ नाना ऋषि-मुनि, राजा इस प्रकार के हुए हैं जिन्होंने यागों के ऊपर महान अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए सदैव अपनी मानवता का दर्शन होता रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है कि सम्भवा साधनं ब्रह्मे मानो यह नाना प्रकार के याग, राजा के राष्ट्र में होने चाहिएं। जिन यागों से समाज में एक महानता का प्रायः दर्शन होता हैं आज मैं कोई विशेष विवेचना नहीं दूंगा, क्योंकि मेरे पुत्र ने बहुत-सी वार्त्ताएं प्रगट की है। मानो यह आत्मा परमात्मा के सम्बन्ध की और यागों के सम्बन्ध की जब हम बेटा! चर्चाएँ प्रायः करते रहते हैं तो हमारा मानव जीवन एक महानता का प्रदर्शन कराने लगता है। तो हमें उस महानता की ज्योति के ऊपर ज्योतिवान् हो करके अपने जीवन को महान बनाने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। आज मैं विशेष विवेचना नहीं दूंगा क्योंकि भगवान कृष्ण ने नाना प्रकार की चर्चाएँ करते हुए, याग के सम्बन्ध में अपना व्यक्तव्य देते हुए यह कहा था अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत हो करके सम्भवा रूद्रे सम्भवा वाचन्नमाः देवं दधि रच्चतो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यागां ब्रह्मेः मेघाः वरणप्रवेः मानो मेध ही वरुण बन करके हमारे अन्नाद को प्रतिभाषित करता रहता हैं तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र, वेद की प्रतिभा हमे उस मार्ग के लिए प्रेरित कर रही है जिस मार्ग पर जाने के पश्चात् हमारा जीवन पवित्र बनता है। आज मैं विशेष विवेचना न करता हुआ, अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो विचार दे सकेंगे। पुनः की भांति अपने दो विचार दे सकेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् दधिमा रथं आप्यां लोकं सर्वे सुभद्राः यम भविता दधि ब्रह्मा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि-मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी-अभी, कुछ यागों की चर्चा कर रहे थे और याग के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करते हुए, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भगवान कृष्ण और नाना राजाओं की वार्त्ता उन्होंने प्रगट की। मानो पुरातन काल से ही, ये वार्त्ताएं परम्परागतों से ही, मानो राष्ट्रीयता में क्या, मानव समाज में एक आभा बन करके रही है।

याग का स्वरूप

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब द्वापर के काल में भगवान कृष्ण ये विवेचना देते रहते थे, कि प्रजन्नां भो सम्भवा मानो भगवान कृष्ण याग करते रहते थे। भगवान कृष्ण का एक याज्ञिक जीवन एक महानता में रहा है। उन्होंने कहा है कि अन्तरिक्ष में यही परमाणु ओत-प्रोत हो जाते हैं और अन्तरिक्ष मानो याग के ही परमाणुओं से ही, यह वायुमण्डल अन्तरिक्ष एक महानता की ज्योति में परिणत हो जाता है। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये कहा करते थे जब हम चरणों में ओत-प्रोत हो करके यह वार्त्ता प्रगट करते रहते थे कि महाराज! ये याग क्या है? तो पूज्यपाद गुरुदेव एक मन्त्र उच्चारण किया करते थे और वह मन्त्र था यागं भो सम्भवा अन्तरिक्षां वायु अग्नं ब्रह्मे वर्चा मानो यह जो याग है यह अग्नि है। यह जो याग है यह मानव की आत्मा है यह जो याग है मानो देखो, वायु की आभा में रमण करने वाला वायुश्चं कहलाता है। तो हम जब वाक् कहा करते थे तो उसकी विवेचना कराने के लिए सदैव तत्पर रहते थे, और यह कहा करते थे सम्भवा देवं दधि ब्रह्मणा लोकं हृदा मानो देखो, यह आत्मा ही मानव का हृदय, संसार का हृदय है और यही मानो देखो, याग कहलाता है। अग्नि में जब समिधा मानो प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्म रूप बना करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता है तो अन्तरिक्ष मानो एक जल की प्राण वायुमण्डल में छा जाती है। उससे ही नाना प्रकार के परमाणु अपनी आभा में गतियाँ करते रहते हैं।

तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परम्परागतों से ही, मानो देखो, इस प्रकार की विवेचना करते रहे हैं। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ।

याग और विज्ञान

तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ जैसा मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वह इस वाक् को अब स्वीकार करने जा रहा है कि अग्नि में घृत को भस्म करने से, अग्नि में उसको स्वाहा कहने से उसके परमाणुवाद से दूषित वातावरण शान्त हो जाता है। परन्तु आधुनिक काल का विज्ञानवेत्ता क्या? पुरातन का काल में तो मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भारद्वाज मुनि के यहाँ याग भी होता था, तो विज्ञान की चर्चाएँ भी होती रहती थीं। वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण, याग के पश्चात् किया जाता था। मुझे एक समय स्मरण है एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मध्य रात्रि में कुछ अध्ययन और चिन्तन और मनन कर रहे थे। परन्तु मनन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव के हृदय में एक मानो शंका की कृत्तियाँ उत्पन्न हो गयी और वह शंका क्या थी? कि याग और विज्ञान के सम्बन्ध में कुछ विवेचनाएँ हो गई और परन्तु देखो, उनके गम्भीर मुद्रा में परिणत हो करके चिन्तन और मनन होने लगा। पूज्यपाद गुरुदेव बोले कि चलो आज हम याज्ञवल्क्य मुनि के आश्रम में प्रवेश करेंगे और भारद्वाज अमरेत ऋषि के द्वार पर पहुंचेंगे। तो मुनिवरो! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हम मानो देखो, प्रातःकालीन होते ही वहाँ से प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुए वह याज्ञवल्क्य, मुनि के द्वार पर पहुंचे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ मानो नाना प्रकार का देखो, विज्ञान में उनकी प्रायः गति थी और विज्ञान एक आभा में गति कर रहा था। पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि हम यह जानना चाहते है। ऋषिवर! क्या विज्ञान का और याग दोनों का क्या समन्वय है? तो उस समय याज्ञवल्क्य ने कहा कि याग ही विज्ञान है और विज्ञान ही याग है। मानो जब यह कहा कि विज्ञान ही याग है तो उन्होंने कहा कि यह कैसे? हमें इसका निर्णय कराओ।

याग ही विज्ञान है

याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा कि हे ऋषिवर! आप तो गम्भीर मुद्रित हैं। गम्भीर मुद्रा में जाने वाले हैं आप नहीं जानते? क्या या मानो आप यह जानने के लिए आए हैं कि कितना बुद्धिमान है? उस समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा नहीं। यह अपमानित होने के लिए नहीं, यह तो केवल जानकारी के लिए हम जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हे प्रभु! यह जो संसार है यह एक याग में परिणत है। प्रत्येक मानव याग कर रहा है, चाहे वह भौतिक

विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह साधारण क्रिया-कलाप करने वाला मानव हो, परन्तु देखो, वह सब याग में परिणत हो रहे हैं और वह विज्ञान मानो देखो, उसकी आभा बन करके रहता है और आभा बन करके मानो ओजस्व बन करके महानता को प्राप्त करा देता है।

याग

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वाक् स्वीकार कर लिया। उन्होंने यह निर्णय दे दिया कि संसार का नाम ही याग है, राष्ट्र का नाम ही याग है। परन्तु मानव के द्वारा जितना भी व्यापक कर्म है, व्यापकवाद है, रूढ़ियों से पृथक् है अज्ञान से दूरी है आत्मा के अनुकूल है, वेद की प्रतिभा उसे छूती रहती है, वह सर्वत्र एक प्रकार का याग ही माना गया है।

परन्तु मैं आज विशेष विवेचना यागों के सम्बन्ध में पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत विस्तृत यागों के सम्बन्ध में व्याख्याएं कीं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वहाँ से भी गमन किया, भ्रमण करते हुए माता अरुण्धती और वशिष्ठ मुनि के द्वार पर पहुंचे। माता अरुण्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में वह याग करते थे, याग का जब क्रिया-कलाप चल रहा था तो हमारा जब वहाँ समग्र हुआ तो ऋषि ने कहा आईये भगवन! आसन दिया, विराजमान हो गए। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से पूज्यपाद गुरुदेव ने नम्रता से कहा कि हे ब्रह्मवेत्ता! हे ब्रह्मनिष्ठ! आज हम आपसे कुछ जानने आएं हैं। महर्षि बोले कि आपको क्या शंका हो गयी है? आप तो आदित्य ब्रह्मचारी हैं। ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं। योगश्वरी को, ब्रह्मवर्चोसि बनते रहते हैं। उन्होंने कहा, प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं सम्भवः देवधं ब्रह्मे मानो देखो, यह जो याग जो तुम कर रहे हो यह क्या है? उन्हांने कहा यह हमारी आत्मा है। यह जो याग है यह हमारा आत्मा है ऋषि ने कहा कि आत्मा कैसे है? वशिष्ठ बोले कि आत्मा इसीलिए कि बिना याग के मानव का मूल्य ही क्या है संसार में? मानो बिना याग के मानव का कोई मूल्य नहीं, और याग कहते हैं शुभ कर्मों को। कोई भी मानव जितना भी आत्मीय कर्म करता है, सुकर्म करता है, जितना भी सुकर्म होता रहता है वही मानो देखो, आत्मा के अनुकूल याग कहलाता है। मानो देखो, यह वाक् जब वशिष्ठ ने कहा तो ऋषि प्रसन्न हो गए। पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रसन्न हो करके कहा, धन्य है ब्रह्मवेत्ता। मानो देखो, यह सब निवारण होता रहा।

महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला

आओ मुनिवरों! देखो, जब वैज्ञानिकों के मध्य में हम एक समय मानो भ्रमण करते हुए, महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला में पहुंचे। महाराजा हनुमान की विज्ञानशाला एक भव्य विज्ञानशाला थी। मानो देखो, वहीं महाराजा गणेश जी भी और देखो, महर्षि तत्त्वेतकेतु ऋषि महाराजा ये तीनो अपने विद्यालय में अनुसन्धान करते थे। आश्रम में अनुसन्धान करते रहते थे। वेद का अध्ययन करना, वेद की प्रतिभा को जानना, वेद के अनुकूल विचारों को व्यक्त करना और याग कर्म करना, अग्न्याधान करना, उसी के द्वारा देखो, अपने आश्रम और मानवीयता को वह सदैव पवित्र बनाते रहते थे, परन्तु जब पूज्यपाद गुरुदेव वहाँ पहुंचे तो उन्होंने उनका स्वागत किया और यह कहा आइए भगवन! और वे विराजमान हो गए। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा, कहिए भगवन! हम तो कुछ जानने के लिए आए हैं? उन्होंने कहा, क्या जानना चाहते हो ऋषिवर? उन्होंने कहा, कि विज्ञान से याग का क्या सम्बन्ध है?

याग में विज्ञान

मेरे प्यारे! महाराजा हनुमान ने अपना उत्तर देते हुए कहा, कि याग का जो समन्वय है, याग का जो विज्ञान से सम्बन्ध है, बिना याग के विज्ञान नहीं और देखो, बिना याग विज्ञान बिना याग के नहीं। उन्होंने कहा जब हम विज्ञानवेत्ता बनते हैं तो वह जो अग्नि का परमाणु, भेदन किया हुआ परमाणु है, उसी को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहते हैं। मानो देखो, जिस परमाणु को याग में भेदन हो जाता है, अग्नि के द्वारा उसका शोधन हो जाता है,

उसी परमाणु को हम ला करके, यन्त्रों में यन्त्रित करते हैं। मानो देखो, जो याग नहीं जानता, वह विज्ञान भी नहीं जानता। मानो देखो, विज्ञान में अधूरापन नहीं होना चाहिए। होता है तो उसके मूल में केवल एक ही वाक् है क्या, उसमें याग नहीं है। याग कहते हैं समर्पित करने को।

हे यज्ञमान! जैसे तू अपनी यज्ञशाला में, मानो अग्नि को अपने को समर्पित कर देता है, अपने को समर्पित करने वाला याज्ञिक कहलाता है। हे यज्ञमान! तेरा मन, वचन और कर्म मानो देखो, याग में परिणत रहना चाहिए, मैं आज यज्ञमान के प्रति अपनी कामना आधुनिक काल में, वर्तमान के काल में जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो हमारी आकाशवाणी जहाँ जा रही है वहाँ एक याग हो रहा है, यागां ब्रह्मे पूर्ण रूद्राणि मो हे ब्राह्मण! हे याज्ञिक पुरुषों! मेरा हृदय से अग्रात रहता है, क्या तुम्हारा आयु दीर्घ हो करके और वेद का प्रसार जितना भी आ जाए मानो उतना यह समाज ऊँचा बनेगा। परन्तु देखो, वह क्रियात्मक जीवन होना चाहिए। हे यज्ञमान! तेरा सौभाग्य है जो आज मानो, तेरे द्रव्य का सुदपयोग हो रहा है और तेरा द्रव्य देवताओं को प्रदान किया जा रहा है। देवताओं को साकल्य आहुति के द्वारा मानो वायुमण्डल में प्रसारण किया जा रहा है। देवता उसे पान करते है। वे देवता कौन हैं, जो पान कर रहे हैं? पूज्यपाद गुरुदेव इसकी बहुत विचित्र व्याख्या किया करते हैं। वे कहा करते हैं पूज्यपाद ने कई काल में वर्णन कराया है कि समा वर्णनं ब्रह्मे यागां भविते श्वंजनं अस्ते देखो, यागां ब्रह्मे यह जो देवता हैं, यह वासना ही तो पान करते हैं। ये सूक्ष्म परमाणु और तरंगों का पान करके यही स्थूल जगत को निर्माणित करते हैं। मानो देखो, यह वाक् पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रगट किया। आज मैं पूज्यपाद गुरुदेव के वाक्यों की ही मानो पुनरूक्तियाँ कर रहा हूँ। उन आभा में परिणत कर रहा हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई पुरातन काल में बहुत सी विवेचनाएँ दी हैं। आज मैं विवेचना देने विशेष नहीं आया हूँ।

हे यज्ञमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। द्रव्य का सदुपयोग, जिस गृह में यागों के द्वारा होता है, उस गृह में मानो द्रव्य की आभा, द्रव्य का आना प्रारम्भ हो जाता हैं उसकी आभा एक आभा बन करके रहती है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में ये वर्णन कराया है मुझे आज मैं केवल इसकी सूक्ष्म विवेचना दे रहा हूँ और वह विवेचना क्या है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। हे वेद के पठन-पाठन करने वालो! तुम्हारे जीवन में, तुम्हारी आयु में दीर्घता आ जाए, जिससे यह धर्म, वेद प्रकाश ही प्रकाश हो जाए। वह प्रकाश होना चाहिए, परन्तु जहाँ मैं आधुनिक काल के इस वाक्यों में जाना चाहता हूँ मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, कि हे याज्ञिक पुरुषों! तुम्हारे राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए। परन्तु विज्ञान में एक महानता होनी चाहिए। देखो, आधुनिक काल का विज्ञान, मानव को त्रास दे करके, मानव को भयभीत कर रहा है। त्रास दे करके प्राणी को प्राणी से भक्षण कराने की प्रवृत्ति में लगा हुआ है। हे वैज्ञानिकजनों! मानो देखो, तुम्हारा मानवीयत्व विज्ञान में पूर्ण रूपेण होना चाहिए। तुम्हारे विज्ञान में त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिएं। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी और हमने भी कई काल में ये चर्चा करते हुए कहा था यह विवेचना देते हुए कहा था, कि तुम्हारा याग जब, महान् बनेगा जब तुम समाज को, साहस समाज की रूढ़ि की नष्ट करने की विवेचना तुम प्रत्येक गृह-गृह में परिणत करने लगोगे।

मुझे स्मरण आता रहता है मैं राजा से कहा करता हूँ हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को सदाचारी और महान् बनाना चाहता है तो तेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए। माता-पिता मानो देखो, गृहपथ्य अग्नि का पूजन करने वाला हों। अपने गृह में सुगन्धि देने वाला हो। जहाँ वह पदार्थों की सुगन्धि देता है, वहीं वह जहाँ पदार्थों में लगा हुआ है, वहीं वह विचारों की सुगन्धि देना, उसका कर्त्तव्य है। विचारों की सुगन्धि देना ही, एक मानवीयता कहा जाता है। जब राष्ट्र अपने में विचारवान बन जाता है, राष्ट्र में सात्विकता आ जाती है, धर्म के मर्म को जानने लगता है, मानो देखो, उस राजा को यह जानकारी होगी, कि तेरे राष्ट्र में सुगन्धि होनी चाहिए। विचारों

की सुगन्धि हो। मानो पदार्थों की सुगन्धि हो। अग्न्याध्यान होना चाहिए तेरे राष्ट्र में। परन्तु जब यह समाज, अपने में अपनेपन को नहीं विचार रहा है, तो मानव, मानव का ह्रास अवश्य हो जायेगा। राजा के राष्ट्र में, नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ बनी रहती हैं, मानो देखो, अधर्म को धर्म कहा जाता है, देखो, गुरु परम्परा का हास होता जा रहा है, मानो देखो, गुड़म्बावाद चल गया है।

आज जब मैं यह विचारता हूँ कि गुड़म्बावाद किसे कहते हैं? गुड़म्बावाद उसे कहते हैं जब अनाधिकारी को अधिकार दिया जाता है। मानो देखो, एक मानव गुरु का शिष्य बनना चाहता है, जब वह गुरु का शिष्य बनना चाहता है तो पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में, दर्शनों की चर्चा करता है, और वह याग की चर्चा करता है, सुगन्धि की चर्चा करता है, तो उसे वह जो आधुनिक काल का जो गुड़म्बावाद है उसे वह पाखण्ड कह करके शान्त कर देता है। परन्तु जब मैं यह कहता हूँ कि हे भोले! तू आत्मा की चर्चा कर, तू मानव को अपने उपदेश दें। मैं यह कहा करता हूँ कि संसार में नाना शिष्यों को गुरुओं को आवश्यकता नहीं है। एक संदीपन के यहाँ मानो तीन सौ बहत्तर ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। एक कृष्ण का नाम ही ऊँचा रहा। परन्तु देखो, यहाँ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, परन्तु एक राम ही विचित्र बन गया। मानो देखो, आधुनिक काल की मैं चर्चा करूं, तो मानो नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे परन्तु एक शंकर ही ऊँचा बन गया। जब मैं यह चर्चा करता हूँ देखो, मथुरा की सम्भवा सम्भवे जमनोत्री के किनारे मानो तट पर एक ही गुरु के यहाँ नाना शिष्य अध्ययन करते थे, परन्तु दयानन्द ही एक ऐसा प्रतिभाशाली बन गया। क्या मानो नाना शिष्यों की आवश्यकता नहीं रहती। शिष्यं ब्रहे ये जो नाना प्रकार का गुड़म्बावाद है, इसमें संस्कृति का हास होता जा रहा है। इसमें मानो द्वितीय जो राष्ट्र है, जैसे ये भारत भूमि है परन्तु जो द्वितीय राष्ट्र हैं वह राष्ट्र आ-आ करके उन्हे द्रव्य अर्पित करते रहते हैं। यह गुड़म्बावाद में, दर्शन शास्त्र को नष्ट किया जा रहा है। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं जा रहा हूँ। यहाँ गुड़म्बावाद बहुत की बड़ी प्रतिभाषित हो रही है। यहाँ नाना प्रकार के मोहम्मद के मानने वाले हैं, ईसा के मानने वाले हैं और भी नाना प्रकार के गुड़म्बावादी हों परन्तु द्रव्य आ रहा है देखो, दर्शन शास्त्र के विनाश करने के लिए। राष्ट्रीयता को मानो राष्ट्रीयता, जिनका धर्म और रूढ़ि बन गयी है क्या वह इस समाज को कैसे ऊँचा बना सकते हैं?

परमात्मा का राष्ट्र

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहा था कि यागाः याग संसार में कोई भी ऐसा रूढ़िवादी धर्म नहीं है जिसमें याग की प्रतिभा न हो। देखो, मोहम्मद के मानने वाले सुगन्धि करते हैं। मानो जिसमें नाना प्रकार की ध्वनियां के द्वारा वह सुगन्धि करते हैं। देखो, ईसा के मानने वाले सुगन्धि करते रहते हैं। और भी नाना प्रकार के मानो कोई भी दुर्गन्धि में रहना नहीं चाहता संसार में। प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरे यहाँ सुगन्धि होनी चाहिए, कोई भी मानव हो इस संसार में, सुगन्धि चाहता है चाहो वह किसी को मानने वाला हो, चाहे वह किसी भी रूद्र आभा में रहने वाला हो। कोई राष्ट्र संसार का ऐसा नहीं है जो सुगन्धि नहीं चाहता है। हम यह चाहते हैं, हमारी एक ही घोषणा है कि जहाँ सुगन्धि पदार्थों की होती है, वहाँ विचारों में भी सुगन्धि होनी चाहिए। विचारों में भी दर्शन होना चाहिए। विचारों में भी वेद-रूपी प्रकाश होना चाहिए, जिससे नाना प्रकार का रूढ़िवाद समाप्त हो सके। परन्तु देखो, रूढ़िवाद को नष्ट किया जाता है? मैं उच्चारण कर रहा था, एक ही शिष्य बहुत होता है। मानो देखो, यहाँ देवर्षि नारद मुनि के विद्यालय में देखो, पांच सौ बहत्तर ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे परन्तु एक ध्रुव ऐसा ब्रह्मचारी हुआ, जो लोक-लोकान्तरों की यात्रा करता था। देखो, श्वेतकेतु ऋषि के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, परन्तु एक शिष्य हनुमान ऐसा हुआ, जो मानो सूर्य विद्या के ऊपर उनका अधिपत्य बन गया। जब यहाँ और भी विचार आता है, नाना ब्रह्मचारियों का अध्ययन और उनकी महानता का वर्णन आता है, तो मानो

देखो, ये समाज ऊँचा बनता हैं। जब यहाँ गुरु अस्वनां ब्रह्मे लोका कृष्ण का जीवन स्मरण आता है, तो जीवन की प्रतिभाएं स्मरण आने लगती हैं।

तो विचार-विनिमय क्या है आज हमारा कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानो चिन्तन और मनन तो प्रत्येक प्राणी को करना चाहिए। मैं यह नहीं कहता हूँ क्या आज संसार में चिन्तन नहीं होना चाहिए, परन्तु चिन्तन के साथ उसका अध्ययन होना चाहिए, मानवीय अध्ययन होना चाहिए, जिसके ऊपर हम अपनी अन्तरात्मा और शरीर दोनों में सुसज्जित बना करके, परमात्मा के राष्ट्र में जा सकें। क्योंकि परमात्मा का राष्ट्र तो यह सर्वत्र जगत् ही कहलाता है। इस राष्ट्र में हम जाना चाहते हैं।

विचार-विनिमय क्या? मैं विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। मानो देखो, स्वानधन ऋषि महाराज के यहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, द्वापर के काल में, परन्तु एक व्यास ऐसा हुआ जिन्होंने देखो, वेदांत के ऊपर अपनी विवेचना दी। मानो इसी प्रकार कणाद ऋषि हुए। कणाद ऋषि मानो स्वानकेतु ऋषि के यहाँ अध्ययन करते थे। परन्तु अध्ययन की प्रतिक्रियाँ चलती रहती। एक ब्रह्मचारी वही ऐसा हुआ जिन्होंने विज्ञान के ऊपर अपनी लेखनी बद्ध की, और वेद की आभा को ले करके। तो यहाँ नाना शिष्यों की आवश्यकता नहीं है, केवल यदि एक शिष्य महान् बन जाए, तो गुरु का जीवन सफल हो जाता है। मानो देखो, गुरु की आभा महान् बन जाती है, और यदि वह नाना जो शिष्य बनाते रहते हैं, उनमें दर्शनों का ह्रास होता रहता है। अनाधिकारी को अधिकार देना, अनाधिकारी को जब कर्त्तव्य मान लेते हैं तो गुरु और शिष्य दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। मानो देखो, इस प्रकार मुझे स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव यह प्रगट कराते रहते थे जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के आश्रम में प्रथम समय पहुंचा तो पूज्यपाद ने मस्तिष्क का अध्ययन करते हुए कहा, जाओ गायत्री की गोद में चले जाओ, तो मैं गायत्री की गोद में चला गया। पूज्यपाद गुरुदेव का जीवन तपस्वी था, क्रियात्मक था। मानो तीन असुतम प्रातःकालीन मानो देखो, अन्त पहर में अपने आसन को त्यागना, नाना प्रकार की प्रतिक्रियाओं में रमण होना, प्राणायाम करना, साधना में तल्लीन रहना जब मैं उनके जीवन को दृष्टिपात करता तो आश्चर्य में रहता, गायत्री की गोद में चला जाता था। गायत्री की गोद में जब मैं चला गया तो मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना प्रकार की औषधियों का पान कराते थे और अन्न नहीं देते थे, दूषित अन्नाद को नहीं देते थे परन्तु देखो, वह विचारं ब्रह्मे, मैं महान् बन गया पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत हो करके।

परन्तु विचार-विनिमय क्या? मैं यह विचार इसीलिए दे रहा हूँ कि अनाधिकार को जब अधिकार दिया जाता है तो नष्ट हो जाता है और अधिकारी को अधिकार देने से मानो महान् बनता है। मानो देखो, आधुनिक काल का गुरूडम्बावाद ऐसा है जैसे कानावती बालक के कानों में उच्चारण करते रहते हैं और वह मानो अपनी वाणी से कुछ नहीं उच्चारण करता। वह कहते हैं कि तुम्हें जो गुरु मन्त्र दे रहा हूँ इसे किसी को उच्चारण कर दिया तो यह तुम्हारा अनिष्ट हो जायेगा। मानो तुम पापी बन जाओगे। जब इस प्रकार की वार्त्ता मैं स्वीकार करता हूँ तो मैं बड़ा मग्न होता हूँ और यह कहता रहता हूँ कि दर्शनों का कैसा ह्रास हो रहा हैं मानो देखो, यह तो वह यथार्थ कहते हैं कि गुरुओं की वार्त्ता आन्तरिक, बाह्य जगत् में नहीं जानी चाहिए, जो चिन्तन तुम्हें परमात्मा की अनुभूतियाँ होती हैं उन परमात्मा की अनुभूतियों को गोपनीय बना करके उसके ऊपर गम्भीर अध्ययन किया जाए। यहाँ तक तो यथार्थ है परन्तु जहाँ कानावती वाली वार्त्ता आ जाती है वहाँ मानो देखो, दर्शन का ह्रास होता है। दर्शन का जहाँ ह्रास होगा और देखो, वह जो मानवीयता है उसका भी ह्रास हो जाता है। उसमें कठोरता आ जाती है, उसमें अनिष्ठता आ जाती हैं, उसमें एक कृतिका नहीं रहती और याग, जैसे कर्मो को कहते हैं, यह तो सब इसी लोक की चर्चा है। परन्तु मैं जो गुरु मन्त्र दे रहा हूँ, यह परलोक की चर्चा है। परन्तु देखो, जब अरे, भोले प्राणियों! जब तुम्हारा निचला लोक नहीं बनेगा तो ऊपर ला कैसे बनेगा? मानो देखो, निचला लोक यदि तुम्हारा पवित्र बन गया है तो

तुम मानो ऊर्ध्वा के लोक तुम्हारा स्वतः बन जायेगा।

तो विचार-विनिमय क्या? आज मैं यह चर्चा दे रहा हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा अब पाने जा रहा हूँ। क्योंकि मैं इसकी विवेचना न करता रहूँ विचार-विनिमय यह कि प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना है, महान् बनाना है, आभामयी बनाना है, जिससे जीवन एक महानता की ज्योति में महान् बन जाए। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण कर रहा हूँ, हे यज्ञमान! आज तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तुम्हारी मनोकांक्षा, शुद्ध कामना तुम्हारी पूर्ण हो। ऐसा मेरा मानो अस्वान है, अब पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः-मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने, अभी-अभी कुछ चर्चाएँ की। परन्तु वह जो चर्चाएँ हैं, वह एक महान् और विचित्र और मानो कुछ कटुता भी उसमें थी। परन्तु कोई वाक् नहीं। उनका स्वभाव बना हुआ है। आज मैं भी यज्ञमानों को अपने हृदय से जैसा महानन्द जी ने प्रेरणा दी, कि यज्ञमान का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, ब्रह्माण वेदां ब्रह्मे ऊँचा-ऊँचा आभा में रमण होता रहे। यह आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। लाक्षागृह बरनावा।

ईश्वरीय सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरुदेव

शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज



पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज, इस जन्म में अपठित रहे। परन्तु शरीर के शवासन की मुद्रा में समाधिस्थ होने पर, पूर्व जन्मों में अर्जित ज्ञान की उद्‌बुद्धता के आधार पर, देवयान की आत्मा को सम्बोधित प्रवचनों में, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप और मानव जीवन को दिव्यता देने वाला अमृतमय ज्ञान समाया हुआ है। उन्हीं दिव्य प्रवचनों में पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज ने परमपिता परमात्मा की भाव प्रणता में स्तुति गायी है। परमपिता परमात्मा के प्रति गायी गई उसकी महान गाथा को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

नई दिल्ली-110085